An Initiative of SCERT Punjab under Mission 100%: Give Your Best

SIMPLIFIED STUDY MATERIAL (2023-24)

CLASS:10th

HINDI

• डॉ. राजन, स्टेट रिसोर्स पर्सन हिंदी पंजाब

संधि

मत + अनुसार = मतानुसार	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र	परम + अणु = परमाणु
अति + इव = अतीव	छात्र + आवास = छात्रावास	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी	नारी + इच्छा = नारीच्छा	चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय
रजनी + ईश = रजनीश	गुरु + उपदेश = गुरूपदेश	वधू + उत्सव = वधूत्सव
सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि	सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि	
सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र	जल + ऊर्मि = जलोरि	वीर + इन्द्र = वीरेन्द्र
महा + उत्सव = महोत्सव	नर + ईश = नरेश	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि
यंथा + इष्ट = यथेष्ट	वसन्त + ऋतु = वसन्तर्तु	रमा + ईश = रमेशं
देव + ऋषि = देवर्षि	वीर + उचित = वीरोचित	सप्त + ऋषि = सप्तर्षि
सर्व + उदय. = सर्वोदय	महा + ऋषि = महर्षि	
मत + ऐक्य = मतैक्य	दन्त + ओष्ठ = दन्तौष्ठ	लोक + एषंणा = लोकैषणा
अधर + ओष्ठ = अधरौष्ठ	परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य	महा + ओज = महौज
तथा + एव = तथैव	परम + औषध = परमौषध	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
महा + औषध = महौषध		
अति + आचार = अत्याचार	सु + आगत = स्वागत	अति + अधिक = अत्यधिक
सु + अल्प = स्वल्प	अभि + आओआगत = अभ्यागत	गुरु + आज्ञा = गुवज्ञि
प्रति + एक = प्रत्येक	अनु + इति = अन्विति	प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर
अनु + एषण = अन्वेषण	पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा	पितृ + अर्पण = पित्रर्पण
मातृ + अनुमति = मात्रनुमति	पितृ + उपदेश =पित्रुपदेश	पितृ + आदेश = पित्रादेश
मातृ + ईश = मात्रीश		
ने + अन = नयन	नै + इका = नायिक	चे + अन = चयन
नै + अक = नायक	शे + अन = शयन	मै + इकां = गायिका
पथो + इत्र = पवित्र	गे + अने = गायन	पो + अन = पवन
नौ + इक = नाविक	भो + अन = भवन	पौ + अन = पावन
हो + अन = हवन	पौ + अक = पावक	भो + इष्य = भविष्य
भो + उक = भावुक		

समास

विग्रह	समस्तपद	विग्रह	समस्तपद
राजा का कुमार	राजकुमार	गौ के लिए शाला	गौशाला
सेना कां पति	सेनापति	युद्ध के लिए भूमि	युद्धभूमि
देश के लिए भक्ति	देश भक्ति	सेना का नायक	सेना नायक
सुख को प्राप्त	सुख प्राप्त	यश को प्राप्त	यश प्राप्त
परलोक को गमन	परलोक गमन	वन को गमन	वन गमन
गगन को चूमने वाला	गगनचुंबी	माखन को चुराने वाला	माखनचोर

शाप से ग्रस्त	शापग्रस्त	तुलसी द्वारा कृत	तुलसीकृत
हस्तलिखित	हस्त से लिखित	रस से भरी	रसभरी
रेखांकित	रेखा से अंकित	अकाल से पीड़ित	अकाल पीड़ित
सत्य के लिए आग्रह	सत्याग्रह	धर्म के लिए शाला	धर्मशाला
हवन के लिए सामग्री	हवन सामग्री	राह के लिए खर्च	राहख़र्च
सत्य के लिए आग्रह	सत्याग्रह	हाथ के लिए कड़ी	हथकड़ी
मार्ग से भ्रष्ट	मार्गभ्रष्ट	विद्या से विहीन	विद्याविहीन
धर्म से पतित	धर्मपतित	ऋण से मुक्त	ऋणमुक्त
धन से हीन	धनहीन	देश से निकाला	देश निकाला
गंगा का जल	गंगाजल	दीनों के नाथ	दीनानाथ
देश का वासी	देशवासी	घोड़ों की दौड़	घुड़दौड़
अमृत की धारा	अमृतधारा	राष्ट्र का पति	राष्ट्रपति
वन में वास	वनवास	गृह में प्रवेश	गृह-प्रवेश
ध्यान में मग्न	ध्यान मग्न	आप पर बीती	आप बीती
दान में वीर	दानवीर	कार्य में कुशल	कार्यकुशल
दुख को प्राप्त	दुख प्राप्त	शोक से आकुल	शोकाकुल
सब को खाने वाला	सर्वभक्षी	युद्ध के लिए भूमि	युद्धभूमि
रहीम द्वारा कृत	रहीमकृत	पथ से भ्रष्ट	पथभ्रष्ट
यज्ञ के लिए शाला	यज्ञशाला	भू का दान	भूदान
धर्म से विमुख	धर्मविमुख	कर्म में वीर	कर्मवीर
राजा की सभा	राजसभा	ग्राम में वास	ग्रामवास
वायु में चलने वाला यान	वायुयान	परमवीर को मिलने वाला चक्र	परमवीर चक्र
माल ढोने बाली गाड़ी	मालगाड़ी	बैलों के द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी	बैलगाड़ी
अश्रु लाने वाली गैस	अश्रुगैस	मधु इक्ट्ठा करने वाली मक्खी	मधुमक्खीं
काली है जो मिर्च	काली मिर्च	कमल के समान चरण	चरण कमल
महान है जो देव	महादेव	नीली है जो गाय	नीलगाय
परम है जो आनंद	परमनंद	घन के समान श्याम	घनश्याम
कनक के समान लता	कनकलता	चन्द्र के समान मुख	चन्द्रमुख
नर है जो सिंह के समान	नर सिंह	मुख है जो चन्द्र के समान	मुखचन्द्र
भला है जो मानस	भलामानस	ग्रन्थ है जो रत्न के समान	ग्रन्थरत्न

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

विग्रह	समास	समास	विग्रह
मन से गढ़ंत	मनगढ़ंत	बाढ़-पीड़ित	बाढ़ से पीड़ित
जेब के लिए खर्च	जेबखर्च	युद्ध-अभ्यास	युद्ध के लिए अभ्यास
धर्म से भ्रष्ट	धर्मश्रष्ट	भुखमरा	भूख से मरा
कर्तव्य में निष्ठा	कर्तव्यनिष्ठा	जन्मरोगी	जन्म से रोगी
देश के लिए प्रेम	देश प्रेम	भारतरत्न	भारत का रत्न
लाखों का पति	लखपति	राजकुमारी	राजा की कुमारी
आराम के लिए कुर्सी	आरामकुर्सी	आँखों-देखी	आँखों से देखी
सबको प्रिय	सर्वप्रिय	मृत्यु-दंड	मृत्यु का दंड
परीक्षा के लिए केन्द्र	परीक्षाकेन्द्र	नगरवास	नगर में वास
पाप से मुक्ति	पापमुक्त	पैदलपथ पैदल	चलने के लिए पथ

भाववाचक संज्ञा-निर्माण

बूढ़ा	बुढ़ापा	आदमी	आदमियत	इन्सान	इन्सानियत
चोर	चोरी	ठग	ठगी	कारीगर	कारीगरी

मनुष्य	मनुष्यता	मित्र	मित्रता	शिशु	शिशुता
पशु	पशुता	प्रभु	प्रभुता	वीर	वीरता
क्षत्रिय	क्षत्रियत्व	नारी	नारीत्व	गुरु	गुरुत्व
व्यक्ति	व्यक्तित्व	प्रभु	प्रभुत्व	स्त्री	स्त्रीत्व
धिक्	धिक्कार	पंडित	पांडित्य	कुमार	कौमार्य
अहं	अहंकार	मम	ममता	स्व	स्वत्व
निज	निजत्व	अपना	अपनत्व	अच्छा	अच्छाई
गहरा	गहराई	भला	भलाई	ऊँचा	ऊँचाई
मोटा	मोटापा	मीठा	मिठास	खट्टा	खटास
कड़वा	कड़वाहट	चिकना	चिकनाहट	काला	कालिमा
नीला	नीलापन	महा	महिमा	ईमानदार	ईमानदारी
चालाक	चालाकी	गरीब	गरीबी	आज़ाद	आज़ादी
लाल	लाली	सफ़ेद	सफेदी	सुन्दर	सुन्दरता
निर्धन	निर्धनता	मूर्ख	मूर्खता	सरल	सरलता
सज्जन	सज्जनता	विद्वान	विद्वता	मधुर	मधुरता
चतुर	चतुरता	लिखना	लिखाई	पढ़ना	पढ़ाई
उतरना	उतराई	घिसना	घिसाई	बुनना	बुनाई
चढ़ना	चढ़ाई	लड़ना	लड़ाई	चुनना	चुनाव
लगना	लगाव	बहना	बहाव	पहनना	पहनावा
बचना	बचाव	गिरना	गिरावट	थकना	थकावट
सजाना	सजावट	घबराना	घबराहट	मुस्कराना	मुस्कराहट
जलना	जलन	मिलना	मिलन	पालना	पालन
उलझना	उलझन	खेलना	खेल	भूलना	भूल
माँगना	माँग	ढूँढ़ना	ढूँढ़	काटना	काट
खोजना	खोज	नापना	नाप	दौड़ना	दौड़
दूर	दूरी	ऊपर	ऊपरी	निकट	निकटता

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

मित्र	मित्रता	नमक	नमकीन	युवक	यौवन
नारी	नारीत्व	आलसी	आलस्य	संतुष्ट	संतुष्टि
राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता	लिखना	लिखावट	बच्चा	बचपन
शिक्षक	शिक्षा	माता	मातृत्व	हँसना	हँसी
सफेद	सफेदी	अरुण	अरुणिमा	दीन	दीनता
चिकित्सक	चिकित्सा	पराया	परायापन	भक्त	भक्ति
ईमानदार	ईमानदारी	कमाना	कमाई	पूजना	पूजन
समीप	समीपता	सुंदर	सुंदरता	बंधु	बंधुत्व
फिसलना	फिसलन	गिरना	गिरावट	शुद्ध	शुद्धता
मानव	मानवता	बनाना	बनावट	खोजना	खोज

पर्यायवाची शब्द

1. अग्नि - आग, अनल, ज्वाला
2. अध्यापक - गुरु, आचार्य, शिक्षक
3. अनुपम - अतुल, अतुल्य, अनोखा, निराला
4. आँख - नेत्र, नयन, लोचने, विलोचन
5. आकाश - आसमान, गगन, नभ, अंबर
6. इच्छा - चाह, अभिलाषा, लालसा, आशा, अकांक्षा
7. ईश्वर - ईश, भगवान, परमात्मा, प्रभु
8. उद्यान - बाग, बगीचा, उपवन, वाटिका
9. कमल - जलज, नीरज, सरोज, पंकज
10. कृष्ण - गोविंदा, गोपाल, नंदलाल
11. गंगा - देव सरिता, सुर सरिता, भागीरथी, देवनदी
12. घर - आवास, धाम, निकेतन थे
13. चंद्रमा - चंद, चन्द्र, चाँद, शशि
14. जंगल - वन, विपिन, अरण्य

15. जल - पानी, नीर, वारि, पय
16. जीभ - जिहवा, रमना, जुबान
17. झंडा - ध्वज, ध्वजा, पताका
18. तलवार - खड्ग, शमशेर, शमशीर
19. तालाब - सर, सरोवर, ताल, जलाशय
20. दर्पण - शीशा, आइना, मुकुर
21. दिन - दिवस, वासर, वार, रोज़
22. दुःख - कष्ट, शोक, वेदना, पीड़ा
23. नदी - नद, सरिता, तटी
24. नवीन - नव, नवल, नया, नूतन
25. निपुण - चतुर, प्रवीण, कुशल
26. नौका - नाव, नैया, तरी, तरणी
27. पक्षी - खग, विहग, पंछी, परिंदा
28. पहाड़ - पर्वत, भूधर, भूमिधर
29. पवन - हवा, वायु, अनिल, समीर
30. पुत्र - तनय, तनुज, बेटा, सुत
31. पुत्री - बेटी, सुता, तनया, तनुजा
32. पृथ्वी - भू, भूमि, धरती, अचला
33. प्रेम - प्यार, अनुराग, प्रीति
34. फूल - पुष्प, कुसुम, सुमन
35. बादल - जलद, नीरद, मेघ
36. माता - माँ, जननी, मैया, मातृ, अंबा
37. रात - रजनी, निशा, रात्रि, यामिनी
38. राजा - भूप, भूपति, महीप, नरेश दर
39. शत्रु - वैरी, दुश्मन, अरि
40. समुद्र - सागर, जलधि, नीरधि
41. सरस्वती - गिरा, शारदा, भारती, कमला
42. सूर्य - सूरज, रवि, दिनकर, दिवाकर, भास्कर
43. सोना - सुवर्ण, स्वर्ण, कन्क, कंचन
44. स्त्री - नारी, औरत, महिला
45. हाथ - कर, पाणि, हस्त

निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए

1. अंधेरा - तम, तमस, तिमिर
2. अहंकार - गर्व,घमंड, अभिमान
3. आनन्द - हर्ष, प्रसन्नता, उल्लास
4. उन्नति - उत्थान, उत्कर्ष, वृद्धि, उदय
5. किसान - कृषक, हलवाहा, कृषिजीवी, खेतिहर
6. गहना - आभूषण, जेवर, भूषण, अलंकार
7. चालाक - सयाना, कुशल, योग्य, होशियार
8. नौकर - दास, सेवक, अनुचर
9. दोस्त - मित्र, सखा, मीत
10. खजाना - संपत्ति, दौलत, लक्ष्मी
11. सागर - सिंधु, जलधि, सागर
12. सुबह - सवेरा, प्रातः, भोर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दें

पाठ 1 तुलसीदास (दोहावली) (कक्षा दसवीं)

1) तुलसीदास जी के अनुसार भगवान राम जी के निर्मल यश का गान करने से कौन-कौन से चार फल प्राप्त होते हैं?

उत्तर- धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष

2) मन के भीतर और बाहर उजाला करने के लिए तुलसी कौन सा दीपक हृदय में रखने की बात करते हैं?

उत्तर- राम-नाम रूपी मणियों का दीपक

3) संत किस की भाति नीर-क्षीर विवेक करते है?

उत्तर- हंस की भांति

4) तुलसीदास के अनुसार भवसागर को कैसे पार किया जा सकता है?

उत्तर- भगवान राम जी से सच्चा प्रेम करके

6) रामभक्ति के लिए गोस्वामी तुलसीदास किसकी आवश्यकता बतलाते हैं?

उत्तर- सच्चे और अटूट विश्वास की ।

पाठ 2 मीराबाई (पदावली)

प्रश्न (1) श्री कृष्ण ने कौन सा पर्वत धारण किया था?

उत्तर- गोवर्धन पर्वत

प्रश्न (2) मीरा किसे अपने नयनों में बसाना चाहती है?

उत्तर- श्री कृष्ण को

प्रश्न (3) श्री कृष्ण ने किस प्रकार का मुकुट और कुण्डल धारण किए हैं?

उत्तर- श्री कृष्ण ने मोर के पंखों का बना मुकुट व मकर की आकृति का कुण्डल धारण किया है।

प्रश्न (4) मीरा किसे देखकर प्रसन्न हुई और किसे देख कर दुखी हुई ?

उत्तर- मीरा भक्तों को देखकर प्रसन्न हुई और संसार का झमेला देख दुखी हुई।

प्रश्न (5) संतों की संगति में रहकर मीरा ने क्या छोड़ दिया?

उत्तर- लोक-लाज को

प्रश्न (6) मीरा अपने आँसुओं के जल से किस बेल को सींच रही थी?

उत्तर- श्री कृष्ण जी से प्रेम की बेल को।

प्रश्न (7) पदावली के दूसरे पद में मीराबाई गिरिधर से क्या चाहती है?

उत्तर- इस संसार रुपी सागर से उसका उद्धार किया जाए।

पाठ 3 नीति के दोहे (कक्षा दसवीं)

प्रश्न 1. रहीम जी के अनुसार सच्चे मित्र की क्या पहचान है?

उत्तर- जो विपत्ति में साथ देता है।

प्रश्न 2. ज्ञानी व्यक्ति सम्पत्ति का संचय किस लिए करते हैं?

उत्तर- परमार्थ अर्थात् दूसरों की भलाई के लिए करते हैं।

प्रश्न 3. बिहारी जी के अनुसार किसका साथ शोभा देता है?

उत्तर- एक जैसे स्वभाव वाले लोगों का।

प्रश्न 4. बिहारी जी ने मानव को आशावादी होने का क्या संदेश दिया है?

उत्तर- अच्छे दिनों के लिए आशावादी होना का।

प्रश्न 5. छल और कपट का व्यवहार बार-बार नहीं चल सकता-इसके लिए वृन्द जी ने क्या उदाहरण दिया है ?

उत्तर- काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ सकती।

प्रश्न 6. निरन्तर अभ्यास से व्यक्ति कैसे योग्य बन जाता है? वृन्द जी ने इसके लिए क्या उदाहरण दिया है?

उत्तर- बार-बार अभ्यास करने से।

प्रश्न 7. शत्रु को कमज़ोर या छोटा क्यों नहीं समझना चाहिए?

उत्तर- वह हमारी बड़ी हानि कर सकता है।

पाठ 4 हम राज्य लिए मरते हैं

प्रश्न 1. प्रस्तुत गीत में उर्मिला किसकी प्रशंसा कर रही है?

उत्तर- किसानों की।

प्रश्न 2.किसान संसार को समृद्ध कैसे बनाते हैं?

उत्तर- किसान अन्न पैदा करके।

प्रश्न 3.किसान किस प्रकार परिश्रम रूपी समुद्र को धीरज से तैरकर पार करते हैं?

उत्तर- परिश्रम और धैर्य से ।

प्रश्न 4.किसान का अपने पर गर्व करना कैसे उचित है ?

उत्तर- वह अन्नदाता होता है।

प्रश्न 5.किसान व्यर्थ के वाद विवाद को छोड़कर किस धर्म का पालन करते हैं?

उत्तर- मूल धर्म का।

पाठ 5 गाता खग

प्रश्न 1. पक्षी प्रातः उठकर क्या गाता है?

उत्तर- सुख एवं समृद्ध जीवन की कामना के गीत।

प्रश्न 2. तारों की पंक्तियों की आँखों का अनुभव क्या है?

उत्तर- दुख और आँसू ।

प्रश्न 3. फूल हमें क्या सन्देश देते हैं?

उत्तर- मुस्कराने ।

प्रश्न 4. लहरें किस उमंग में आगे बढ़ती जाती हैं?

उत्तर- किनारे से मिलने की आस में।

प्रश्न 5. बुलबुला विलीन होकर क्या पा जाता है?

उत्तर- जीवन के अंतिम लक्ष्य को।

पाठ 6 जड़ की मुसकान

प्रश्न 1. एक दिन तने ने जड़ को क्या कहा ?

उत्तर- कि वो तो निर्जीव है।

प्रश्न 2. पत्तियाँ डाल की किस कमी की ओर संकेत करती हैं ?

उत्तर- इस ध्वनि प्रधान दुनिया में कभी एक शब्द भी नहीं बोल पाई।

प्रश्न 3. फूलों ने पत्तियों की चंचलता का आधार क्या बताया ?

उत्तर- डाली को।

पाठ 7 कहानी ममता)

प्रश्न 1. ममता कौन थी ?

उत्तर- चूड़ामणि की विधवा बेटी थी।

प्रश्न 2. मंत्री चूड़ामणि को किसकी चिंता थी ?

उत्तर- अपनी बेटी की।

प्रश्न 3. मंत्री चूड़ामणि ने अपनी विधवा पुत्री ममता को उपहार में क्या देना चाहा ?

उत्तर- सोने-चाँदी के आभूषण।

प्रश्न 4. डोलियों में छिपाकर दुर्ग के अंदर कौन आए ?

उत्तर- स्त्रीवेश में शेरशाह के सिपाही ।

प्रश्न 5. ममता रोहतास दुर्ग छोड़कर कहाँ रहने लगी ?

उत्तर- काशी के निकट बौद्ध विहार के खंडहरों में झोपड़ी बनाकर रहने लगी।

प्रश्न 6. ममता से झोपड़ी में किसने आश्रय माँगा ?

उत्तर- मुगल बादशाह हुमायूँ ने आश्रय माँगा था।

प्रश्न 7. ममता पथिक को झोंपड़ी में स्थान देकर स्वयं कहाँ चली गई ?

उत्तर- ममता स्वयं खंडहरों में चली गई।

प्रश्न 8. चौसा युद्ध किन-किन के मध्य हुआ ?

उत्तर- चौसा युद्ध मुगल बादशाह हुमायूँ और शेरशाह सूरी के मध्य हुआ।

प्रश्न 9. विश्राम के बाद जाते हुए पथिक ने मिरजा को क्या आदेश दिया ?

उत्तर- झोपड़ी की जगह घर बनवाने का।

प्रश्न 10. ममता की जीर्ण-कंकाल अवस्था में उसकी सेवा कौन कर रही थीं ?

उत्तर- ममता की जीर्ण-कंकाल अवस्था में उसकी सेवा पास के गाँव की कुछ औरतें कर रही थीं।

पाठ 8 अशिक्षित का हृदय

प्रश्न 1 बूढ़े मनोहर सिंह का नीम का पेड़ किस के पास गिरवी था ?

उत्तर- ठाकुर शिवपाल सिंह के पास।

प्रश्न 2 ठाकुर शिवपाल सिंह रुपए न पाए जाने पर किस बात की धमकी देता है ?

उत्तर- पेड़ काटने की ।

प्रश्न 3 मनोहर सिंह ने रुपए लौटाने की मोहलत कब तक की माँगी थी?

उत्तर- एक सप्ताह तक ।

प्रश्न 4 नीम का वृक्ष किसका लगाया हुआ था ?

उत्तर- मनोहर सिंह के पिता के द्वारा।

प्रश्न 5 तेजा सिंह कौन था?

उत्तर- प्रतिष्ठित किसान का 15 - 16 साल का बेटा ।

प्रश्न 6 ठाकुर शिवपाल सिंह का कर्ज अदा हो जाने के बाद मनोहर सिंह ने अपने नीम के पेड़ के विषय में क्या निर्णय लिया?

उत्तर अपना नीम का पेड़ तेजा सिंह को देने का निर्णय लिया।

पाठ 9 दो कलाकार

प्रश्न 1. छात्रावास में रहने वाली दो सहेलियों के क्या नाम थे ?

उत्तर नाम अरुणा और चित्रा ।

प्रश्न 2. चित्रा कहानी के आरंभ में अरुणा को क्यों जगाती है ?

उत्तर चित्र दिखाने के लिए।

प्रश्न 5 चित्रा के पिताजी ने पत्र में क्या लिखा था?

उत्तर पढ़ाई खत्म हो जाने पर वह विदेश जा सकती है।

प्रश्न 6. अरुणा बाढ़ पीड़ितों की सहायता करके स्वयंसेवकों के दल के साथ कितने दिनों बाद लौटी?

उत्तर पन्द्रह दिनों बाद लौटी।

प्रश्न 7 विदेश में चित्रा के किस चित्र ने धूम मचाई थी ?

उत्तर दो अनाथ बच्चों के चित्र ने ।

पाठ 10 नर्स

प्रश्न 1. महेश कितने साल का था ?

उत्तर महेश 6 साल का था।

प्रश्न 2. महेश कहाँ दाखिल था?

उत्तर महेश अस्पताल में दाखिल था।

प्रश्न 3. अस्पताल में मुलाकातियों से मिलने का समय क्या था?

उत्तर शाम चार से छ बजे तक का था ।

प्रश्न 4. वार्ड में कुल कितने बच्चे थे?

उत्तर वार्ड में कुल 12 बच्चे थे।

प्रश्न 5. सात बजे सी कौन सी दो नर्सें से वार्ड में आई ?

उत्तर मरींड़ा और मांजरेकर।

प्रश्न 6. महेश किस सिस्टर से घुल-मिल गया था?

उत्तर सिस्टर सूसान से ।

प्रश्न 7. महेश को अस्पताल से कितने दिन बाद छुट्टी मिली?

उत्तर तेरह दिन बाद ।

पाठ 11 (i) माँ का कमरा

प्रश्न (1) बुजुर्ग बसंती कहाँ रह रही थी?

उत्तर अपने पुश्तैनी मकान में।

प्रश्न (2) बुजुर्ग बसंती को किस का पत्र मिला?

उत्तर अपने पुत्र का ।

प्रश्न (3) बसंती की पड़ोसन कौन थी ?

उत्तर रेशमा ।

प्रश्न (4) बसंती बेटे के साथ कहाँ आई थी ?

उत्तर बसंती बेटे के साथ नगर में उसके घर आई थी।

प्रश्न 5.कोठी में कितने कमरे थे?

उत्तर कोठी में तीन बैडरूम, एक ड्राईंग रूम और नौकरों के कमरे थे।

प्रश्न (6) नौकर ने बसंती का सामान कहाँ रखा था?

उत्तर बरामदे के साथ वाले कमरे में रखा था।

पाठ 11 (ii) अहसास

प्रश्न (1) दिवाकर की नए स्कूल में किसने मदद की ?

उत्तर उसकी अध्यापिका मैडम नीरू ।

प्रश्न (2) स्कूल बस पर छात्र-छात्राएँ कहाँ जा रहे थे?

उत्तर शैक्षिक भ्रमण के लिए जा रहे थे ।

प्रश्न (3) छात्राएँ बस में क्या कर रही थी?

उत्तर अंताक्षरी खेल रही थी।

प्रश्न (6) कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राएँ क्या देखकर डर गए?

उत्तर साँप को देखकर ।

विशेषण-निर्माण

उपदेश	उपदेशक	उपकार	उपकारक	नाम	नामक
लेख	लेखक	अंग	आंगिक	अर्थ	आर्थिक.
कल्पना	काल्पनिक	चरित्र	चारित्रिक	परिवार	पारिवारिक
वर्ष	वार्षिक	दर्शन	दार्शनिक	धर्म	धार्मिक
प्रकृति	प्राकृतिक	संसार	सांसारिक	समाज	सामाजिक
संस्कृत	सांस्कृतिक	इच्छा	ऐच्छिक	नीति	नैतिक
इतिहास	ऐतिहासिक	दिन	दैनिक	विज्ञान	वैज्ञानिक
विवाह	वैवाहिक	देह	दैहिक	उपचार	औपचारिक
उद्योग	औद्योगिक	पुष्टि	पौष्टिक	भूगोल	भौगोलिक
मुख	मौखिक	अंक	अंकित	अंकुर	अंकुरित
अपमान	अपमानित	अपेक्षा	अपेक्षित	उपेक्षा	उपेक्षित
घृणा	घृणित	चित्र	चित्रित	प्रस्ताव	प्रस्तावित
मोह	मोहित	चिन्ता	चिन्तित	पीड़ा	पीड़ित
मूर्च्छा	मूर्छित	पराजय	पराजित	विजय	विजित
संचय	संचित	क्षेत्र	क्षेत्रीय	दर्शन	दर्शनीय
नाटक	नाटकीय	पर्वत	पर्वतीय	पुस्तक	पुस्तकीय
भारत	भारतीय	मानव	मानवीय	स्थान	स्थानीय
क्षमा	क्षम्य	पाठ	पाठ्य	पूजा	पूज्य
मान	मान्य	वन	वन्य	योग	यौगिक
सभा	सभ्य	अज्ञान	आज्ञानी	अनुभव	अनुभवी
उपयोग	उपयोगी	क्रोध	क्रोधी	जंगल	जंगली
अन्याय	अन्यायी	प्रेम	प्रेमी	पश्चिम	पश्चिमी
दुःख	दुखी	शहर	शहरी	खर्च	खर्चीला
चमक	चमकौला	ज़हर	ज़हरीला	जोश	जोशीला
बर्फ	बर्फीला	रंग	रंगीला	बुद्धी	बुद्धीमान
शक्ति	शक्तिमान	श्री	श्रीमान	प्रकाश	प्रकाशमान
गुण	गुणवान	धन	धनवान	नाश	नाशवान
रूप	रूपवान	ओजस्	ओजस्वी	तपस्	तपस्वी
तेजस्	तेजस्वी	मनस्	मनस्वी	गौरव	गौरवशाली
प्रतिभा	प्रतिभाशाली	बल	बलशाली	भाग्य	भाग्यशाली
ईर्ष्या	ईर्ष्यालु	कृपा	कृपालु	दया	दयालु
श्रद्धा	श्रद्धालु	गुण	गुणवती	पुत्र	पुत्रवती
रूप	रूपवती	बल	बलवती	कर्म	कर्मनिष्ठ

कर्तव्य	कर्तव्यनिष्ठ	धर्म	धर्मनिष्ठ	सत्य	सत्यनिष्ठ
आप	आप जैसा	यह	ऐसा	जो	जैसा
तुम	तुम सा	मैं	मुझसा, मेरा	वह	वैसा
तो	तैसा (उस जैसा)	कौन	कैसा	पढ़ना	पढ़ाकू
देखना	दिखावटी	बनाना	बनावटी	उड़ना	उड़ाक
बेचना	बिकाऊ	भूलना	भुलक्कड़	आगे	अगला
नीचे	निचला	भीतर	भीतरी	ऊपर	ऊपरी
पीछे	पिछला	बाहर	बाहरी		

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

सप्ताह	साप्ताहिक	बिकना	बिकाऊ	पंजाब	पंजाबी
प्रदेश	प्रदेशीय	साहित्य	साहित्यिक	काँटा	कंटीला
टिकना	टिकाऊ	राष्ट्र	राष्ट्रीय	निंदा	निंदित
सेना	सेनापरिच्छद	सुख	सुखी	पराक्रम	पराक्रमी
पत्थर	पत्थरीला	अध्यात्म	आध्यात्मिक	रोग	रोगग्रस्त
लालच	लालची	प्रमाण	प्रमाणिक	रंग	रंगीन
पुस्तक	पुस्तकीय	सम्मान	सम्माननीय	बुद्धि	बुद्धिमान
शरीर	शारीरिक	ज्ञान	ज्ञानवान	प्यास	प्यासा
आधार	आधारिक	कुदरत	कुदरती	विधान	वैधानिक
आदर	आदरणीय	खाना	खानाबदोश	तैरना	तैराक

विलोम शब्द

ज्ञान	अज्ञान	तृप्त	अतृप्त	न्याय	अन्याय
पूर्ण	आपूर्ण	प्रसनत	अप्रसन	धर्म	अधर्म
शांति	अशांति	सभ्य	असभ्य	साधारण	असाधारण
स्वस्थ	अस्वस्थ	आदर	अनादर	आगत	अनागत
इच्छा	अनिच्छा	इष्ट	अनिष्ट	उचित	अनुचित
उदार	अनुदार	एक	अनेक	औपचारिक	अनौपचारिक
शकुन	अपशकुन	शब्द	अपशब्द	उपकार	अपकार
कीर्ति	अपकीर्ति	यश	अपयश	मान	अपमान
आरोह	अवरोह	उन्नति	अवनति	उत्तल	अवतल
गुण	अनु	सुकर्म	कुकर्म	सुमार्ग	कुमार्ग
सुविचार	कुविचार	सुमति	कुमति	सुपात्र	कुपात्र
सुपुत्र	कुपुत्र	विख्यात	कुख्यात	सुपूत	कपूत
सज्जन	दुर्जन	सदगति	दुर्गति	सदाचार	दुराचार
सद्भावना	दुर्भावना	सुगन्ध	दुर्गन्ध	सौभाग्य	दुर्भाग्य
कबूल	नाकबूल	काबिल	नाकाबिल	कामयाब	नाकामयाब
खुश	नाखुश	पसन्द	नापसन्द	पाक	नापाक
बालिग	नाबालिग	मंजूर	नामंजूर	मुमकिन	नामुमकिन
वाकिफ़	नावाकिफ़	आशा	निराशा	आश्रित	निराश्रित
आधार	निराधार	मोही	निर्मोही	सदोष	निर्दोष
सबल	निर्बल	साकार	निराकार	साक्षर	निरक्षर
स्वकीय	परकोय	स्वाधीन	पराधीन	स्वतंत्र	परतंत्र
स्वार्थ	परमार्थ	अनुकूल	प्रतिकूल	बाद	प्रतिवाद

घात प्रतिघात	क्रिया प्रतिक्रिया	अनुरक्ति विरक्ति
आकर्षण विकर्षण	संपन्न विपन्न	क्रय विक्रय
स्वदेश विदेश	संयोग वियोग	संश्लेषण विश्लेषण
संपदा विपदा	सधवा विधवा	संकल्प विकल्प
इज़्ज़त बेइज़्ज़त	ईमानदार बेईमान	कसूरवार बेकसूर
गुनहगार बेगुनाह	चैन बेचैन	खौफ बेखौफ
अंत आरम्भ	अंतिम आरम्भिक	अमृत विष
अल्प अधिक	अस्त उदयं	अनिवार्य वैकल्पिक
इंसान हैवान	इनकार इकरार	निंदा प्रशंसा
उगलना निगलना	उजड़ा बसा	उजला मैला
वग्र शांत	ऊसर उपजाऊ	ओझल समक्ष
कंजूस दानी	कटना जुड़ना	कमाना खर्चना
करीब दूर	कीमती सस्ता	कृतज्ञ कृतध्न
कोमल कठोर	खरा खोटा	गुप्त प्रकट
छुटकारा बंधन	जड़ चेतन	जिंदाबाद मुर्दाबाद
जीवन मरण	झगड़ा समझौता	ठोस तरल
तीक्ष्ण मंद	त्याज्य स्वीकार्य	द्वेष राग
दिवस रात्रि	निंदनीय प्रशंसनीय	निकास प्रवेश
निठल्ला कमाऊ	नौकर मालिक	पालक संहारक
प्रश्न उत्तर	पाप पुन्य	फुटकर थोक
बिक्री खरीद	बनना बिगड़ना	भोला चालाक
महँगा सस्ता	मित्र शत्रु	यशस्वी कलंकित
घृणा प्रेम	चंचल स्थिर	चमकीला धुँधला
छाँह धूप	रक्षक भक्षक	विधि निषेध
शोक हर्ष	हानि लाभ	

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

अनुज अग्रज	कृतज्ञ कृतष्न	एकता अनेकता
प्रत्यक्ष परोक्ष	वीर कायर	दुरुपयोग सदुपयोग
सार्थक निरार्धक	निश्चित अनिश्चित	करुण अकरुण
कुमार्ग सुमार्ग	आयात निर्यात	उधार नकद
निर्माण विनाश	मानव दानव	हार जीत
प्रकाशित अप्रकाशित	आशाजनक निराशाजनक	नायक खलनायक
उत्तीर्ण अनुतीर्ण	खेद प्रसन्नता	

समरूपी भिन्नार्थक शब्द

1.	अचल (पर्वत)	अचला (पृथ्वी)
2.	अनल (अग्नि)	अनिल (वायु)
3.	अनु (पीछे)	अणु (कण)
4.	अन्न (अनाज)	अन्य (दूसरा)
5.	अपेक्षा (चाह, आशा, तुलना में)	उपेक्षा (लापरवाही)
6.	अवश्य (ज़रूरी)	अवश (बेबस)
7.	अवधि (समय)	अवधी (अवध प्रान्त की भाषा)
8.	अवलम्ब (सहारा)	अविलम्ब (शीघ्र)
9.	असमान (जो बराबर न हो)	आसमान (आकाश)

10.	आदि (आरंभ, मूल)	आदी (अभ्यस्त, आदत वाला)
11.	उपयुक्त (उचित)	उपर्युक्त (जिसका वर्णन ऊपर किया गया हो)
12.	उधार (कर्ज़)	उद्धार (उबारना)
13.	कल्पना (मन की उपज)	कलपना (दुखी होना)
14.	कुल (वंश)	कूल (किनारा)
15.	गिरि (पर्वत)	गिरी ('गिरना' का भूतकाल)
16.	गुर (उपाय)	गुरु (शिक्षक, बड़ा, भारी)
17.	दशा (हालत)	दिशा (तरफ)
18.	धरा (धरती)	धारा (पानी का प्रवाह)
19.	निश्चल (अटल)	निश्छल (छल रहित)
20.	परिमाण (माप)	परिणाम (नाप)

21. प्रणाम (नतीजा) कल परीक्षा का परिणाम आने वाला है।
    प्रमाण (सबूत नत होना, झुकना) मेरी बेगुनाही के सभी प्रमाण मैंने दिखा दिए हैं।
22. कर्म (काम) हमेशा कर्म करो फल की इच्छा मत करो।
    क्रम (सिलसिला) सभी प्रश्न क्रम अनुसार ही हल करने हैं।
23. खाद (उर्वरक) अच्छी फसल के लिए खेतों में किसान खाद डालते हैं।
    खाद्य (खाने योग्य) हमें पौष्टिक खाद्य पदार्थ खाने चाहिए।
24. गृह (घर) बच्चों ने अध्यापिका द्वारा दिया गया गृह कार्य कर लिया है।
    ग्रह (नक्षत्र) आजकल उसके ग्रह ठीक नहीं है।
25. चर्म (चमड़ा) यह चर्म की जूती बहुत सुंदर है।
    चरम (अन्तिम) राजा के अत्याचार अब चरम सीमा पर पहुँच गए हैं।
26. दिन (दिवस) हफ्ते में 7 दिन होते हैं।
    दीन (गरीब) हमें दीन दुखियों की हमेशा सहायता करनी चाहिए।
27. नम्र (विनीत) राधा का स्वभाव बहुत नम्र है।
    नर्म (कोमल) फूल की पंखुड़ियां बहुत नरम होती हैं।
28. नीयत (इरादा, इच्छा) उसकी नियत कुछ अच्छी नहीं लगती।
    नियत (निश्चित) नियत समय में अपना कार्य पूरा करें।
29. पानी (जल) पानी एक अनमोल कुदरती धन है।
    पाणि (हाथ) अपने पाणि से अपना काम खुद करें।
30. प्रसाद (अनुग्रह, देवता को चढ़ाई गई वस्तु) मंदिर में प्रार्थना के बाद पंडित जी ने हमें प्रसाद दिया।
    प्रासाद (महल) राजा ने अपने बल पर कई प्रासाद खड़े किए।
31. प्रहार (चोट) दुश्मन ने राजा पर पीछे से प्रहार किए।
    परिहार (त्याग) हमें कुछ पाने के लिए आलस्य का परिहार करना चाहिए।
32. बलि (बलिदान) देशभक्तों ने हिंदुस्तान को आजाद करवाने के लिए अपनी बलि दी।
    बली (बलवान) वह एक बली राजा था।
33. बात (कथन, वचन) छोटे बच्चों से हमें प्यार से बात करनी चाहिए।
    वात (हवा) आज भुत गर्म वाट चल रही है।
34. माँस (जीव के शरीर का माँस) शेर जंगल के जानवरों का मांस खाकर अपना पेट भरता है।
    मास (महीना) एक साल में बारह मास होते हैं।
35. राज (राज्य, शासन) राजा बड़ी चतुरता से राज करता था।
    राज़ (रहस्य) इस बात को राज़ ही रखना, किसी से ना कहना।

36. शोक (दुःख) उसके माता जी की मृत्यु का शोक समाचार मुझे आज सुबह ही मिला।

शौक (लालसा, रुचि) मुझे पर्वतीय स्थानों पर घूमने का शौक है।

37. संकर (तंग) यह रास्ता संकरी गुफा से होकर जाता है।

शंकर (भगवान शिव) वह शंकर का भक्त है।

38. समान (बराबर) आज के जमाने में लड़का और लड़की समान हैं।

सम्मान (मान) बड़ों का सम्मान करना हमारा परम धर्म है।

सामान (वस्तु) बिखरे हुए सामान को इकट्ठा करके रख दो।

39. सुत (पुत्र) राजा दशरथ के चार सुत थे।

सूत (सारथि, कता हुआ धागा) अर्जुन के रथ के सुत श्री कृष्ण जी थे ।

40. बदन (शरीर) युद्ध में राजा के वदन पर गंभीर चोट लगी

वदन (मुख) युद्ध में राजा के वदन पर गंभीर चोट लगी ।

41. बहु (बहुत) यह बहु वैकल्पिक प्रश्न है।

बहू (वधू) उसकी बहु उसकी बड़ी सेवा करती है।

42. बालू (रेत) राजस्थान में मैंने बड़े-बड़े बालू के ढेर देखे।

भालू (रीछ) भालू जंगल का एक जीव है।

43. मातृ (माता) उसने अपनी मातृ की बड़ी सेवा की।

मात्र (केवल) आपको मात्र दो ही काम करने हैं ।

44. विषमय (ज़हरीला) कल वातावरण विषमय में होता जा रहा है।

विस्मय (अचंभा, हैरानी) 3डी फिल्म देखकर उसे बड़ा विस्मय हुआ।

45. शर (तीर) उसने ने शर चलाने की विद्या सीख ली थी।

सर (तालाब) हमने सर में स्नान किया।

46. सपुत्र (पुत्र सहित) आपको सपुत्र इस कार्यक्रम में आना है।

सुपुत्र (अच्छा बेटा) अच्छे व्यवहार से उसने सुपुत्र होने का प्रमाण दिया।

47. सुगंध (खुशबू) इस पुष्प की सुगंध ने मेरा मन मोह लिया।

सौगंध (शपथ) उसने आगे से कभी चोरी ना करने की सौगंध खाई।

48. हस्ति (हाथी) रजा हस्ति और बैठा था।

हस्ती (सामर्थ्य, शक्ति) उसने अपनी हस्ती पर यह युद्ध विजय किया।

अभ्यास निम्नलिखित समरूपी भिन्नार्थक शब्द-युग्म का प्रयोग वाक्य में करके अर्थ स्पष्ट कीजिए-

1. अन्न अन्न को व्यर्थ न छोड़ें।

अन्य राम के अतिरिक्त अन्य कोई स्कूल नहीं आया।

2. गिर गिरिराज हिमालय भारत देश की उत्तर दिशा में है।

गिरी वह छत से गिरी थी।

3. गुर उसने हस्तकला का यह गुर कहाँ से पाया?

गुरु गुरु जी नगर में परसों पधारेंगे।

4. नियत वे नियत समय पर कभी नहीं आते।

नीय उनकी नीयत तो खराब प्रतीत होती है।

5. प्रहार गुंडे ने चाकू से प्रहार किए थे।

परिहार गुरुजी अन्न का परिहार कर चुके हैं।

6 बालू राजस्थान में बालू के ढेर दूर से ही दिखाई देते हैं।

भालू मैंने जंगल में भालू देखा था।

7 शोक लाल बहादुर शास्त्री जी की मृत्यु से देश में शोक छा गया।

शौक पढ़ना मेरा शौक है।

8. विषमय सुकरात ने विषमय प्याला पी लिया था।

विस्मय इतनी छोटी बच्ची को सुन्दर काम करते देख सभी विस्मय में डूब गए थे।

9. सपुत्र हमारे सुपुत्र आगमन पर सभी प्रसन्न थे।

सुपुत्र पूनम का सुपुत्र तो उच्च पद पर आसीन है।

10. हस्ति राजा हस्ति-सेना लेकर युद्ध के मैदान में आ डटे थे।

हस्ती नेता जी से टकराने की उनकी कोई हस्ती नहीं है।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

विद्या ग्रहण करने वाला विद्यार्थी

देखने वाला	दर्शक	बोलने वाला	वक्ता
सुनने वाला	श्रोता	डाक बाँटने वाला	डाकिया
अचानक होने वाली बात या घटना	आकस्मिक	अपना मतलब निकालने वाला	स्वाथी, मतलबी
अवसर के अनुसार बदल जाने वाला	अवसरवादी	आँखों के सामने होने वाला	प्रत्यक्ष
आँखों के सामने न होने वाला	परोक्ष	आलोचना करने वाला	आलोचक
आगे या भविष्य की सोचने वाला	दूरदर्शी	ईश्वर में विश्वास रखने वाला	आस्तिक
ईश्वर में विश्वास न रखने वाला	नास्तिक	उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
उपकार को न मानने वाला	कृतघ्न	ऊपर कहा गया	उपर्युक्त
कम खाने वाला	अल्पाहारी,	किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला	विशेषज्ञ
कुछ जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु	जिसका आदि न हो	अनादि
जिसका आचरण अच्छा हो	सदाचारी	जिसका आचरण बुरा हो	दुराचारी
जिसका कोई अर्थ हो	सार्थक	जिसका कोई अर्थ न हो	निर्रर्थक
जिसका आकार न हो	निराकार	जिसका पार न हो	अपार
जिसका भाग्य अच्छा न हो	अभागा	जिसकी परीक्षा ली जा रही हो	परीक्षार्थी
जिसकी आयु बड़ी लम्बी हो	दीर्घायु	जिसकी बहुत अधिक चर्चा हो	बहुचर्चित
जिसकी कोई फीस न ली जाए	निःशुल्क	जिसका मूल्य न आँका जा सके	अमूल्य
जिसका पति मर गया हो	विधवा	जिसकी पत्नी मर गई हो	विधुर
जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य	जिसने ऋण चुका दिया हो	उऋण
अपनी इन्द्रियों पर विजय पा ली हो	जितेन्द्रिय	जो हाथ से लिखितहों	हस्तलिखित
जो लोगों में प्रिय हो	लोकप्रिय	जो शरण में आया हो	शरणागत
जो सरलता से प्राप्त हो	सुलभ	जो स्वयं सेवा करताहो	स्वयंसेवक
जो वेतन के बिना काम करे	अवैतनिक	जो देखा न जा सके	अदृश्य
जो साथ-साथ पढ़ते हों	सहपाठी	जो थोड़ी देर पहले पैदा हुआ हो	नवजात
जो थोड़ा बोलता हो	मितभाषी	जो कम व्यय करता हो	मितव्ययी
जो नियम के अनुसार न हो	अनियमित	जो बात कही ना सके	अकथनीय
जो पहले न पढ़ा हो	अपठित	जो परिचित न हो	अपरिचित
जो केवल कहने और दिखाने के लिए हो	औपचारिक	दिन में होने वाला	दैनिक
सप्ताह में एक बार होने वाला	साप्ताहिक	पंद्रह दिन में एक बार होने वाला	पाक्षिक
तीन मास में एक बार होने वाला	त्रैमासिक	वर्ष में एक बार होने वाला	वार्षिक
देश से द्रोह करने वाला	देशद्रोही	दो कामों में से करने योग्य एक कार्य	वैकल्पिक
नई चीज़ की खोज करने वाला	आविष्कारक	विदेश में जाकर बस जाने वाला	प्रवासी
पश्चिम से संबंध रखने वाला	पाश्चात्य	पूर्वजों से प्राप्त हुई सम्पत्ति	पैतृक
प्रशंसा करने योग्य	प्रशंसनीय	बिना विचारे किया हुआ विश्वास	अंधविश्वास
समाज से संबंधित	सामाजिक	सदा रहने वाला	शाश्वत
सौ वर्षों का समूह	शताब्दी	हित चाहने वाला	हितैषी

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

जो कभी न मरे	अमर	जो'संभव न हो सकें	असंभव
दर्द से भरा हुआ	दर्दीला	अपने ऊपर बीती	आपबीती
दूर की बात सोचने वाला	दूरदर्शी	जिसका कोई दोष न हो	निर्दोष
जो पहले हो चुका हो	अतीत	पंचों की सभा दे	पंचायत
मीठा बोलने वाला	मृदुभाषी	ईश्वर में विश्वास न रखने वाला	नास्तिक
अपनां नाम स्वयं लिखना	हस्ताक्षर	ज़ो स्वयं सेवा करता हो	स्वयंसेत्री
छात्रों के रहने का स्थान दि	छात्रावास	जिसके आने की तिथि मालूम न हो	अतिथि
मास में एक बार होने वाला	मासिक	दूसरे के काम में हाथ डालना	हस्तक्षेप
दया करने वाला	दयालु	जो दो भाषाएँ जानता हो	द्विभाषी
जो काम, से जी चुराए	कामचोर	जिसके मन में कपट	कपटी

अनेकार्थक शब्द

अर्थ - कारण, धन, मतलब, इच्छा, प्रयोजन

उत्तर - जवाब, उत्तर दिशा, बाद का, प्रतिकार

कनक - धतूरा, सोना, गेहूँ, खजूर, पलाश

कर - हाथ, किरण, टैक्स, सूंड़

कल - आगामी/बीता हुआ दिन, चैन, मशीन

काल - समय, अंत, वर्तमानकाल, मौसम

कुल - वंश, सभी, सारा

घन - बादल, घना, बहुत बड़ा हथौड़ा

घोड़ा - अश्व, शतरंज का मोहरा

चंदा - चाँद, सदस्यता का शुल्क

चक्र - पहिया, कुम्हारं का चाक, चक्की, चक्कर

तीर - किनारा, बाण

धूप - पूजा के लिए प्रयोग की जाने वाली धूप

नाक - साँस लेने एवं सुँघने की इंद्रिय, घड़ियाल, गौरव की बात

पतंग - सूर्य, कनकोओआ, पक्षी

फल - परिणाम, लाभ, प्रयोजन

बल - शक्ति, सेना, भरोसा, बलराम

बाल - बालक, केश

बोझ - भार, भारी वस्तु, कार्यभार

भाग - हिस्सा, दौड़, भाग्य

मंगल - मंगलवार, शुभ, सौर जगत का एक ग्रह

मकर - घड़ियाल, मछली, बारह राशियों में से दसवीं राशि

वंश - कुल, बाँस

व्रत - संकल्प, उपवास, नियम

हवा - वायु; साँस, अफवाह

निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थक शब्द लिखिए

अंक - गोद, चिह्न, संख्या, भाग्य

अंबर - वस्त्र, आकाश, कपास

आम - मामूली, आक का फल, सर्वसाधारण

गुरु - बड़ा, आचार्य, बृहस्पति, भारी

घट - घड़ा, शरीर, हृदय

निशान - चिह्न, ध्वज, यादगार, लक्ष्य

लाल - रंग, बेटा, मूल्यवान पत्थर

मत - सम्मति, वोट, मंशा, सिद्धान्त, सम्मत

भेंट - मुलाकात, मिलन, नजर

हल - खेत जोतने का यंत्र, समाधान

वाक्य-शुद्धी

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. वह रविवार के दिन तुम्हारे घर आएगा .	वह रविवार को तुम्हारे घर आएगा।
2. आपकी नारी का क्या नाम है?	आपकी पत्नी का कया नाम है ?
3. मैं अपने दादे के घर जाऊँगी।	मैं अपने दादा के घर जाऊँगी।
4. माली जल से पौधों को सींचता है।	माली पौधों को सींचता है।
5. उसने सभा में क्रोध प्रकट किया।	उसने सभा में रोष प्रकट किया।
6. लड़का ने पत्र लिखा।	लड़के ने पत्र लिखा।
7. देखो, बाहर दरवाज़े पर क्या आया है	देखो, बाहर दरवाज़े पर कौन आया है?
8. दूध में कौन गिर गया है ?	दूध में क्या गिर गया है?
9. मैं इस सम्बन्ध में मेरी राय प्रकट कर चुका हूँ।	मैं इस सम्बन्ध में अपनी राय प्रकट कर चुका हूँ।

10. मेरे को स्कूल जाना है।	मुझे स्कूल जाना है।
11 दो व्यक्ति के लिए खाना बना है।	दो व्यक्तियों के लिए खाना बना है।
12. सिपाही ने युद्ध में प्राण की बाज़ी लगादी।	सिपाही ने युद्ध में प्राणों की बाज़ी लगा दी।
13. उसने हस्ताक्षर कर दिया है।	उसने हस्ताक्षर कर दिये हैं।
14. हम आपकी कृपाओं को कभी भूल नहीं सकते।	हम आपकी कृपा को कभी भूल नहीं सकते।
15. कवि महादेवी वर्मा को कौन नहीं जानता?	कवयित्री महादेवी वर्मा को कौन नहीं जानता?
16. पीतल सस्ती हो गयी है।	पीतल सस्ता हो गया है।
17. पानी गिर गयी है।	पानी गिर गया है।
18. मेधावी मेरी अनुज है।	मेधावी मेरी अनुजा है।
19. वह अध्यापिका विद्वान है।	वह अध्यापिका विदुषी है।
20. मुकेश ने पुस्तक पढ़ता है।	मुकेश पुस्तक पढ़ता है।
21. उसने भूख लगी है।	उसको भूख लगी है।
22. अरविन्द स्कूल को जा रहा है।	अरविन्द स्कूल जा रहा है।
23. हम पढ़ने को स्कूल जाते हैं।	हम पढ़ने के लिए स्कूल जाते हैं।
24. मैं मेरी दीदी के पास जा रहा हूँ। |	मैं अपनी दीदी के पास जा रहा हूँ।
25. पेड़ों में मत चढ़ो।	पेड़ों पर मत चढ़ो।
26. वह मधुरतम गाती है।	वह मधुर गाती है।
27 उसने झूठ बात कही।	उसने झूठीं बांत कही।
28. युद्ध में खूंखार अस्त्रों-शस्त्रों का प्रयोग किया गया।	युंद्ध में विनाशकारी अस्त्रों -शस्त्रों का प्रयोंग किया गया।
29. मुझे भारी प्यास लगी हुई है।	मुझे बहुत प्यास लगी हुई है।
30. प्रत्येक बालिका को चार-चार लड्डू दे दो।	प्रत्येक बालिका को चार लड्डू दे दो।
31 मेरी बहन ने मुझे कहानी सुनाया।	मेरी बहन ने मुझे कहानी सुनायी।
32. हमें हरी सब्जियाँ खाना चाहिए।	हमें हरी सब्ज़ियाँ खानी चाहिए।
33. गुड़िया विलाप करके रोने लगी।	गुड़िया विलाप करने लगी।
34. सभापति ने अच्छा भाषण किया।	सभापति ने अच्छा भाषण दिया।
35. हम कल तुम्हारे घर आऊँगा।	हम कल तुम्हारे घर आएँगे।
36. कॉपियाँ ये किसकी हैं ?	ये कॉपियाँ किसकी हैं ?
37. चार मालाएँ फूलों की ले आओ।	फूलों की चार मालाएँ ले आओ।
38. अध्यापक ने पाठ छात्रों को पढ़ाया।	अध्यापक ने छात्रों को पाठ पढ़ाया।
39. वह स्कूल गया खाना खाकर ।	वह खाना खाकर स्कूल गया।
40. मैं नहीं खेलने जाऊँगा।	मैं खेलने नहीं जाऊँगा। डे
41. मयंक गुप्ता (डॉ०) बहुत ही न अनुभवी है।	डॉ० मयंक गुप्ता बहुत ही अनुभवी हैं।
42. पुलिस द्वारा चोर को पकड़ा।	पुलिस द्वारा चोर पकड़ा गया।
43. ये पंक्तियाँ 'पंत' जी की कविता से ली हैं।	ये पंक्तियाँ 'पंत' जी की कविता से ली गयी हैं।
44. अध्यापक ने हमसे लेख लिखाया।	अध्यापक ने हमसे लेख लिखवाया।
45. मेरे द्वारा पत्र लिखा।	मेरे द्वारा पत्र लिखा गया।
46. मैं सप्रेम सहित नमस्कार करता हूँ।	मैं प्रेम सहित नमस्कार करता हूँ।
47. मनाली के अनेक दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं।	मनाली में अनेक स्थल देखने योग्य हैं।
48. कृपया मेरे घर आने की कृपा करें।	मेरे घर आने की कृपा करें।
49. यह स्थान केवल मात्र विकलांगों के लिए आरक्षित है।	यह स्थान केवल विकलांगों के लिए आरक्षित है।
50. वह निरंतर लगातार खेलता रहता है।	वह निरंतर खेलता रहता है।
51. यह पठनीय लेख पढ़ने योग्य है।	यह लेख पढ़ने योग्य है।
52. पूज्नीय माता-पिता का आदर करो।	पूज्य माता-पिता का आदर करो।

53. इस भोजन में बहुत कड़वाहटता है।	इस भोजन में बहुत कड़वाहट है।
54. शिमला की सौन्दर्यता सबको प्रभावित करती है।	शिमला की सुन्दरता सबको प्रभावित करती है।
55, मनुष्य में इन्सानियतता होनी चाहिए।	मनुष्य में इन्सानियत होनी चाहिए।
56. वह बुरी तरह से घबरा गया।	वह बुरी तरह घबरा गया।
57. वह बेफज़ूल बोल रहा है।	वह फ़ज़ूल बोल रहा है।
58, दुष्टों के डर से डरो मत।	दुष्टों से डरो मत।
59. हमें वहाँ जाने से ज़रूर लाभ प्राप्त होगा।	हमें वहाँ जाने से ज़रूर लाभ होगा।
60. उसके पिता जी अफसर लगे हुए हैं ।	उसके पिता जी अफसर हैं।

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

1. वह बुधवार के दिन आएगा।	वह बुधवार को आएगा।
2. चारों अपराधियों का नाम बताओ।	चारों अपराधियों के नाम बताओ।
3. मेरे को दिल्ली जाना है।	मुझे दिल्ली जाना है।
4. उसका आँसू निकल आया।	उसके आँसू निकल आए।
5. मेले में बच्ची गुम हो गया।	मेले में बच्ची गुम हो गई।
6. रानी छत में खेल रही है।	रानी छत पर खेल रही है।
7. वह चले गए।	वे चले गए।
8. मैं गर्म गाय का दूध पीना चाहता हूँ।	मैं गाय का गर्म दूध पीना चाहता हूँ
9. मैंने उसका गाना और नृत्य देखा।	मैंने उसका गाना सुना और नृत्य देखा
10. बालक को थाली में रखकर खाना खिलाओ।	खाना थाली में रखकर बालक को खिलाओ।
11. क्रिकेट भारत की प्रिय खेल है।	भारत की प्रिय खेल क्रिकेट है।
12. मेरी कमीज़ नया है।	मेरी कमीज नई है।
13. मैं मेरे घर जा रहा हूँ।	मैं अपने घर जा रहा हूँ।
14. वह 'बेफजूल बोल रहा है।	वह फ़िज़ूल बोल रहा है।
15. क्या वह छत पर से गिर गया।	क्या वह छत से गिर गया?
16. उसने मेरे आगे हाथ जोड़ा।	उसने मेरे आगे हाथ जोड़े।
17. नेता जी पुनः फिर से चुन लिए गए है।	नेता जी पुनः चुन लिए गए हैं।
18. वह विलाप करके रोने लगी।	वह विलाप करने लगी।
19. अगले साल वह लुधियाना गया था।	पिछले साल वह लुधियाना गया था।
20. वह लौटकर वापिस आ गया।	वह वापस आ गया।

मुहावरे

1. अंगारों पर पैर रखना (जानबूझकर मुसीबत में पड़ना) अरे भाई, जो भी करो, सोच विचार कर करो । इस काम को करना अंगारों पर पैर रखना है।

2. अंगूठा दिखाना (साफ़ मना करना) जब मैंने उससे अपने रुपये माँगे तो उसने मुझे अंगूठा दिखा दिया।

3. अपना उल्लू सीधा करना (स्वार्थ/मतलब पूरा करना) हमारी पार्टी तभी तो विकास नहीं कर पा रही क्योंकि सभी अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं ।

4. अपनी खिचड़ी अलग पकाना (सबसे अलग रहना) सुमित्रा दफ़्तर में किसी से बात नहीं करती, वह अपनी खिचड़ी अलग पकाती है।

5. अक्ल पर पत्थर पड़ना (सोचविचार न करना) सोहन की अक्ल पर तो पत्थर पड़ गए हैं, उसे तो अपने भविष्य की कोई परवाह ही नहीं है।

6. आँखें चुराना (सामने न आना) जब से उसने मुझसे रुपये उधार लिए हैं, तब से वह मुझसे आँखें चुराता फिरता है।

7. आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना) चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग गया।

8. आस्तीन का साँप (कपटी मित्र) योगेश को हरमेश पर बहुत विश्वास था, लेकिन वहतो आस्तीन का साँप निकला।

9. इस कान सुनना उस कान उड़ा देना (किसी व्यक्ति की बात पर ध्यान न देना) वह बहुत ही लापरवाह है, इस कान सुनता है उस कान उड़ा देता है।

10. ईंट का जवाब पत्थर से देना (मुँहतोड़ जवाब देना/कठोर के साथ कठोरता का व्यवहार करना) हनुमान ने लंका में आग लगाकर रावण को ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

11. उड़ती चिड़िया पहचानना (अनुभवी होना, किसी बात को जान लेना) गुलाब राय को किसी बात में कम न समझना, वह तो उड़ती चिड़िया पहचान लेता है।

12. ऊपर की आमदनी (इधरउधर से फटकारी हुई नाजायज़ रकम/भ्रष्टाचार से कमाई रकम) ईमानदार और मेहनती व्यक्ति कभी भी ऊपरी आमदनी पर विश्वास नहीं करता।

13.एकएक रग जानना (भलीभांति परिचित होना) तुम हर बार उससे हार जाते हो क्योंकि वह तुम्हारी एकएक रग जानता है।

14. कच्चा चिट्ठा खोलना (गुप्त बात प्रकट करना) आजकल मीडिया भ्रष्ट लोगों का कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देती है।

15. कफ़न सिर पर बाँधना (मरने के लिए तैयार रहना) सैनिक हमेशा कफ़न सिर पर बाँधकर देश की रक्षा करते हैं।

16. कलेजे का टुकड़ा (बहुत प्रिय) सभी बच्चे अपने मातापिता के कलेजे का टुकड़ा होते हैं।

17. खाने के लाले पड़ना (बहुत गरीब होना) इस साल व्यापार में अत्यधिक हानि होने पर महेन्द्रपाल को खाने के लाले पड़ गए हैं।

18. खून पसीना एक करना (कठोर परिश्रम करना) मेरी बेटी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्तकरने के लिए खून पसीना एक कर रही है।

19. घर सिर पर उठाना (बहुत शोर करना) जब मम्मीपापा घर पर नहीं थे तो बच्चों ने घर सिर पर उठा लिया।

20. चिकना घड़ा (जिस पर कुछ भी असर न हो, निर्लज्ज व्यक्ति) वह तो चिकना घड़ा है, उसे कितना भी समझा लो फिर भी वह अपनी बुरी बातों से बाज़ नहीं आता।

21. चिकनी चुपड़ी बातें करना (चापलूसी करना) अफसर को कभी भी अपने कर्मचारियोंकी चिकनी चुपड़ी बातों में नहीं आना चाहिए।

22. छक्के छुड़ाना (बुरी तरह पराजित करना) क्रिकेट के मैच में भारतीय टीम ने पाकिस्तानी टीम के छक्के छुड़ा दिए।

23. ज़हर उगलना (ईर्ष्यापूर्ण बातें करना) हमें कभी भी किसी के प्रति ज़हर नहीं उगलना चाहिए।

24. जी भर आना (मन व्याकुल होना) रीना की दुःख भरी कहानी सुनकर मेरा जी भर आया।

25. टेढ़ी खीर (मुश्किल काम) फुटबॉल के मैच में इंग्लैंड टीम के लिए जर्मनी की टीम को हराना टेढ़ी खीर है।

26. ठोंकबजाकर देखना (अच्छी तरह जाँचना/परखना) उपभोक्ता की बुद्धिमानी इसी में है कि वह बाज़ार से जो भी वस्तु खरीदे उसे पहले अच्छी तरह ठोंकबजाकर देख ले ।

27. डींग हाँकना/मारना (बढ़चढ़कर बातें करना)हम उसकी बातों पर कैसे विश्वास करें, वह तो हमेशा डींग हाँकता रहता है।

28. ढेर करना (मार देना) भारतीय सैनिकों ने सीमा पर पाँच घुसपैठियों को ढेर कर दिया।

29. तलवार की धार पर चलना (बहुत ही कठिन काम करना) पंडित जी द्वारा बताई गई शिक्षाओं पर चलना तलवार की धार पर चलना है।

30. तिनके का सहारा (थोड़ा सा सहारा) डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत होता है।

31. थककर चूर होना (अत्यधिक थक जाना) मज़दूर सारा दिन मेहनत करके थककर चूर हो जाता है फिर भी उसे उसकी मेहनत का सही मूल्य नहीं मिलता ।

32. दिल्ली दूर होना (लक्ष्य की प्राप्ति में देरी होना) पाँच साल पहले इस कम्पनी में आया रवि मैनेजर बनने के सपने तो देख रहा है किन्तु उसके लिए अभी दिल्ली दूर है।

33. दौड़धूप करना (अत्यधिक प्रयास करना) जिंदगी में दौड़धूप से घबराने वाले को कभी सफलता नहीं मिलती।

34. दूध का धुला (बिल्कुल निष्पाप/निष्कलंक/निर्दोष) यह माना कि वह कसूरवार है किन्तु दूध के धुले तुम भी नहीं हो।

35. नाक रख लेना (इज्जत बचा लेना) लड़की की शादी में एक लाख रुपये की मदद करके तुमने मेरी नाक रख ली, मैं तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा।

36. पेट में चूहे दौड़ना (भूख लगना) स्कूल में आधी छुट्टी के समय सभी बच्चों के पेट में चूहे दौड़ने लगते हैं ।

37. पत्थर निचोड़ना (कंजूस से दान के लिए कहना या निर्दय से दया की प्रार्थना करना) वह इतना कंजूस है कि उससे दान की तनिक भी आशा करना पत्थर निचोड़ना है।

38. फूल झड़ना (मधुर बोलना) सीमा जब भी बोलती है तो ऐसा लगता है कि मुँह से फूल झड़ रहे हों ।

39. बाएँ हाथ का खेल (सरल कार्य) दो सौ मीटर की रेस में स्वर्ण पदक जीतना तो राकेश के लिए बाएँ हाथ का खेल है।

40. भगवान को प्यारा हो जाना (मर जाना) कल मेरे मित्र के पिता जी भगवान को प्यारा हो गये।

41. मामला रफ़ादफ़ा करना (मामला खत्म करना) सुकेश के खिलाफ कोर्ट में दहेज का मामला चल रहा था किंतु सरंपच ने दोनों पक्षों को समझा बुझा कर मामला रफ़ादफा करदिया।

42. मोती पिरोना (सुंदर लिखाई) मेधावी की लिखाई देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी ने मोती पिरो दिये हों ।

43. रंग उड़ना (घबरा जाना) जब अध्यापक ने विद्यार्थी को नकल करते हुए पकड़ लिया तो उसका रंग उड़ गया।

44.रुपया पानी में फेंकना (व्यर्थ खर्च करना) आजकल के इस दिखावे के युग में लोगशादियों में रुपया पानी में फेंकते हैं।

45. विपत्ति मोल लेना (जानबूझकर संकट में पड़ना) उस पहलवान से झगड़कर दिनेश ने विपत्ति मोल ले ली है।

46. शान में बट्टा लगना/फर्क आना (प्रतिष्ठा घटना) तुमने कसूर किया है इसलिए अपने बड़े भाई से माफी माँग लेने से तुम्हारी शान में बट्टा नहीं लगेगा।

47. सफेद झूठ (एकदम असत्य) हमें कभी भी किसी के प्रति सफेद झूठ नहीं बोलना चाहिए।

48. सिरआँखों पर बिठाना (बहुत सम्मान देना) जब हमारी टीम जीतकर आयी तो शह ने सभी खिलाड़ियों को सिरआँखों पर बिठा लिया।

49. सिर पर पाँव रखकर भागना (बहुत तेज़ी से भाग जाना) चारों तरफ से पुलिस से घिर जाने पर चोर सिर पर पाँव रखकर भाग निकला।

50. हरी झंडी दिखाना (स्वीकृति देना) मंत्री जी ने हमारे गाँव में हाई स्कूल खोलने की योजना को हरी झंडी दिखा दी ।

नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ समझकर वाक्य बनाइए (अभ्यास कार्य)

1. अपने पैरों पर खड़े होना (आत्मनिर्भर होना) दीपक के पिता बहुत खुश हैं क्योंकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया है।

2. आँच न आने देना (किसी तरह का नुकसान न होने देना) मनप्रीत ने अपनी दोस्त से मदद ली पर दोस्त पर आँच तक न आने दी ।

3. उन्नीसबीस का अंतर होना (बहुत कम अंतर होना) सुमन और दीपक की लंबाई में उन्नीसबीस से ज्यादा फर्क नहीं है।

4. कान में तेल डाल लेना (बात न सुनना) अध्यापक ने इतने अच्छे तरीके से पढ़ाया लेकिन तुम्हें कुछ भी समझ नहीं आया क्या तुम कान में तेल डालकर बैठे थे?

5. गले का हार (बहुत प्यारा) वही दोस्त जो कल तक गले का हार थे, बुरा वक़्त आने पर छोड़ कर चले गए।

6. चैन की बंसी बजाना (सुखपूर्वक रहना) बेटी की शादी के बाद सेवक आजकल अपने घर पर चैन की बंसी बजा रहे है।

7. तिल का ताड़ बनाना (छोटी सी बात को बढ़ाना) हरमन ने इतनी छोटी सी बात पर लित का ताड़ बना दिया और गाँव के लोगो को इकठ्ठा कर लिया ।

8. दाँतों में जीभ होना (चारों ओर विरोधियों से घिरे रहना) जब से महेद्र की लड़ाई कॉलेज के छठे हुए बदमाशों से हुई है तब जब भी वह कॉलेज आता है तो ऐसा लगता है कि उसके बत्तीस दाँतो में जीभ है।

9. पीठ दिखाना (हारकर भाग जाना) युद्ध में पीठ दिखाकर भागना कायरों की निशानी है ।

10. मुँह में पानी भर आना (ललचाना) मिठाई देखते ही हुसन के मुँह में पानी भर आया।

कुछ प्रचलित लोकोक्तियाँ (कक्षा - दसवीं पाठ्क्रम)

1. अपना लाल गंवाय के दरदर माँगे भीख (अपनी वस्तु लापरवाही से नष्ट करके दूसरों से माँगते फिरना) राम ने अपनी सारी दौलत तो जुए में गँवा दी और अब लोगों से उधार लेकर गुज़ारा करता है। किसी ने ठीक ही कहा है अपना लाल गंवाय के दरदर माँगे भीख।

2. अधूरा छोड़े सो पड़ा रहे (जो कार्य बीच में ही छोड़ दिया जाता है वह प्राय अधूरा रह जाता है) सुनो, तुम जो भी काम शुरू करते हो उसे बीच में ही छोड़कर किसी दूसरे काम में लग जाते हो। क्या तुम नहीं जानतेअधूरा छोड़े सो पड़ा रहे ।

3. अपना कोढ़ बढ़ता जाय, औरों को दवा बताये (जब कोई व्यक्ति दूसरों से जो कहे परंतु उसको स्वयं न करे या उसका स्वयं लाभ न उठाए) लाला जगतराम जी, तुम दूसरों को सुबहशाम सैर करने का उपदेश देते रहते हो किन्तु सैर न करने के कारण तुम्हारी स्वयं की तोंद तो बढ़ती ही जा रही है । इसे कहते हैं अपना कोढ़ बढ़ता जाय, औरों को दवा बताये।

4. आसमान से गिरा खजूर में अटका (एक संकट से छूटकर / बचकर दूसरे में फँस जाना) वह चोरी के मामले से छूटकर आया ही था कि हेराफेरी के मामले में फँस गया। इसे कहते हैं आसमान से गिरा खजूर में अटका।

5. आँखों देखी सच्ची, कानों सुनी झूठी (आँखों से देखी हुई बात सच होती है, कानों से सुनी हुई नहीं) केवल सुनी सुनाई बात के आधार पर मोहनचंद को चोर कहना ठीक नहीं है। क्या तुम नहीं जानते आँखों देखी सच्ची, कानों सुनी झूठी ?

6. ऊँट किस करवट बैठता है (नतीजा न जाने क्या हो) भारत और श्रीलंका के बीच क्रिकेट मैच के फाइनल मैच को जीतने में कड़ी होड़ लगी हुई है। देखें, ऊँट किस करवट बैठता है।

7. एक तंदुरुस्ती हज़ार नियामत (सेहत बहुत बड़ा धन है) माँ ने अपनी पुत्री को कहा, " पढ़ाई के साथसाथ अपनी सेहत का भी ध्यान रखो क्योंकि एक तंदुरुस्ती हज़ार नियामत होती है । "

8. ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर (कठिन काम करने का निश्चय करके बाधाओं से न घबराना) अरी बहन! जब नयी कोठी बनवानी शुरू कर ही दी है तो अब खर्चे से क्यों घबराती हो, ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर।

9. का वर्षा जब कृषि सुखाने (असमय की सहायता लाभदायक नहीं होती) अरे, चोर तो उसके घर से सब कुछ लूटकर भाग गये, अब पुलिस के आने से क्या फायदा। कहा भी है का वर्षा जब कृषि सुखाने ।

10. कथनी नहीं करनी चाहिए (जब कोई इंसान बातें तो बहुत करता है परन्तु करता कुछ भी नहीं) तुम हर बार बड़ीबड़ी बातें करके हमारी वोटों से कॉलेज के प्रधान बन जाते हो किंतु छात्रों की समस्याओं का कोई हल नहीं निकालते। याद रखो! हमें इस बार कथनी नहीं, करनी चाहिए।

11. कौआ कोयल को काली कहे (जब कोई व्यक्ति स्वयं दोषी होने पर भी दूसरे की बुराई करे तो उसके लिए व्यंग्य से ऐसा कहा जाता है) उस पर स्वयं तो भ्रष्टाचार के दोष तय हो चुके हैं किंतु वह दूसरों की सारा दिन बुराई करता रहता है, इसे कहते हैंकौआ कोयल को काली कहे ।

12. क्या जन्म भर का ठेका लिया है? (कोई भी इंसान किसी को जीवन भर सहायता नहीं दे सकता) सुनो, जब तुम बेरोज़गार थे तो उसने तुम्हें अपने घर पर आश्रय दिया था किंतु अब नौकरी मिल जाने पर तो तुम्हें अपना ठिकाना ढूँढ़ ही लेना चाहिए। उसने तुम्हारा क्या जन्म भर का ठेका लिया है?

13. काठ की हाँडी बारबार नहीं चढ़ती (कपटी व्यवहार सदैव नहीं किया जा सकता) पिछली बार तुम हमें धोखा देने में कामयाब हो गये थे किंतु इस बार हम पूरी तरह सत्तर्क हैं । जानते नहींकाठ की हाँडी बारबार नहीं चढ़ती।

14. कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर (समय/आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे की सहायता करना) एक दिन तुमने मेरी मदद की थी, आज मैं तुम्हारी मदद कर रहा हूँ। किसी ने ठीक ही कहा है कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर।

15. घर का भेदी लंका ढाए (आपसी वैर विरोध घर का नाश कर देता है) विभीषण ने श्रीरामचन्द्र से मिल कर रावण को मरवा कर लंका को नष्ट कराया था। सच है घर का भेदी लंका ढाए ।

16. जो गरजते हैं वे बरसते नहीं (शेखी मारने वाले व्यक्ति कुछ नहीं करते) रौनकलाल की धमकियों की तनिक भी चिंता न करना| क्या तुम नहीं जानते कि जो गरजते हैं वे बरसते नहीं ।

17. जोते हल तो होंवे फल (मेहनती व्यक्ति को ही फल की प्राप्ति होती है) सुखविन्द्र सिंह की बेटी ने साल भर कठिन परिश्रम किया, इसीलिए दसवीं की परीक्षा में पंजाब भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सच है, जोते हल तो होवें फल ।

18. जाके पैर न फटे बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई (जिसने स्वयं दुःख नहीं झेला, वह दुखियों का दुःख नहीं समझ सकता) अमीर लोग महँगाई भरी जिंदगी में ग़रीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की मुसीबतों को क्या समझेंगे । ठीक ही कहा हैजाके पैर न फटे बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई ।

19. तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौर (आय के अनुसार ही खर्च करना चाहिए) जब बेटे ने अपने पिता से कहा कि यदि हमें भी औरों की तरह थोड़ा कर्ज़ लेकर ठाटबाट का जीवन जीना चाहिए तब पिता जी ने उसे समझाते हुए कहा बेटा ! तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौर ।

20. तुम जानो तुम्हारा काम जाने (बारबार समझाने पर भी जब कोई न समझे और मनमानी करे तो उसे समझाना बेकार ही जाता है) देखो, तुम मेरे गाँव के रहने वाले हो इसीलिए तुम्हें इतनी बार समझाचुका हूँ कि छात्रावास के इन बुरे लड़कों की संगति छोड़ दो । यदि नहीं मानते तो तुम जानो तुम्हारा काम जाने ।

21. तू डालडाल मैं पातपात (विरोधी की चाल समझना/ अधिक चालाक होना) कुश्ती प्रतियोगिता में दिनेश कोई भी पैंतरा अपनाता तो गुरमीत उसे पहले ही भाँप कर उसे नाकाम कर देता और मन ही मन कहता कि तू डालडाल मैं पातपात।

22. नीम हकीम खतरा जान (अधूरा ज्ञान हानिकारक होता है) जब तुम्हें कार ठीक करनी नहीं आती तो इसका सारा इंजन खोलकर क्यूं बैठ गये हो, क्या तुम्हें नहीं पता, नीम हकीम खतरा जान ?

23. नेकी कर दरिया में डाल (किसी का उपकार करके उसे जताना नहीं चाहिए) भई, ठीक है तुमने गरीब गंगाराम की बेटी की शादी में उसे दो लाख रुपये देकर उसका भला किया किन्तु अब गाँव में सभी को बता क्यों रहे हो, क्या तुम नहीं जानते नेकी कर दरिया में डाल ।

24. नाम बड़े और दर्शन छोटे (प्रसिद्धि के अनुसार गुण न होना) तुमने तो कहा था कि संगीता बहुत मधुर गाती है किन्तु उसे गाते हुए सुनकर तो यही लगता है कि नाम बड़े और दर्शन छोटे।

25. सीधी उंगली से घी नहीं निकलता (निरी सिधाई से काम नहीं चलता) थानेदार ने चोर से कहा कि तुम प्यार से नहीं अपितु पिटाई से ही चोरी कबूल करोगे । किसी ने ठीक ही कहा है सीधी उंगली से घी नहीं निकलता।

नीचे दिए गए लोकोक्तियों के अर्थ समझकर वाक्य बनाइए (अभ्यास कार्य)

1.अपना वही जो आवे काम (मित्र वही है जो मुसीबत में काम आए) सरदार सिंह की बेटी की शादी में जब उसे कुछ रुपयों की ज़रूरत पड़ी तब रविसिंह ने उसे मुंहमांगी रकम तुरंत दे दी तो सरदार सिंह कह उठा अपना वही जो आवे काम।

2. आग लगाकर पानी को दौड़ना (झगड़ा कराने के बाद स्वयं ही सुलह कराने बैठना) पहले तो संदीप रमन से लड़ती रही फिर स्वयं ही उसे मनाने लगी तो रमन ने कहा तुम तो आग लगा कर पानी को दौड़ने का काम कर रही हो।

3. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे (अपराध करने वाला उल्टी धौंस जमाए) बलकार सिंह ने साइकिल से ठोकर मार कर वृद्ध को गिरा दिया और फिर उसे बुराभला कहने लगा, इसी को कहते हैं उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

4.ओस चाटे प्यास नहीं बुझती (अधिक आवश्यकता वाले को थोड़ेसे संतुष्टि नहीं होती) हाथी का पेट एक केले से नहीं भरता उसे तो कई दर्जन केले खाने के लिए देने होंगे क्योंकि उसकी ओस चाटे प्यास नहीं बुझती।

5. कोठी वाला रोए छप्पर वाला सोए (धनी प्रायः चिंतित रहते हैं और निर्धन निश्चिन्त रहते हैं) मनराज करोड़ों का मालिक है। उसे अपने धन की सुरक्षा की सदा चिंता बनी रहती है। जबकि सुखराज फक्कड़ है, इसलिए सदा खुश रहता है। इसलिए कहते हैं कि कोठी वाला रोये छप्पर वाला सोये।

6. बन्दर घुड़की, गीदड़ धमकी (झूठा रौब दिखाना) राजीव कुछ करताधरता नहीं है बेकार ही सब को बंदर घुड़की, गीदड़ धमकी देकर डराता रहता है।

7.बीति ताहि बिसारि दे, आगे की सुध लेय (पुरानी एवं दुःखपूर्ण बातों को भूलकर भविष्य के लिए सावधानी बरतनी चाहिए) दविंदर को व्यापार में बहुत घाटा हुआ तो सिर पकड़ कर बैठ गया तब सेवा सिंह ने उसे समझाया कि बीति ताहि बिसारि दे, आगे की सुध लेय तब सब ठीक हो जाएगा।

8. मन चंगा तो कठौती में गंगा (मन शुद्ध हो तो घर ही तीर्थ समान) अशुद्ध मन से तीर्थाटन करने से कोई लाभ नहीं होता, घर पर ही मानसिक शुद्धि हो जाए तो वही तीर्थाटन हो जाता क्योंकि मन चंगा तो कठौती में गंगा होती है।

9. सावन हरे न भादौं सूखे (सदा एक जैसी दशा रहना) रेशम सिंह गरीबी में पाईपाई के लिए मरता था, अब उसका व्यापार चमक उठा है तो भी वह पाई उत्तर पाई के लिए मर रहा है, उसकी तो सावन हरे न भदौं सूखे जैसी हालत है

10. हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊँ (सहायता प्रदान करने वाले को ही धमकाना) भोला की स्कूटर से टक्कर हो गई तो वह गिर पड़ा, सुजान ने उसे हाथ पकड़ कर उठाया तो वह उसी पर बरस पड़ा इसी को कहते हैं हमारी बिल्ली हमी से म्याऊँ।

(vii) में 'हिंदी पुस्तक- 10 में से निबन्ध एवं एकांकी के अभ्यासों में दिए भाग- 'क' विषय बोध के अन्तर्गत केवल भाग 'I' में दिए गए प्रश्नों में से चार प्रश्न (निबन्ध में से 2 तथा एकांकी में से 2) पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न: एक अंक का होगा। 4 x1=4

भाग- (ख)

1. प्रश्न: घर से बाहर निकल कर बाहरी संसार में विचरने पर युवाओं के सामने पहली कठिनाई क्या आती है?
   उत्तर: मित्र चुनने की।
2. प्रश्न: हमसे अधिक दृढ़ संकल्प वाले लोगों का साथ बुरा क्यों हो सकता है?
   उत्तर: क्योंकि उनकी हर बात हमें बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है ।
3. प्रश्न: आजकल लोग दूसरों में कौन-कौन सी दो- चार बातें देखकर उन्हें अपना मित्र बना लेते हैं?
   उत्तर: हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस ।
4. प्रश्न: किस प्रकार के मित्र से भारी रक्षा रहती है ?
   उत्तर: विश्वासपात्र मित्र से ।

5. प्रश्न: चिंताशील, निर्बल तथा धीर पुरुष किस प्रकार का साथ ढूँढ़ते हैं ?
   उत्तर: चिंताशील मनुष्य प्रफुल्लित व्यक्ति का, निर्बल मनुष्य बली का तथा धीर पुरुष उत्साही पुरुष का।
6. प्रश्न: उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए किसका मुँह ताकता था ?
   उत्तर: चाणक्य का मुँह।
7. प्रश्न: नीति विशारद अकबर मन बहलाने के लिए किसकी ओर देखता था ?
   उत्तर: बीरबल की ओर।
8. प्रश्न: मकदूनिया के बादशाह डेमेट्रियस के पिता को दरवाजे पर कौन सा ज्वर मिला था ?
   उत्तर: कुसंगति रूपी ज्वर।
9. प्रश्न: राज दरबार में जगह न मिलने पर इंग्लैंड का एक विद्वान अपने भाग्य को क्यों सराहता रहा ?
   उत्तर: उसे लगता था कि राजदरबारी बनकर वह बुरे लोगों की संगति में पड़ जाता और उसकी आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो पाती।
10. प्रश्न: हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय क्या है ?
    उत्तर: उपाय बुरी संगति से दूर रहना ।
11. प्रश्न: लेखक को अपनी पूर्णता का बोध कब हुआ ?
    उत्तर: जब लेखक ने सोचा कि उसकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उसके पास घर, पड़ोस, परिवार व समाज है और वह भी अनेक लोगों की ज़रूरतों को पूरा कर सकता है।
12. प्रश्न: मानसिक भूकम्प से क्या अभिप्राय है ?
    उत्तर: मानसिक विचारों और विश्वासों में हलचल उत्पन्न होना ।
13. प्रश्न: किस तेजस्वी पुरुष के अनुभव ने लेखक को हिला दिया?
    उत्तर: लाला लाजपत राय जी की विदेश यात्राओं के दौरान भारत की गुलामी के अनुभव ने लेखक को हिला दिया।
14. प्रश्न: मनुष्य के लिए संसार के सारे उपहारों और साधनों को व्यर्थ क्यों कहा गया ?
    उत्तर: मनुष्य के लिए संसार के सारे उपहार एवं साधन तब तक व्यर्थ है जब तक उसका देश गुलाम अथवा हीन है ।
15. प्रश्न: युद्ध में 'जय' बोलने वालों का क्या महत्व है?
    उत्तर: युद्ध क्षेत्र में 'जय' बोलने वाले लोग सैनिकों का साहस बढ़ाते हैं जिससे उनकी जीत होती है।
16. प्रश्न: दर्शकों की तालियाँ खिलाड़ियों पर क्या प्रभाव डालती हैं ?
    उत्तर: खिलाड़ियों के उत्साह को बढ़ाती हैं जिससे वे अच्छा प्रदर्शन करते हैं ।
17. प्रश्न: जापान के स्टेशन पर स्वामी रामतीर्थ क्या ढूँढ़ रहे थे?
    उत्तर: जापान के स्टेशन पर स्वामी रामतीर्थ खाने के लिए फल ढूँढ़ रहे थे।
18. प्रश्न: कमाल पाशा कौन थे ?
    उत्तर: तुर्की के राष्ट्रपति थे ।
19. प्रश्न: बूढ़े किसान ने कमाल पाशा को क्या उपहार दिया?
    उत्तर: मिट्टी की छोटी हाँडिया में पाव भर शहद ।
20. प्रश्न: किसान ने पंडित जवाहरलाल नेहरू को क्या उपहार दिया?
    उत्तर: रंगीन सुतलियों से बुनी हुई खाट ।
21. प्रश्न: लेखक के अनुसार हमारे देश को किन दो बातों की आवश्यकता है?
    उत्तर: शक्ति-बोध और सौंदर्य-बोध ।
22. प्रश्न: शल्य कौन था ?
    उत्तर: शल्य महाबली कर्ण का सारथी था ।
23. प्रश्न: राजेंद्र बाबू को लेखिका ने प्रथम बार कहाँ देखा था ?
    उत्तर: पटना के स्टेशन पर एक बेंच पर बैठे देखा था।

24. प्रश्न: राजेन्द्र बाबू अपने स्वभाव और रहन-सहन में किस का प्रतिनिधित्व करते थे ?

उत्तर: एक सामान्य भारतीय कृषक का प्रतिनिधित्व करते थे।

25. प्रश्न: राजेंद्र बाबू के निजी सचिव और सहचर कौन थे?

उत्तर: भाई चक्रधर जी थे।

26. प्रश्न: राजेंद्र बाबू ने किनकी शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए लेखिका से अनुरोध किया ?

उत्तर: अपनी पन्द्रह सोलह पौत्रियों की ।

27. प्रश्न: लेखिका प्रयाग से कौन सा उपहार लेकर राष्ट्रपति भवन पहुंची थी?

उत्तर: लेखिका प्रयाग से बारह सूपों का उपहार लेकर राष्ट्रपति भवन पहुंची थी।

28. प्रश्न: राष्ट्रपति को उपवास की समाप्ति पर क्या खाते देखकर लेखिका को हैरानी हुई ?

उत्तर: कुछ उबले हुए आलू खाते देखकर ।

29. प्रश्न: राजा ने राज्य में किस चीज के फैलने की बात दरबारियों से पूछी?

उत्तर: भ्रष्टाचार फैलने की बात दरबारियों से पूछी ।

30. प्रश्न: राजा ने भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम किसे सौंपा?

उत्तर: विशेषज्ञों को सौंपा।

31. प्रश्न: एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने किसे पेश किया?

उत्तर: एक साधु को पेश किया।

32. प्रश्न: साधु ने राजा को कौन सी वस्तु दिखाई ?

उत्तर: एक तावीज दिखाया ।

33. प्रश्न: साधु ने तावीज़ का प्रयोग किस पर किया ?

उत्तर: साधु ने तावीज़ का प्रयोग कुत्ते पर किया ।

34. प्रश्न: तावीज़ों को बनाने का ठेका किसे दिया गया?

उत्तर: साधु बाबा को दिया गया।

35. प्रश्न: राजा वेश बदलकर पहली बार कार्यालय कब गए थे?

उत्तर: दो तारीख को कार्यालय गये थे।

36. प्रश्न: लेखक कौसानी क्यों गये थे?

उत्तर: हिमालय पर जमी हुई बर्फ की शोभा को बहुत पास से देखने के लिए कौसानी गए थे।

37. प्रश्न: बस पर सवार लेखक में साथ साथ बहने वाली किस नदी का ज़िक्र किया है?

उत्तर: कोसी नदी का ज़िक्र किया है ।

38. प्रश्न: कौसानी कहाँ बसा हुआ है?

उत्तर : सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में ऊँची पर्वतमाला के शिखर पर।

39. प्रश्न: लेखक और उनके मित्रों की निराशा और थकावट किस के दर्शन से छूमंतर हो गई ?

उत्तर : हिम दर्शन से छूमंतर हो गई।

40. प्रश्न: लेखक और उनकी मित्र कहाँ ठहरे थे?

उत्तर: डाक बंगले में ठहरे थे ।

41. प्रश्न: दूसरे दिन घाटी से उतरकर लेखक और उनके मित्र कहाँ पहुंचे?

उत्तर: बैजनाथ ।

42. प्रश्न: बैजनाथ में कौन सी नदी बहती है ?

उत्तर: गोमती नदी ।

43. प्रश्न: गुरु नानक देव जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर: सन् 1469 ईसवी को कार्तिक पूर्णिमा के दिन तलवंडी गाँव में हुआ जो कि अब पाकिस्तान में है।

44. प्रश्न: गुरु नानक देव जी के माता और पिता का क्या नाम था?

उत्तर: माता का नाम तृप्ता देवी और पिता का नाम मेहता कालू था।

45. प्रश्न: गुरु नानक देव जी ने छोटी आयु में कौन-कौन सी भाषाओं का ज्ञान अर्जित कर लिया था ?

उत्तर: गुरु नानक देव जी ने छोटी सी आयु में ही पंजाबी, हिंदी, फारसी और संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लिया था ।

46. प्रश्न: गुरु नानक देव जी को किस व्यक्ति ने दुनियावी तौर पर जीविकोपार्जन संबंधी कार्यों में लगाने का प्रयास किया था ?

उत्तर: पिता श्री मेहता कालू जी ने ।

47. प्रश्न: गुरु नानक देव जी को दुनियादारी में बाँधने के लिए इनके पिताजी ने क्या किया?

उत्तर: उनके पिताजी ने इनकी शादी देवी सुलक्खनी से कर दी।

48. प्रश्न: गुरु नानक देव जी की कितनी संताने थीं और उनके क्या नाम थे ?

उत्तर: गुरु नानक देव जी के दो बेटे थे जिनका नाम था :- लखमीचंद और श्रीचंद।

49. प्रश्न: इस्लामी देशों की यात्रा के दौरान आपने किस धर्म की शिक्षा दी?

उत्तर: इस्लामी देशों की यात्रा के दौरान आपने सांझे धर्म की शिक्षा दी ।

50. प्रश्न: श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु नानक देव जी कुल कितने पद और श्लोक हैं?

उत्तर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु नानक देव जी के 974 पद और श्लोक हैं।

51. प्रश्न: श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मुख्य कितने राग हैं?

उत्तर :श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में मुख्य 31 राग हैं।

52. प्रश्न: गुरु नानक देव जी के जीवन के अंतिम वर्ष कहाँ बीते?

उत्तर: श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के अंतिम वर्ष करतारपुर में बीते।

53. प्रश्न: गुरु नानक देव जी के जन्म के संबंध में भाई गुरदास जी ने कौन सी तुक लिखी ?

उत्तर: भाई गुरदास जी ने गुरु नानक देव जी के जन्म के संबंध में लिखा था:- 'सुनी पुकार दातार प्रभु, गुरु नानक जगि माहिं पठाया'

54. प्रश्न: गुरु नानक देव जी पढ़ने के लिए किन- किन के पास गए थे?

उत्तर: गुरु नानक देव जी को पढ़ने के लिए पांडे के पास भेजा गया। मौलवी सैयद हुसैन तथा पंडित बृज नाथ जी से भी इन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी।

55. प्रश्न: दादा मूलराज के पुत्र की मृत्यु कैसे हुई थी?

उत्तर- दादा मूलराज के पुत्र की मृत्यु 1914 के महायुद्ध में सरकार की ओर से लड़ते-लड़ते हुई थी।

56. प्रश्न: 'सूखी डाली' एकांकी में घर में काम करने वाली नौकरानी का क्या नाम था?

उत्तर- पारो ।

57. प्रश्न: बेला का मायका किस शहर में था?

उत्तर- लाहौर शहर में ।

58. प्रश्न: दादा जी की पोती इंदु ने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की थी?

उत्तर - प्राइमरी तक ।

59. प्रश्न: 'सूखी डाली' एकांकी में दादा जी ने अपने कुटुंब की तुलना किससे की है?

उत्तर - एक बरगद के पेड़ से की है।

60. प्रश्न: बेला ने अपने कमरे का फर्नीचर बाहर क्यों निकाल दिया?

उत्तर- क्योंकि वह टूटा-फूटा था।

61. प्रश्न: दादाजी पुराने नौकरों के हक में क्यों थे?

उत्तर- क्योंकि वह उन्हें ईमानदार, कर्मनिष्ठ, मेहनतीऔर विश्वसनीय मानते थे।

62. प्रश्न: बेला ने मिश्रानी को काम से क्यों हटा दिया?

उत्तर- क्योंकि उसे घर का काम नहीं करना आता था।

63. एकांकी के अंत में बेला रूंधे कंठ से क्या कहती है?

उत्तर- वह कहती है कि आप परिवार रूपी इस पेड़ की किसी डाली का टूट जाना पसंद नहीं करते। पर क्या आप यह चाहेंगे की पेड़ से लगी कोई डाली सूख कर मुरझा जाए।

64. प्रश्न: सुमित्रा के पुत्र का नाम बताइए।

उत्तर: सुमित्रा के पुत्र का नाम जयदेव है।

65. प्रश्न: दो वाघा बॉर्डर पर सरकारी अफसरों के मारे जाने की ख़बर सुमित्रा कहाँ सुनती है ?

उत्तर: वाघा बॉर्डर पर सरकारी अफसरों के मारे जाने की खबर सुमित्रा माधवराम के घर रेडियो पर सुनती है।

66. प्रश्न: जयदेव वाघा बॉर्डर पर किस पद पर नियुक्त था ?

उत्तर: जयदेव वाघा बॉर्डर पर डी. एस.पी. के पद पर नियुक्त था।

67. प्रश्न: जय देव की पत्नी कौन थी ?

उत्तर: जय देव की पत्नी नीलम थी ।

68. प्रश्न: वाघा बॉर्डर पर मारे जाने वाले दो सरकारी अफसर कौन थे ?

उत्तर: वाघा बॉर्डर पर मारे जाने वाले सरकारी अफसरों में एक हेड कांस्टेबल और दूसरा सब इंस्पेक्टर था ।

69. प्रश्न: जयदेव ने तस्करों को मारकर उससे कितने लाख का सोना छीना ?

उत्तर: जयदेव ने तस्करों को मार कर उनसे पाँच लाख रुपये का सोना छीना ।

70. प्रश्न: जयदेव को स्वागत सभा में कितने रुपए इनाम में देने के लिए सोचा गया?

उत्तर: जयदेव को स्वागत सभा में दस हज़ार रुपये देने के लिए सोचा गया।

71. प्रश्न: मीना कौन थी?

उत्तर: मीना जयदेव की बहन थी।

72. प्रश्न: नीलम क्यों चाहती थी कि डी.सी. दोपहर के बाद जयदेव को मिलने आएँ ?

उत्तर: जयदेव अभी वापस लौटा था और वह बहुत थका हुआ था। इसलिए नीलम चाहती थी कि वह थोड़ा आराम कर ले।

73. प्रश्न: डी. सी. आकर सुमित्रा को क्या खुशखबरी देता है?

उत्तर: डी सी आकर सुमित्रा को खुशखबरी देते हैं कि जयदेव की वीरता और साहस के सम्मान में उसे सम्मानित किया जाएगा। गवर्नर साहब की तरफ से दस हज़ार रुपये की इनाम राशि भी दी जाएगी ।

74. प्रश्न: (जयदेव इनाम से मिलने वाली राशि के विषय में क्या घोषणा करवाना चाहता है ?

उत्तर: कि उसकी इनाम राशि शहीद हुए अफसरों की विधवाओं को आधी-आधी बाँट दी जाए ।

(पाठ्य पुस्तक में से अन्य प्रश्न:) **(18)**

प्रश्न:-2 में 'हिंदी पुस्तक 10' में से कहानी, निबन्ध एवं एकांकी के अभ्यासों में दिए भाग - 'क' विषय बोध के अन्तर्गत केवल भाग 'II' में दिए गए प्रश्नों में से पाँच प्रश्न: (प्रत्येक विधा में से एक प्रश्न: पूछना अनिवार्य) पूछे जाएँगे, जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। 3x2 =6

प्रश्न:-3 पाठ्य पुस्तक के 'गद्य भाग' (कहानी, निबन्ध एवं एकांकी) के निबन्धात्मक प्रश्नों (अभ्यासों में दिए भाग- 'क' विषय बोध के अन्तर्गत केवल भाग 'III' में दिए गए प्रश्न:) में से पाँच निबन्धात्मक प्रश्न: (प्रत्येक विधा में से एक प्रश्न: पूछना अनिवार्य) पूछे जाएँगे, जिनमें से तीन प्रश्नों का उत्तर लगभग छह-सात पंक्तियों में लिखने के लिये कहा जाएगा। 3x4=12

भाग: ख

पाठ 7 कहानी ममता

प्रश्न: 1. ब्राह्मण चूड़ामणि कैसे मारा गया ?

उत्तर- ब्राहमण चूड़ामणि रोहतास दुर्ग का मंत्री था। दुर्ग के अंदर बहुत सारी डोलियाँ प्रवेश कर रहीं थीं। मंत्री चूड़ामणि को उन पर शक हुआ। उसने डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। जिस पर पठानों ने इस बात को अपना अपमान समझा और तलवारें निकाल लीं। इस प्रकार उन पठानों से लड़ते हुए मंत्री चूड़ामणि मारा गया।

प्रश्न: 2. ममता ने झोपड़ी में आए व्यक्ति की सहायता किस प्रकार की ?

उत्तर- झोंपड़ी में आए व्यक्ति ने ममता से सहायता माँगी। पहले तो उसने मना किया पर बाद में अतिथि धर्म का पालन करते हुए ममता ने बिना किसी धर्म भेद के उस मुगल सिपाही को पहले पानी पिलाया और बाद में अपनी झोपड़ी में आश्रय दिया।

प्रश्न: 3. ममता ने अपनी झोपड़ी के द्वार पर आए अश्वारोही को बुलाकर क्या कहा ?

उत्तर- ममता ने कहा, “मैं नहीं जानती कि वह व्यक्ति शहंशाह था या साधारण मुगल। मैंने सुना था कि वह जाते हुए मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे गया था। मैं जीवन भर अपनी झोपड़ी के खोदे जाने से डरती रही, पर अब मुझे कोई चिंता नहीं। मैं अपने चिर विश्राम-गृह में जा रही हूँ। अब तुम यहाँ मकान बनाओ या महल, मेरे लिए इसका कोई महत्व नहीं।"

प्रश्न: 4. हुमायूँ द्वारा दिए गए आदेश का पालन कितने वर्षों बाद तथा किस रूप में हुआ ?

उत्तर- हुमायूँ द्वारा दिए गए आदेश का पालन 47 वर्षों बाद उसके पुत्र अकबर द्वारा किया गया। वहाँ पर एक अष्टकोण मंदिर का निर्माण करवाया गया। उस मंदिर पर शहंशाह हुमायूँ के नाम का शिलालेख लगवाया गया। लेकिन अफ़सोस की बात है की वहाँ ममता का कहीं नाम नहीं था।

प्रश्न: 5. मंदिर में लगाए शिलालेखा पर क्या लिखा गया ?

उत्तर- मंदिर में लगाए शिलालेख पर लिखा गया, "सातों देशों के नरेश हुमायूं ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुंबी मंदिर बनवाया।” लेकिन हुमायूं को आश्रय देने वाली ममता का वहाँ कहीं नाम न था।

पाठ 8 अशिक्षित का हृदय

प्रश्न: 1 मनोहर सिंह ने नीम के पेड़ को गिरवी क्यों रखा?

उत्तर: मनोहर सिंह ने एक बार कुछ भूमि ठाकुर शिवपाल सिंह से लगान पर लेकर खेती करवाई। वर्षा न होने के कारण सब चौपट हो गया। फसल न होने के कारण वह ठाकुर शिवपाल सिंह को लगान न पहुँचा पाया। लगान न मिलने के कारण ठाकुर शिवपाल सिंह ने मनोहर सिंह का नीम का पेड़ गिरवी रखने को कहा। इस तरह मजबूर होकर उसको अपना नीम का पेड़ गिरवी रखना पड़ा।

प्रश्न: 2 ठाकुर शिवपाल सिंह नीम के पेड़ पर अपना अधिकार क्यों जताते हैं?

उत्तर: मनोहर सिंह ने ठाकुर शिवपाल सिंह से खेती करने के लिए कुछ रकम उधार ली थी। फसल न होने की वजह से मनोहर सिंह उसका ऋण चुका नहीं पाया। शिवपाल सिंह ने कहा कि अगर तुम पैसे नहीं लौटाओगे तो तुम्हारा यह नीम का पेड़ तब तक मेरा हो जाएगा। इस तरह ठाकुर शिवपाल सिंह नीम के पेड़ पर अपना अधिकार जमा रहा था।

प्रश्न: 3 मनोहर सिंह ठाकुर शिवपाल सिंह से अपने नीम के वृक्ष के लिए क्या आश्वासन चाहता था?

उत्तर: मनोहर सिंह जब ठाकुर शिवपाल सिंह का कर्ज न चुका पाया तो उसने अपना नीम का पेड़ ठाकुर के पास गिरवी रख दिया और कहा कि जब तक वह कर्ज नही चुका पाता, तब तक पेड़ ठाकुर का रहेगा लेकिन वह यह आश्वासन चाहता था कि वह उस पेड़ को कटवाएँगे नहीं ।

प्रश्न: 4 नीम के वृक्ष के साथ मनोहर सिंह का इतना लगाव क्यों था ?

उत्तर: मनोहर सिंह का नीम के वृक्ष के साथ बहुत लगाव ता। इसका मुख्य कारण यह था कि यह पेड़ उनके पिता जी के हाथ का लगाया हुआ था। इसके साथ उसका बचपन बीता था। इस पेड़ के उसके परिवार पर बहुत उपकार थे। वह इस पेड़ को अपने पिता की यादगार मानता था। इसलिए उसका वृक्ष के साथ लगाव होना स्वाभाविक था।

प्रश्न: 5 मनोहर सिंह ने अपना पेड़ बचाने के लिए क्या उपाय किया ?

उत्तर: मनोहर सिंह ने अपना पेड़ बचाने की बहुत कोशिश की लेकिन उसकी हर कोशिश विफल रही। अंत में उसने निश्चय किया कि वह अपने जीते जी पेड़ को काटने नहीं देगा। जब ठाकुर शिवपाल सिंह के मजदूर पेड़ को काटने के लिए आए तो मनोहर सिंह ने तलवार निकाल ली और उन्हें डरा धमका कर वापस लौटा दिया। इस तरह से उसने अपना पेड़ बचाने की कोशिश की ।

प्रश्न: 6 मनोहर सिंह की किस बात से तेजासिंह प्रभावित हुआ?

उत्तर : मनोहर सिंह ठाकुर शिवपाल सिंह के कर्ज में दबा हुआ था। उसका नीम के पेड़ से बहुत लगाव था क्योंकि वह उसके पिता के हाथ का लगाया हुआ था। वह किसी भी हालत में उसे कटने नहीं देना चाहता था। वह पेड़ की रक्षा के लिए मर मिटने को तैयार था। जब मनोहर सिंह ने अपनी यह बातें तेजासिंह को सुनाई तो उसकी इन बातों से तेजा सिंह बहुत प्रभावित हुआ ।

प्रश्न: 7 तेजासिंह ने मनोहर सिंह की सहायता किस प्रकार की?

उत्तर: तेजा सिंह मनोहर सिंह की सहायता करने के लिए पहले पच्चीस रुपये लेकर आया । जब उसके पिता को पता चला तो उसने वे रुपए वापस ले लिए। उसके बाद तेजा सिंह ने अपनी नानी की दी हुई सोने की अंगूठी मनोहर सिंह को दी जिस पर उसके पिता का कोई हक नहीं था। इस प्रकार तेजा सिंह ने मनोहर सिंह की सहायता करने की कोशिश की।

प्रश्न: 1 मनोहर सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर: मनोहर सिंह 'अशिक्षित का हृदय' कहानी का मुख्य पात्र है। उसकी आयु 55 वर्ष के लगभग है। पहले वह फौज में नौकरी करता था। अब वह अकेला रहता है। उसका कोई सगा-संबंधी नहीं है। वह एक मेहनती व स्वाभिमानी व्यक्ति है। वह ठाकुर शिवपाल सिंह से कर्ज लेकर फसल उगाना चाहता था। लेकिन वर्षा न होने के कारण पैदावार नहीं हुई तथा वह ठाकुर का कर्ज नही चुका सका और अपना नीम का पेड गिरवी रख दिया। वह अत्यंत विनम्र हृदय वाला भावुक व्यक्ति है। उसको अपने पेड़ से बहुत लगाव है क्योंकि वह उसके पिता के हाथ का लगाया हुआ है। इसलिए जब ठाकुर पेड़ को कटवाना चाहता है तो उसे बहुत दु:ख होता है। वह किसी भी हालत में पेड़ को काटने देना नहीं चाहता तथा ठाकुर के जिद करने पर वह पेड़ के लिए मर मिटने को तैयार हो जाता है। तेजा सिंह पेड़ को बचाने में उसकी सहायता करता है तो वह उसे पेड़ का मालिक बनाने की घोषणा करता है। इस प्रकार वह एक सरल हृदय वाला अशिक्षित ग्रामीण व्यक्ति होते हुए भी अपनी महानता का परिचय देता है।

प्रश्न: 2 तेजा सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर: तेजा सिंह 'अशिक्षित का हृदय' कहानी का एक पात्र है। वह 15 -16 वर्ष का एक बालक है। उसके पिता गाँव के एक प्रतिष्ठित किसान हैं। वह प्रकृति से प्रेम करने वाला एक भावुक बालक है। जब उसे पता चलता है कि मनोहर सिंह के पेड़ को कटवाया जा रहा है तो वह अपनी अँगूठी दे कर उसके ऋण को चुकाने में उसकी सहायता करता है। उसके प्रकृति प्रेम तथा साहसी स्वभाव को देखकर मनोहर सिंह अंत में अपना पेड़ उसके नाम करने की घोषणा करता है। अतः तेजासिंह के चरित्र में अत्यंत मानवीय गुण मौजूद हैं।

प्रश्न:: 3 'अशिक्षित का हृदय' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: 'अशिक्षित का हृदय' कहानी एक उद्देश्यपूर्ण कहानी है। इस कहानी में लेखक ने एक अशिक्षित ग्रामीण व्यक्ति मनोहर के सरल हृदय का परिचय दिया है। मनोहर सिंह को अपने नीम के पेड़ से बहुत लगाव है क्योंकि वह उसके पिता के हाथ का लगाया हुआ है। कर्ज न उतार पाने के कारण उसे पेड़ ठाकुर के पास गिरवी रखना पडता है। जब ठाकुर पेड़ को काटने की बात करता है तो उसके सरल हृदय को बहुत ठेस पहुँचती है। वह पेड़ की रक्षा के लिए मर मिटने को भी तैयार हो जाता है। इस तरह हमें इस कहानी से प्रकृति की रक्षा का संदेश मिलता है।

पाठ 9 दो कलाकार (मन्नू भंडारी)

प्रश्न: 1. अरुणा के समाज सेवा के कार्यों के बारे में लिखें ।

उत्तर: वह छात्रावास में रहते हुए सदा समाज सेवा के कार्यों में जुटी रहती है। वह वहाँ रहकर चपरासियों, दाइयों आदि के बच्चों को मुफ्त पढ़ाती है। बाढ़ पीड़ितों की सेवा के लिए बहुत दिन छात्रावास से बाहर रहती है। फुलिया के बीमार बच्चे की सेवा में दिन रात एक कर देती है। भिखारिन के मरने के बाद वह उसके दोनों बच्चों का पालन पोषण करती है।

प्रश्न: 2. मरी हुई भिखारिन और उसके दोनों बच्चों को उसके सूखे शरीर से चिपक कर रोते देख चित्रा ने क्या किया?

उत्तर: चित्रा जब वापस लौट रही थी तो उसने देखा कि भिखारिन मर चुकी है और उसके दोनो बच्चे उसके सूखे शरीर से लिपट कर रो रहे हैं। चित्रा के संवेदनशील मन से रहा नहीं गया। उसके अंदर का कलाकार जाग उठा। वह वहीं रुक गई और उस दृश्य को उसने कागज पर उतार कर एक चित्र का रूप दे दिया ।

प्रश्न: 3. चित्रा की हॉस्टल से विदाई के समय अरुणा क्यों नहीं पहुँच सकी?

उत्तर: जब चित्रा ने आकर अरुणा को मरी हुई भिखारिन और उसके रोते हुए बच्चों के बारे में बताया तो अरुणा यह सुनकर स्वयं को रोक नहीं पाई और वह उसी समय उस भिखारिन के बच्चों के पास पहुँच गयी। उन बच्चों को संभालने में व्यस्त होने के कारण ही वह चित्रा की विदाई के समय वहाँ पर पहुँच नहीं पाई।

प्रश्न: 4 प्रदर्शनी में अरुणा के साथ कौन से बच्चे थे ?

उत्तर: प्रदर्शनी में अरुणा के साथ जो दो बच्चे थे, वे उस मरी हुई भिखारिन के वही बच्चे थे जो अपनी माँ के मरने के बाद बेसहारा रह गये थे। जिन बच्चों का चित्र बनाकर चित्रा ने प्रसिद्धि प्राप्त की थी उन्हीं बच्चों को अरुणा ने माँ की तरह पाल पोस कर बड़ा किया था। प्रदर्शनी में अरुणा के साथ वही दोनो बच्चे थे।

प्रश्न: 1 'दो कलाकार' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'दो कलाकार' मन्नू भंडारी द्वारा लिखित एक उद्देश्यपूर्ण कहानी है। इस कहानी में लेखक ने मानवीय गुणों को कला से बढ़कर माना है। कहानी में अरुणा और चित्रा दो सहेलियाँ हैं। चित्रा एक प्रसिद्ध चित्रकार है। वह अपने चित्रों से देश-विदेश में प्रसिद्धि पाती है। मरी हुई भिखारिन व उसके साथ चिपक कर रोते हुए बच्चों का चित्र बनाकर वह बहुत नाम कमाती है, लेकिन अरुणा उन्हीं बच्चों को पाल पोस कर बड़ा करती है और उन्हें माँ का प्यार देती है। इस कारण वह चित्रा से भी बड़ी कलाकार कहलाती है। अतः इस कहानी में लेखक का उद्देश्य यह बताना है कि कलाकार में मानवीय गुणों का होना अति आवश्यक है ।

प्रश्न: 2 'दो कलाकार' के आधार पर अरुणा का चरित्र चित्रण करें ।

उत्तर: अरुणा 'दो कलाकार' कहानी की एक मुख्य पात्रा है। वह एक सच्ची समाज सेविका है। वह मानवीय गुणों से भरपूर है। छात्रावास में रहते हुए गरीबों, चपरासियों आदि के बच्चों को वह निशुल्क पढ़ाती है। किसी के दुख को देखकर द्रवित हो उठती है। फुलिया दाई के बीमार बच्चे की सेवा करती है। बच्चे की मृत्यु के पश्चात बहुत दु:खी होती है। इसी कारण वह अपनी प्रिय सहेली चित्रा की विदाई के समय भी नहीं पहुँच पाती। जिस भिखारिन के चित्र को बनाकर उसकी सहेली चित्रा देश-विदेश में ख्याति पाती है, अरुणा उन्ही बच्चों का माँ बनकर पालन-पोषण करती है। इस तरह वह अपनी महानता का परिचय देती है। इस प्रकार अरुणा अपने मानवीय गुणों के कारण चित्रा से भी बड़ी कलाकार बन जाती है ।

प्रश्न: 3 चित्रा एक मंझी हुई चित्रकार है', आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर: 'चित्रा एक मंझी हुई चित्रकार है' हम इस कथन से पूर्णतया सहमत है। चित्रा को चित्रकला का बहुत शौक है। वह अपना अधिकतर समय चित्र बनाने में व्यतीत करती है। अत्यंत संवेदनशील होने के कारण वह अपने चित्रों में जान भर देती है। मरी हुई भिखारिन और उसके रोते हुए बच्चों का चित्र बनाकर वह देश- विदेश में प्रसिद्धि पाती है। उसकी कला संवेदनशीलता का उदाहरण है। इस तरह हम कह सकते हैं कि चित्रा एक मंझी हुई चित्रकार है ।

प्रश्न: 4 'दो कलाकार' कहानी के शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर: 'दो कलाकार' शीर्षक हमारे विचार में पूर्णतया सार्थक है। अरुणा और चित्रा दोनों सखियों को लेखिका ने दो कलाकार माना है। चित्रा अपनी चित्रकला के कारण एक कलाकार का दर्जा पाती है, वही अरुणा अपने मानवीय गुणों के कारण चित्रा से भी बड़ी कलाकार कहलाती है। जिस भिखारिन और उसके रोते हुए बच्चों का चित्र बनाकर चित्रा देश-विदेश में प्रसिद्धि पाती है, उन्हीं अनाथ बच्चों का पालन- पोषण कर अरुणा चित्र से भी बड़ी कलाकार कहलाती है। इस तरह इस कहानी का शीर्षक 'दो कलाकार' एक उपयुक्त शीर्षक है।

पाठ 10 नर्स (लेखक: कला प्रकाश)

प्रश्न: (1) सरस्वती की परेशानी का क्या कारण था?

उत्तर: सरस्वती का बेटा अस्पताल में दाखिल था। उसका ऑप्रेशन हुआ था। सरस्वती उससे मिलने अस्पताल आई थी। उसका बेटा उससे लिपट कर रो रहा था। सरस्वती का बेटा उसे वहाँ से जाने नहीं दे रहा था। बेटा सरस्वती की कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं था। बेटे का इस प्रकार रोना और तड़पना सरस्वती की परेशानी का कारण था।

प्रश्न: (2) सरस्वती ने नौ नंबर बैड वाले बच्चे से क्या मदद माँगी?

उत्तर: सरस्वती को नौ नंबर बैड वाला बच्चा ज्यादा समझदार और अकलमंद लग रहा था क्योंकि उसकी उम्र 10 वर्ष की थी। सरस्वती ने उसे पास बुला कर कहा कि वह महेश को अपनी बातों में लगाए। उसे कोई कहानी सुनाए ताकि वह वहाँ से बाहर जा सके। लड़के ने सरस्वती की बात मान ली और उसकी मदद को तैयार हो गया।

प्रश्न: (3) सिस्टर सूसान ने महेश को अपने बेटे के बारे में क्या बताया ?

उत्तर: जब सिस्टर सूसान ने महेश को रोते देखा तो उसने महेश को बताया कि उसका बेटा भी उसी की भांति रोता है। वह बहुत शैतान है। उसका नाम भी महेश है। वह अभी 3 महीने का है। उसने महेश को यह भी बताया कि आया जब उससे खेलती है यह

गाना गाती है तो वह खुशी से हाथ पैर ऊपर नीचे करने लगता है, जैसे नाच रहा हो। महेश के पूछने पर वह बताती है कि उसके बेटे को अभी बोलना नहीं आता। इसलिए वह अभी अंगू-अंगू..गूं,गूं ... बोलता है।

प्रश्न: (4) दूसरे दिन महेश ने माँ को घर जाने की इजाज़त खुशी-खुशी कैसे दे दी?

उत्तर: महेश ने अपनी माँ को घर जाने की इजाज़त खुशी-खुशी इसलिए दे दी थी क्योंकि सिस्टर सूसान के छोटे से बच्चे की बातें सुनकर उसने अपनी माँ के बारे में भी सोचा ।उसे अपनी छोटी बहन मोना के रोने की चिंता हुई। जिसे मम्मी पास वाले राजू के घर छोड़ कर आई थी ।वह नहीं चाहता था कि उसके रोने से माँ का कष्ट बड़े।

प्रश्न: (5) सरस्वती द्वारा सिस्टर सूसान को गुलदस्ता और उसके बबलू के लिए गिफ्ट पेश करने पर सिस्टर सूसान ने क्या कहा?

उत्तर: सरस्वती द्वारा सिस्टर सूसान को गुलदस्ता और उसके बबलू के लिए गिफ्ट देने पर सिस्टर सूसान ने रंग-बिरंगे फूलों वाला गुलदस्ता तो ले लिया पर उसने अपने बबलू के लिए गिफ्ट नहीं लिया। उसकी तो अभी शादी हुई थी और ना ही उसकी कोई संतान थी। उसने तो महेश को बहलाने के लिए झूठ ही कहा था कि उसका छोटा-सा बबलू है।

प्रश्न: 1. सिस्टर सूसान का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: सिस्टर सूसान कहानी की प्रमुख पात्र है। वह ममत्व से परिपूर्ण है उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित है:-

एक अच्छी नर्स:- सिस्टर सूसान एक अच्छी नर्स है। वह अपने काम को वह व्यवसाय न समझ कर मानव सेवा समझती है।

ममतामयी नारी:- सिस्टर सूसान एक ममतामयी नारी है। वह अस्पताल के बच्चों को एक माँ के समान प्यार करती है।

कर्तव्यनिष्ठ:- सिस्टर सूसान एक कर्तव्यनिष्ठ नारी है। वह अस्पताल में आते ही बिना समय गवाएं बच्चों को देखना शुरु कर देती है और उन्हें जरूरी दवा भी पिलाती है।

पीड़ा को समझने वाली:- वह अस्पताल में आए बच्चों की पीड़ा को समझ कर अपने आप को उसी के अनुसार ढाल लेती है। वह बच्चों के मनोविज्ञान को समझती है ।

सेवाभाव से युक्त:- सूसान सेवाभाव से युक्त नारी है । बच्चे उसकी सहानुभूति को पाकर खुश हो जाते हैं।

अंतः सही अर्थों में सिस्टर सूसान एक ईमानदार और अच्छी नर्स और सेवा भाव से युक्त तथा ममतामयी नारी है ।

प्रश्न: 2. नर्स कहानी का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: नर्स कहानी 'कला प्रकाश' जी द्वारा रचित है। यह एक सामाजिक कहानी है इस कहानी में कला प्रकाश जी ने सिस्टर सूसान, जो कि एक नर्स है, के माध्यम से यह बताया है कि रोगी को ठीक करने के लिए जितनी दवा की आवश्यकता है उतनी ही उसकी मनोवस्था को समझकर उसके अनुकूल व्यवहार करना भी है। लेखिका ने यह भी बताया है कि नर्स का सेवाभाव और अपनापन रोगी के लिए हितकारी हो सकता है। अतः कला प्रकाश जी का इस कहानी को व्यक्त करने का उद्देश्य यही रहा है कि नर्सिंग केवल एक व्यवसाय या पेशा नहीं है बल्कि मानव सेवा है। क्योंकि नर्स को रोगी की दशा के अनुकूल व्यवहार करना चाहिए। अंतः नर्स एक उद्देश्यपूर्ण और सामाजिक कहानी है।

पाठ 11 (i) माँ का कमरा

प्रश्न: (1) बेटे ने पत्र में अपनी माँ बसंती को क्या लिखा ?

उत्तर: बेटे ने अपनी माँ को पत्र में लिखा था कि उसकी तरक्की हो गई है। उसे उसकी कंपनी ने रहने के लिए बहुत बड़ी कोठी दे दी है। अब वह रहने के लिए उसके पास शहर में आ जाए उसे किसी तरह की कोई तकलीफ़ नहीं होगी।

प्रश्न: (2) पड़ोसन रेशमा ने बसंती को क्या समझाया ?

उत्तर: पड़ोसन रेशमा ने बसंती को समझाया कि उसे बेटे के पास रहने के लिए नहीं जाना चाहिए। शहर में रहने वाले बहू-बेटे बड़े बुज़ुर्गों को अपने पास रहने के लिए बुला तो लेते हैं पर उन्हें सम्मान से नहीं रखते हैं। उनसे नौकरों वाले काम करवाते हैं। उन्हें ठीक तरह से खाने पीने को भी नहीं देते।

प्रश्न: (3) बसंती क्या सोचकर बेटे के साथ शहर आई?

उत्तर: बसंती को अपने पुत्र पर भरोसा था। फिर भी पड़ोसन के डराने से वह मन ही मन भयभीत थी। अगले दिन जब बेटा उसे ले जाने के लिए स्वयं कार लेकर आ गया तो वह उसकी ज़िद के कारण शहर जाने के लिए तैयार हो गई। उसने सोच लिया था कि 'जो होगा देखा जावेगा'।

प्रश्न: (4) बसंती के कमरे में कौन कौन-सा सामान था?

उत्तर: बसंती के कमरे में डबल बैड बिछा हुआ था टी.वी. पड़ा था। एक टेपरिकॉर्डर भी था। दो कुर्सियाँ पड़ी थी। बैड पर बहुत नर्म गद्दे थे। उसे अपना कमरा स्वर्ग जैसा सुंदर लग रहा था ।

प्रश्न: (5) बसंती की आँखों में आँसू क्यों आ गई ?

उत्तर बसंती की आँखों में खुशी के आँसू थे। उसे ऐसी संपन्नता भरा जीवन अब तक कभी प्राप्त नहीं हुआ था। वह अपने पुश्तैनी घर में जैसे-तैसे अकेली जीवन काट रही थी। अब बेटे और उसके परिवार के साथ सुख पूर्वक रह सकेगी। उसका बुढ़ापा आराम से कट जाएगा। उसके पुत्र ने आज के कुछ स्वार्थी पुत्रों जैसा व्यवहार नहीं किया था। इसलिए उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे ।

प्रश्न: 6. माँ का कमरा कहानी का उद्देश्य क्या है?

उत्तर: माँ का कमरा कहानी 'श्याम सुंदर अग्रवाल' द्वारा रचित है। इसमें लेखक ने आज के स्वार्थ भरे जीवन में बच्चों का हाल बताया है। जो बड़े होकर अपने माता-पिता के साथ नौकरों जैसा व्यवहार करते हैं। परंतु लेखक ने इस कहानी में बताया है कि आज भी ऐसे अनेक पुत्र हैं जो अपने माता-पिता का ध्यान रखते हैं तथा वे सोचते हैं कि यह वहीं माता-पिता हैं जिन्होंने हमें पढ़ा-लिखा कर बड़ा किया तथा हमारा पालन-पोषण किया। लेखक ने बसंती और उसके पुत्र के माध्यम से यह बताया है और लेखक का इस कहानी को व्यक्त करने का उद्देश्य भी यही है कि आज भी समाज में ऐसे अनेक युवक हैं जो अपने माता-पिता का सम्मान करते हैं।

पाठ 11 (ii) अहसास (उषा.आर. शर्मा)

प्रश्न (1) दिवाकर बैंच पर बैठकर क्या सोच रहा था?

उत्तर: वह 2 साल पहले की घटना को याद कर उसी में खोया था। उसे याद आता है कि 2 साल पहले जब वह अपनी बड़ी मौसी के घर दिल्ली गया था, तब उसने वहाँ फन सिटी में कितना मज़ा किया। उस समय फन सिटी में कितना खेला-कूदा था। वहाँ उसने खूब मस्ती की थी। यही सब यादें उसके दिमाग में घूम रही थी।

प्रश्न (2) साँप को देखकर दिवाकर क्यों नहीं डरा?

उत्तर: शहर में आने से पहले दिवाकर गाँव के स्कूल में पढ़ता था। वहाँ उसने खेतों में कई बार साँप और अन्य जानवरों को देखा था। उसके लिए साँप को देखना कोई नई बात नहीं थी। इसके साथ-साथ वह एक साहसी,निडर और कर्मशील बालक था। इसलिए वह साँप को देखकर नहीं डरा।

प्रश्न (3) दिवाकर ने अचानक साँप को सामने देखकर क्या किया ?

उत्तर: दिवाकर ने जब साँप को देखा तब वह नहीं घबराया जबकि अन्य छात्र-छात्राएँ डर के मारे काँप रहे थे। किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था ।ऐसे में दिवाकर ने बड़े ही धीरज से काम लिया। उसने बिना डरे और घबराए निडरता से अपनी वैसाखी से साँप को उठाकर दूर फेंक दिया ।

प्रश्न (4) दिवाकर को क्यों पुरस्कृत किया गया ?

उत्तर: दिवाकर को उसकी समझदारी और निडरता के कारण पुरस्कृत किया गया। शैक्षिक भ्रमण के समय जब अचानक से साँप छात्र-छात्राओं के सामने आ गया । तब सभी बच्चे डर गए परंतु दिवाकर ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए अपने विवेक और वैसाखी का सहारा लेकर साँप को दूर फेंक दिया था। उसकी इसी बहादुरी के कारण उसे प्रातः कालीन सभा में प्राचार्य महोदय द्वारा पुरस्कृत किया गया।

प्रश्न (5) लघु कथा 'अहसास' का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर: 'अहसास' कहानी ऊषा•आर• शर्मा द्वारा रचित है। मानवतावाद का समर्थन करना उस का प्रमुख उद्देश्य है। अहसास कहानी शारीरिक चुनौतियों का सामना करने वाले बच्चों में आत्मविश्वास जगाने वाली एक प्रेरणादायक लघु कथा है। लेखिका का इस कहानी को व्यक्त करने का उद्देश्य ही यही रहा है कि शारीरिक चुनौतियों का सामना करने वाले बच्चों में आत्मविश्वास को जगाना और अपने आप को किसी से कम न समझ कर उनका हौंसला बढ़ाना।

प्रश्न (6) अहसास नामकरण की सार्थकता स्पष्ट करो।

उत्तर: इस कहानी में उषा• आर• शर्मा जी ने यह बताना चाहा है कि हमें उन बच्चों को उनकी योग्यता का अहसास करवाना चाहिए जो शारीरिक चुनौतियों से जूझ रहे हैं। कहानी में दिवाकर जो अपनी टाँग खो चुका था, अपने आप में अधूरेपन का अहसास करता

था। जब प्रधानाचार्य द्वारा उसे इस बहादुरी और निडरता के लिए सम्मानित किया गया उसे अपने आप में पूर्णता का अहसास हुआ। अंत इस कहानी का शीर्षक बिल्कुल उपयुक्त एवं सार्थक है। लघु कथा शीर्षक अहसास से ही जुड़ी है।

पाठ 12 मित्रता (लेखक: आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

प्रश्न 1 विश्वासपात्र मित्र को खजाना, औषधि और माता जैसा क्यों कहा गया है ?

उत्तर: लेखक ने विश्वासपात्र मित्र को खजाना, औषधि और माता जैसा कहा है। जैसे खजाना मिलने से सभी प्रकार की कमियां दूर हो जाती हैं इसी तरह विश्वासपात्र मित्र मिलने से भी सभी कमियाँ दूर हो जाती हैं। औषधि की तरह वह हमारी बुराइयों रूपी बीमारियों को ठीक कर देता है, इसलिए उसे औषधि कहा है। विश्वासपात्र मित्र में माता के समान धैर्य और कोमलता होती है, इसलिए उसे माता कहा गया है ।

प्रश्न 2 अपने से अधिक आत्मबल रखने वाले व्यक्ति को मित्र बनाने से क्या लाभ है ?

उत्तर: अपने से अधिक आत्मबल रखने वाले व्यक्ति को मित्र बनाने से बहुत लाभ हैं। ऐसा मित्र हमारे मनोबल को बढ़ाता है। उसकी प्रेरणा से हम अपनी शक्ति से अधिक काम कर लेते हैं । जिस प्रकार सुग्रीव ने राम से प्रेरणा पाकर अपने से अधिक बलवान बाली से युद्ध किया था। ऐसे मित्रों के होने से हम कठिन से कठिन काम को भी आसानी से कर लेते हैं ।

प्रश्न 3 लेखक ने युवाओं के लिए कुसंगति और सतसंगति की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर: लेखक ने सत्संगति की तुलना सहारा देने वाली बाजु से की है जो हमें निरंतर उन्नति की ओर ले कर जाती है। इसके विपरीत कुसंगति की तुलना पैर में बंधी हुई चक्की से की है जो कि हमें निरंतर अवनति के गड्ढे में गिराती जाती है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1 सच्चे मित्र के कौन-कौन से गुण लेखक ने बताए हैं ?

उत्तर: लेखक के अनुसार सच्चे मित्र में बहुत से गुण होते हैं। उसमें उत्तम वैद्य सी निपुणता, माता के समान धैर्य होता है। वह हमारे लिए खजाने के सामान होता है। सच्चा मित्र हमारा मार्गदर्शक होता है। वह हमारी रक्षा करता है। उस पर हम अपने भाई के समान विश्वास कर सकते हैं। वह हमारे संकल्पों को दृढ़ करता है और हर प्रकार से हमारी सहायता करता है।

प्रश्न 2 बाल्यावस्था और युवावस्था की मित्रता के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: बाल्यावस्था की मित्रता में एक मग्न कर देने वाला आनंद होता है। उसमें ईर्ष्या का भाव भी होता है। मधुरता, प्रेम और विश्वास भी बचपन की मित्रता में होते हैं। जल्दी ही रूठना और मनाना भी होता है। युवावस्था की मित्रता बाल्यावस्था की मित्रता की अपेक्षा अधिक दृढ़, शांत और गंभीर होती है। युवावस्था का मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होता है।

प्रश्न 3 दो भिन्न प्रकृति के लोगों में परस्पर प्रीति और मित्रता बनी रहती है। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर: दो भिन्न प्रकृति के लोगों में भी परस्पर प्रीति और मित्रता बनी रह सकती है। जैसे मुगल सम्राट अकबर और बीरबल दोनों अलग-अलग स्वभाव के होते हुए भी मित्र थे। अकबर नीति विशारद व विद्वान थे जबकि बीरबल एक मज़ाकिया स्वभाव वाले व्यक्ति थे। इसी प्रकार राम धीर और शांत स्वभाव के थे और लक्ष्मण उग्र स्वभाव के थे, लेकिन दोनों भाइयों में परस्पर प्रीति थी। इस प्रकार लेखक ने इन उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया है कि दो भिन्न प्रकृति वाले लोगों में परस्पर मित्रता हो सकती है ।

प्रश्न 4 मित्र का चुनाव करते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर मित्र का चुनाव करते समय हमें बहुत सी बातें ध्यान में रखनी चाहिए। उसके गुणों तथा स्वभाव को देखना चाहिए। केवल हंसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, चतुराई आदि देख कर किसी को मित्र नहीं बना लेना चाहिए। मित्र जीवन के कठिन समय में सहायता देने वाला होना चाहिए। उसमें माता के समान धैर्य तथा वैद्य के समान निपुणता होनी चाहिए। वह सच्चे पथ प्रदर्शक के समान होना चाहिए।

प्रश्न 5 "बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है।" क्या आप लेखक की इस उक्ति से सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लेखक का यह कथन पूर्णतया उचित है कि बुराई हमारे मन में अटल भाव धारण करके बैठ जाती है, जबकि अच्छी और गंभीर बातें हमें जल्दी समझ में नहीं आती। जैसे भद्दे और फूहड़ गीत, बचपन की सुनी गंदी गालियाँ हमें कभी नहीं भूलती। इसी तरह सिगरेट, शराब आदि की लत भी आसानी से नहीं छूटती। अन्य बुरी बातें भी हमारे मन में सहज ही प्रवेश कर जाती है तथा वह जल्दी दूर नहीं होती। अतः लेखक का यह कथन पूरी तरह ठीक है कि बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है ।

मैं और मेरा देश

प्रश्न 1 लाला लाजपत राय के किस अनुभव ने लेखक की पूर्णता को अपूर्णता में बदल दिया ?

उत्तर: लेखक स्वयं को एक पूर्ण व्यक्ति समझता था। लाला लाजपत राय जी ने लेखक को बताया कि उनकी विदेशी यात्राओं के दौरान भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक उनके माथे पर लगा रहा। लाला लाजपत राय के इस अनुभव ने लेखक की पूर्णता को अपूर्णता में बदल दिया।

प्रश्न 2 स्वामी रामतीर्थ द्वारा फलों की टोकरी का मूल्य पूछने पर जापानी युवक ने क्या कहा?

उत्तर: स्वामी रामतीर्थ द्वारा फलों की टोकरी का मूल्य पूछने पर जापानी युवक ने कहा कि इन फलों का कोई मूल्य नही है। अगर आप इसका मूल्य देना ही चाहते हो तो अपने देश में जाकर किसी से यह मत कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते। वास्तव मे उस व्यक्ति ने स्वामी जी को ऐसा कहते हुए सुन लिया था। और वह नहीं चाहता था कि उसके देश की बदनामी हो

प्रश्न 3 किसी देश के विद्यार्थी ने जापान में ऐसा कौन सा काम किया जिससे उसके देश के माथे पर कलंक का टीका लग गया?

उत्तर: किसी देश के विद्यार्थी ने जापान के पुस्तकालय से पुस्तक पढ़ने के लिए ली। उसने उस पुस्तक में से कुछ दुर्लभ चित्र फाड़कर रख लिए और पुस्तक वापस कर दी। उसकी इस हरकत के फलस्वरूप उसे जापान से निकाल दिया गया और साथ ही पुस्तकालय के नोटिस-बोर्ड पर यह लिखवा दिया गया कि उसके देश का कोई भी विद्यार्थी इस पुस्तकालय में प्रवेश नहीं कर सकता। इस प्रकार उस एक युवक ने अपने देश के माथे पर कलंक लगा दिया।

प्रश्न 4 लेखक के अनुसार कोई भी कार्य महान कैसे बन जाता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता। अगर कार्य करने के पीछे शुभ भावना होती है तो कोई छोटे से छोटा कार्य भी महान बन जाता है। इसके विपरीत बुरी भावना के साथ किया गया बड़े से बड़ा कार्य भी हीन बन जाता है।

प्रश्न 5 शल्य ने कौन सा महत्वपूर्ण कार्य किया?

उत्तर: महाभारत के युद्ध के दौरान शल्य कर्ण का सारथी था। लेकिन वह वास्तव में अर्जुन के पक्ष में था। कर्ण जब कभी अपनी वीरता व जीत पर प्रसन्न होता तो शल्य अर्जुन की प्रशंसा करने लगता। इस तरह से कर्ण के मन में आत्मविश्वास की कमी आ गयी जो उसके भावी पराजय की नींव रखने में सफल हुई।

प्रश्न 6 शक्ति-बोध और सौंदर्य-बोध से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर: शक्ति बोध का अर्थ है देश को शक्तिशाली बनाना और सौंदर्य बोध से तात्पर्य है देश को सुंदर बनाना। हमारे देश को इन दो बातों की बहुत आवश्यकता है। इसके लिए हमारा कोई भी काम ऐसा न हो जो देश में कमज़ोरी व कुरुचि की भावना को बल दे।

प्रश्न 7 हम अपने देश के शक्ति बोध को किस प्रकार चोट पहुंचाते हैं ?

उत्तर: जब हम सार्वजनिक स्थानों जैसे रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, क्लब आदि में अपने देश की कमजोरियों व कमियों का वर्णन करते हैं और दूसरे देश की तुलना में अपने देश को हीन कहते हैं और दूसरे देश को श्रेष्ठ कहते हैं, तब हम देश के शक्ति बोध को चोट पहुंचा रहे होते हैं।

प्रश्न 8 हम अपने देश के सौंदर्य बोध को किस प्रकार चोट पहुंचाते हैं ?

उत्तर: जब हम सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाते हैं, सड़कों पर कूड़ा कर्कट फेंकते हैं, घर, दफ्तर, गली गंदा रखते हैं, कहीं पर समय से लेट पहुँचते हैं, इधर की बात उधर करते हैं; उस समय हम अपने देश के सौंदर्य बोध को चोट पहुँचाते हैं।

प्रश्न 9 देश की उच्चता और हीनता की कसौटी क्या है?

उत्तर: देश की उच्चता और हीनता की कसौटी उस देश में होने वाले चुनाव हैं। जिस देश के नागरिक चुनाव के समय बुद्धिमता और विवेक से सही व्यक्ति को मतदान करते हैं, वह देश उच्च होता है। इसके विपरीत जिस देश के नागरिक किसी लालच के वश में आकर गलत व्यक्ति को मतदान करते हैं, वह देश हीन होता है। अतः चुनाव ही देश की उच्चता और हीनता की कसौटी है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए ।

प्रश्न 1 लाला लाजपत राय जी ने देश के लिए कौन सा महत्वपूर्ण कार्य किया ? निबंध के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर: लाला लाजपत राय जी एक सच्चे देशभक्त थे। उन्होंने बहुत देशों की यात्राएं की। अपने विदेशी यात्राओं के दौरान भारत की गुलामी की लज्जा के कलंक को अनुभव किया। उन्होने देश की गुलामी पर बहुत से लेख व निबंध लिखे। अपने जोशीले भाषणों के

द्वारा देश के लोगों में जोश की भावना और उत्साह पैदा किया और उन्हें देश की स्वतंत्रता के लिए आगे आने के लिए प्रेरित किया। इस तरह उन्होंने देश की आजादी के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये।

प्रश्न 2 तुर्की के राष्ट्रपति कमाल पाशा और भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से संबंधित घटनाओं द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहता है ?

उत्तर: तुर्की के राष्ट्रपति कमालपाशा ने एक साधारण व्यक्ति के द्वारा लाई गई शहद की हांडी को प्रेम पूर्वक स्वीकार किया। इसी तरह पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक साधारण किसान द्वारा उपहार में दी गई रंगीन सुतलियों की खाट को बहुत महत्व दिया। उनके द्वारा लाए गये यह दोनों उपहार बहुत कीमती नहीं थे, बल्कि उनकी स्नेह और प्रेम की भावना ने उपहारों को अनमोल बना दिया। अतः इन घटनाओं के द्वारा लेखक यह बताना चाहता है कि कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता। कार्यों की महानता उस कार्य की पीछे छिपी हुई भावना में निहित होती है।

प्रश्न 3 लेखक ने देश के नागरिकों को चुनाव में किन बातों की ओर ध्यान देने के लिए कहा है ?

उत्तर: लेखक ने देश के नागरिकों को चुनाव में बहुत सी महत्वपूर्ण बातों की ओर ध्यान देने के लिए कहा है। देश के प्रत्येक नागरिक को अपने मत का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। उसे चुनाव में सूझबूझ से मतदान करना चाहिए। अपने बुद्धि व विवेक के अनुसार अच्छे गुणों वाले व्यक्ति को मत देना चाहिए। किसी भी लालच या लोभ के वश में आकर गलत व्यक्ति को मतदान नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से उन्हें बाद में पछताना पड़ सकता है। मतदान करते समय इन बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

पाठ 14 निबंध: राजेंद्र बाबू (लेखिका: महादेवी वर्मा)

प्रश्न 1 राजेंद्र बाबू को देखकर हर किसी को यह क्यों लगता था कि उन्हें पहले कहीं देखा है?

उत्तर: राजेंद्र बाबू का चेहरा और शरीर का गठन एक सामान्य भारतीय कृषक की तरह था। उनकी वेशभूषा भी सामान्य नागरिकों जैसी थी। उनका स्वभाव और रहन-सहन भी सामान्य था। वह देखने में सामान्य व्यक्ति जैसे ही लगते थे। इसलिए सभी को लगता था कि उन्हें पहले कहीं देखा है।

प्रश्न 2 जवाहरलाल नेहरू की अस्त व्यस्तता तथा राजेंद्र बाबू की सारी व्यवस्था किसका पर्याय थी?

उत्तर: पंडित जवाहरलाल नेहरू की अस्तव्यस्तता में भी व्यवस्था होती थी जबकि राजेंद्र बाबू की व्यवस्था में भी अस्त-व्यस्तता रहती थी। इसलिए यह दोनों एक-दूसरे का पर्याय थी अर्थात राजेन्द्र बाबू की व्यवस्था पंडित नेहरू जी की अस्तव्यस्तता तथा नेहरू जी की अस्तव्यस्तता राजेन्द्र बाबू की व्यवस्था का पर्याय थी।

प्रश्न 3 राजेंद्र बाबू की वेशभूषा तथा अस्त व्यस्तता से उनके निजी सचिव और सहचर चक्रधर बाबू का स्मरण लेखिका को क्यों हो आया?

उत्तर: राजेंद्र बाबू की वेशभूषा देखकर लेखिका को उनके निजी सचिव और सहचर चक्रधर बाबू का स्मरण हो आया था क्योंकि चक्रधर बाबू का रहन सहन भी राजेंद्र बाबू के सामान अस्त-व्यस्त था। चक्रधर बाबू तब तक मौजे नहीं बदलते थे जब तक उनके मौजों से पांचों उंगलियां बाहर नहीं निकलने लगती थी। जूतों के तलवों में सुराख होने तक वे जूते भी नही बदलते थे। वे अपने वस्त्र भी बिल्कुल जीर्ण शीर्ण होने तक नहीं बदलते थे। वे राजेंद्र बाबू के पुराने वस्त्रों को पहनकर ही वर्षों उनकी सेवा करते रहे। इसलिए लेखिका को राजेंद्र बाबू की वेशभूषा देखकर चक्रधर बाबू की याद हो आई ।

प्रश्न 4 लेखिका ने राजेंद्र बाबू की पत्नी को सच्चे अर्थों में धरती की पुत्री क्यों कहा है ?

उत्तर: राजेंद्र बाबू की पत्नी अत्यन्त सरल, क्षमाशील , ममतामयी, दयालु व त्यागमयी स्त्री थी । जमींदार परिवार की वधू होकर भी उन्हे अहंकार नहीं था। वह अत्यंत विनम्र स्वभाव की थी । धरती जैसे इन गुणों के कारण लेखिका ने उन्हें धरती की पुत्री कहा है।

प्रश्न 5 राजेंद्र बाबू की पौत्रियों का छात्रावास में रहन सहन कैसा था ?

उत्तर राजेंद्र बाबू की पौत्रियाँ छात्रावास में बहुत सादगी और संयम से रहती थी। वे सभी खादी के कपड़े पहनती थी। अपने कपड़े धोने व झाड़ू पोंछा करने का काम भी वे स्वयं ही करती थी। वे अपने गुरुजनों की सेवा भी करती थीं। उन्हें जरूरी सामान के लिए सीमित राशि ही दी जाती थी। इस तरह उनका रहन सहन अत्यन्त साधारण था।

प्रश्न 6 राष्ट्रपति भवन में रहते हुए भी राजेंद्र बाबू और उनकी पत्नी में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ। उदाहरण देकर स्पष्ट करें ।

उत्तर: राष्ट्रपति भवन में रहते हुए भी राजेंद्र बाबू और उसकी पत्नी में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ था। उनकी वेशभूषा तथा रहन सहन अत्यंत साधारण था। उनकी पत्नी स्वयं भोजन बनाती थी। अपने पति, परिवार तथा परिजनों को खिलाने के बाद ही स्वयं अन्न ग्रहण करती थी। वे उपवास की समाप्ति भी मिठाई आदि से नही बल्कि उबले हुए आलू खाकर ही करते थे। उनका रहन सहन सामान्य व्यक्ति की तरह था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह - सात पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1 राजेंद्र बाबू की शारीरिक बनावट, वेशभूषा और स्वभाव का वर्णन करें।

उत्तर: राजेंद्र बाबू का शरीर तथा हाथ- पैर लंबे थे। बाल काले ,घने , छोटे-छोटे और कटे हुए थे । चौड़ा मुख, चौड़ा माथा, घनी भौहें, बड़ी-बड़ी आंखें , कुछ भारी नाक, कुछ मोटे और सुडौल होंठ, गेंहुआं रंग और बड़ी-बड़ी मूछें थी। वे खादी की मोटी धोती - कुर्ता , काला बंद गले का कोट, गांधी टोपी साधारण मौजे और जूते पहनते थे। उनका स्वभाव अत्यंत शांत था। वह सदा सादगी पसंद करते थे। अपने स्वभाव तथा रहन-सहन में में भारतीय किसान के समान थे। उनका खानपान भी अत्यंत साधारण था।

प्रश्न 2 पाठ के आधार पर राजेंद्र बाबू की पत्नी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन करें ।

उत्तर: राजेंद्र बाबू की पत्नी एक सच्ची भारतीय नारी थी। वह धरती के समान सहनशील क्षमामयी, ममतामयी, दयालु एवं सरल थी । बिहार के जमीदार परिवार की वधु तथा स्वतंत्रता संग्राम के सुप्रसिद्ध सेनानी एवं भारत के प्रथम राष्ट्रपति की पत्नी होने का भी उन्हें अहंकार नहीं था। राष्ट्रपति भवन में भी स्वयं भोजन पकाती थी तथा पति और परिवार जनों को खिलाकर ही स्वयं अन्य ग्रहण करती थी। उनका खानपान और रहन-सहन बहुत साधारण था। उनका स्वभाव धरती मां के समान था।

प्रश्न 3 आशय स्पष्ट कीजिए :-

(क) सत्य में जैसे कुछ घटाना या जोड़ना संभव नहीं रहता वैसे ही सच्चे व्यक्तित्व में भी कुछ जोड़ना घटाना संभव नहीं है।

उत्तर: इन पंक्तियों का भाव यह है कि सत्य हमेशा सत्य ही रहता है। उसमें से कुछ भी घटाया या बढ़ाया नहीं जा सकता । इसी प्रकार एक सच्चे व्यक्ति में भी कुछ भी घटाना या बढ़ाना संभव नहीं है क्योंकि सच्चा व्यक्ति भी सत्य के समान सदैव एक ही रूप में नजर आता है ।

(ख) क्या वह सांचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन कोमल चरित्र ढलते थे।

उत्तर: इन पंक्तियों का भाव यह है कि राजेंद्र बाबू जैसे व्यक्ति आजकल देखने को नहीं मिलते। शायद ईश्वर से ऐसा सांचा टूट गया है जिन में राजेंद्र बाबू जैसे कोमल चरित्र वाले व्यक्तियों का निर्माण होता था। अर्थात आजकल भगवान ने राजेन्द्र बाबू जैसे लोगों का निर्माण करना बंद कर दिया है। आजकल के लोगों में उन जैसे व्यक्तित्व तथा गुणों का अभाव है ।

पाठ 15 सदाचार का तावीज (लेखक हरिशंकर परसाई)

प्रश्न 1 दरबारियों ने भ्रष्टाचार न दिखने का क्या कारण बताया?

उत्तर: दरबारियों के अनुसार दरबारियों ने भ्रष्टाचार न दिखने का एक कारण यह बताया कि वह बहुत बारीक होता है। उनकी आँखें महाराजा की विराटता को देखने की इतनी अधिक अभ्यस्त हो गई है उन्हें कोई बारीक चीज दिखाई नहीं देती । उनकी आँखों में तो सदा महाराज की सूरत बसी रहती है। इसलिए भ्रष्टाचार दिखाई नहीं देता।

प्रश्न 2 राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से क्यों की?

उत्तर: राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से इसलिए की क्योंकि भ्रष्टाचार अति सूक्ष्म है, वह दिखाई नहीं देता और वह सर्वव्यापी है। ये सब गुण एवं विशेषताएं तो ईश्वर में ही होती हैं। ईश्वर भी सर्वव्यापी होता है। वह किसी को दिखाई नहीं देता। इसलिए राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से की।

प्रश्न 3 राजा का स्वास्थ्य क्यों बिगड़ता जा रहा था?

उत्तर: राजा के राज्य में भ्रष्टाचार बहुत तेज़ी से फैल रहा था। राजा को वह कहीं दिखाई भी नहीं दे रहा था। उसके दरबारियों को भी भ्रष्टाचार कहीं दिखाई नहीं दिया। इस तरह भ्रष्टाचार के फैलते जाने के कारण और इसे दूर करने का कोई हल नज़र न आने के कारण राजा का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था।

प्रश्न 4 साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार के बारे में क्या कहा?

उत्तर: साधु ने कहा कि भ्रष्टाचार और सदाचार दोनों व्यक्ति की आत्मा में होते हैं। वे बाहर से आने वाली वस्तु नहीं है। ईश्वर जब मनुष्य को बनाता है तब वह किसी आत्मा में ईमान की और किसी आत्मा में बेईमानी की कल को फिट कर देता है। प्रत्येक

व्यक्ति अपनी आत्मा के अनुसार ही कार्य करता है। इस कल में ईमान या बेईमानी के स्वर निरंतर निकलते रहते हैं। इसे आत्मा की पुकार कहा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आत्मा की पुकार के अनुसार ही कार्य करता है।

प्रश्न 5 साधु को तावीज़ बनाने के लिए कितनी पेशगी दी गई ?

उत्तर: राज्य में फैले भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए दरबारियों के सुझाव पर एक साधु को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया। तावीज़ बनाने के लिए साधु को पाँच करोड़ रुपए पेशगी के तौर पर दिए गये। साधु ने राज्य के सभी कर्मचारियों के लिए तावीज़ बनाने की जिम्मेदारी ली।

प्रश्न 6 तावीज़ किस लिए बनवाये गये थे?

उत्तर: भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए तावीज़ बनाए गये थे। अपने दरबारियों के कहने पर राजा साधु से तावीज़ बनवाकर अपने कर्मचारियों की भुजाओं पर बंधवाना चाहता था जिससे वे सभी सदाचारी बन जाएं। पहले इसका कुत्ते पर प्रयोग किया गया था। तावीज़ गले में बांध देने से कुता भी रोटी नहीं चुराता। इसी तरह व्यक्ति की भुजा में तावीज़ बांधने से भ्रष्टाचार नहीं रहता।

प्रश्न 7 महीने के आखिरी दिन तावीज़ में से कौन से स्वर निकल रहे थे ?

उत्तर: महीने के आखिरी दिन राजा वेश बदलकर एक कर्मचारी के पास काम करवाने गया। उसे पाँच रुपये का नोट दिखाया। उस कर्मचारी ने उस नोट को उसी समय वही पकड़ लिय। राजा ने कर्मचारी को पकड़कर पूछा कि क्या उसने तावीज़ नहीं बाँधा है। उसने तावीज़ बांधा हुआ था। जब राजा ने तावीज़ पर कान लगा कर सुना तो तावीज से आवाज़ आ रही थी कि 'आज तो इकतीस तारीख है, आज तो ले लो।'

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए:-

प्रश्न 1 विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए क्या-क्या उपाय बताए ?

उत्तर: भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए विशेषज्ञों ने व्यवस्था परिवर्तन करने पर बल दिया। उन्होने कहा कि ऐसी नीतियां और कानून बनाए जाएं जिससे भ्रष्टाचार के अवसर ही समाप्त किए जा सकें। जब तक समाज में ठेकेदारी प्रथा विद्यमान है तब तक लोग अपना काम निकलवाने हेतु किसी न किसी अधिकारी को घूस खिलाते रहेंगे। इस तरह से रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार बढता रहेगा। यदि ठेकेदारी प्रथा को समाप्त कर दिया जाए तो समाज से घूसखोरी समाप्त की जा सकती है। हमें उन सभी कारणों की जाँच-पड़ताल करनी होगी जिनके कारण भ्रष्टाचार उत्पन्न होता है। इसके साथ ही सभी व्यक्तियों को पूरा वेतन दिया जाए। इस तरह से भ्रष्टाचार खत्म हो सकता है।

प्रश्न 2 साधु ने तावीज़ के क्या गुण बताए?

उत्तर: साधु ने तावीज़ के गुणों को बताते हुए कहा कि यह तावीज़ जिसकी भुजा पर बंधा होगा, उसमें बेईमानी नहीं आ सकती। वह गलत रास्ते पर नहीं चलेगा। यह तावीज़ उसे ईमानदारी के रास्ते पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा। उसके मन से लालच आदि दूर हो जाएगा। वह चाह कर भी भ्रष्टाचार के चंगुल में नहीं फंस पाएगा। उसका आचरण एकदम शुद्ध और आत्मा एकदम पवित्र हो जाएगी।

प्रश्न 3 'सदाचार का पाठ' में छिपे व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'सदाचार का तावीज़' पाठ मूल रूप से एक व्यंग्यात्मक रचना है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई एक व्यंग्यकार लेखक हैं। उनका कहना है कि केवल भाषणों, कार्यकलापों, पुलिसिया कार्यवाही, नैतिक स्लोगनों, वाद-विवाद आदि से कभी भी भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त नहीं किया जा सकता। भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करने के लिए समाज में व्यक्ति को नैतिक स्तर पर दृढ़ करना होगा। इससे ही समाज और राष्ट्र का कल्याण होगा। देश के सभी कर्मचारियों को जब पर्याप्त वेतन दिया जाएगा, तब ही भ्रष्टाचार समाप्त हो सकता है। भ्रष्टाचार को समाप्त करना केवल एक व्यक्ति का काम नहीं बल्कि पूरे समाज की जिम्मेदारी है जिसे सभी को ईमानदारी से निभाना चाहिए।

पाठ 16 ठेले पर हिमालय (लेखक: डॉ० धर्मवीर भारती)

प्रश्न 1 लेखक को ऐसा क्यों लगा जैसे वे ठगे गये हैं?

उत्तर: लेखक कौसानी में कत्थूर की घाटी के अपार सौंदर्य को देखकर हैरान रह गया। वहाँ हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल रास्ते, किनारे सफेद पत्थर की पंक्ति, बेलों की लड़ियों सी नदियाँ सौंदर्य से परिपूर्ण थीं। यहाँ का सौंदर्य अति सुंदर, मोहक, सुकुमार और निष्कलंक था। ऐसी सुंदरता को देखकर लेखक को लगा जैसे वे ठगे गए हैं।

प्रश्न 2 सबसे पहले बर्फ दिखाई देने का वर्णन लेखक ने कैसे किया है?

उत्तर: लेखक को बर्फ बादलों के टुकड़े जैसी लगी थी जिसमें सफेद, रुपहला और हल्का नीला रंग शोभा दे रहा था। उसे ऐसा लगा जैसे घाटी के पार हिमालय पर्वत को बर्फ ने ढंक रखा हो। उसे ऐसे लग रहा था जैसे कोई बाल स्वभाव वाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँक रहा हो।

प्रश्न 3 खानसामे ने सब मित्रों को खुशकिस्मत क्यों कहा?

उत्तर: खानसामे ने सब मित्रों को खुशकिस्मत इसलिए कहा क्योंकि उन्हें वहाँ आते पहले ही दिन बर्फ के दर्शन हो गए थे। उससे पहले 14 टूरिस्ट वहाँ आकर पूरा हफ्ता भर रुके , परंतु उन्हें बादलों के कारण बर्फ दिखाई नहीं दी।

प्रश्न 4 सूरज के डूबने पर सब गुमसुम क्यों हो गए थे ?

उत्तर: सूरज के डूबने पर सब गुमसुम इसलिए हो गए थे क्योंकि सूरज डूबने के साथ ही उनकी हिम दर्शन की इच्छाएं और आशाएं धूमिल हो गई थी। जिस हिम दर्शन की आशा में लेखक अपने मित्रों के साथ बहुत समय से टकटकी लगाकर देख रहे थे, वे उस से वंचित रह गए थे।

प्रश्न 5 लेखक ने बैजनाथ पहुंचकर हिमालय से किस रूप में भेंट की ?

उत्तर: लेखक ने बैजनाथ पहुँचकर देखा कि गोमती निरंतर प्रवाहित हो रही थी। गोमती की उज्ज्वल जल राशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी। लेखक ने नदी के इस जल में तैरते हुए हिमालय से भेंट की।

भाग 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए:-

प्रश्न 1 कोसी से कौसानी तक में लेखक को किन-किन दृश्यों ने आकर्षित किया ?

उत्तर: कोसी से कौसानी तक लेखक को बहुत से प्राकृतिक दृश्य दिखाई दिए थे। इन दृश्यों ने लेखक को मंत्रमुग्ध कर दिया था। सोमेश्वर की हरी-भरी घाटी के उत्तर में ऊँची पर्वतमाला के शिखर पर कौसानी बसा हुआ था। नीचे पचास मील चौड़ी घाटी में हरे भरे कालीनों जैसी सुंदर वनस्पतियां फैली हुई थीं। घाटी के पार हरे खेत, नदियाँ और वन क्षितिज के नीले कोहरे में छिप रहे थे। बादल की एक टुकड़ी के हटते ही पर्वतराज हिमालय दिखाई दिया जो सुंदरता में अद्भुत था। ग्लेशियरों में डूबता सूर्य पिघले हुए केसर जैसा रंग दिखाने लगा था। बर्फ लाल कमल के फूलों जैसी प्रतीत होने लगी थी ।

प्रश्न 2 लेखक को ऐसा क्यों लगा कि वे किसी दूसरे ही लोक में चले आए हैं?

उत्तर: लेखक अपने मित्रों के साथ जैसे ही सोमेश्वर की घाटी से चला, उसे उत्तर दिशा में पर्वत शिखर पर कौसानी दिखाई दिया। सारी घाटी में अपार सुंदरता बिखरी हुई थी। सारी घाटी रंग बिरंगी दिखाई दे रही थी। हरे-भरे मखमली कालीन जैसे खेत थे। गेरू के लाल-लाल रास्ते थे। और बेलों की लडियों जैसी सुंदर नदियां थी। ऐसे अद्भुत दृश्यों को देखकर उसे ऐसा लगा जैसे वे किसी दूसरे ही लोक में चले आए हैं।

प्रश्न 3 लेखक को 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक कैसे सूझा?

उत्तर : लेखक अपने मित्रों के साथ हिम दर्शन के लिए अल्मोड़ा यात्रा पर गये। लेखक अपने एक मित्र के साथ एक पान की दुकान पर खड़ा था, तभी ठेले पर बर्फ की सिल्ली लादे हुए बर्फ वाला आया । उस बर्फ में से भाप उड़ रही थी। लेखक क्षणभर उसे देखता रहा और उठती भाप में खोया सा रहा। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि यहीं बर्फ तो हिमालय की शोभा है। इसी शोभा को देखने लेखक मित्रों के साथ कौसानी गया था । इस प्रकार उस बर्फ को देखकर ही लेखक को लगा कि 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक सार्थक है।

पाठ 17 श्री गुरु नानक देव जी (लेखिका डॉ. सुखविंदर कौर बाठ)

प्रश्न (1) साधुओं की संगति में रहकर गुरु नानक देव जी ने कौन-कौन से ज्ञान प्राप्त किए ?

उत्तर: साधुओं की संगति में रहकर गुरु नानक देव जी ने भारतीय धर्म का ज्ञान प्राप्त किया। आपने विभिन्न संप्रदायों, धर्म ग्रंथों और शास्त्रों का ज्ञान भी साधुओं की संगति में रहकर प्राप्त किया। राग विद्या भी आपने साधुओं की संगति में ही प्राप्त की थी।

प्रश्न (2) गुरु नानक देव जी ने यात्राओं के दौरान कौन-कौन से महत्वपूर्ण शहरों की यात्रा की थी ?

उत्तर: अपनी यात्राओं के दौरान गुरु नानक देव जी ने आसाम, लंका, ताशकंद 'मक्का-मदीना आदि महत्वपूर्ण शहरों की यात्रा की थी। आपने हिमालय पर स्थित योगियों के केंद्रों की यात्रा की थी और इन यात्राओं के दौरान इन्होने हिंदू- मुसलमान सब को सही रास्ता दिखाया।

प्रश्न (3) गुरु नानक देव जी ने तत्कालीन भारतीय जनता को किन बुराइयों से स्वतंत्र कराने का प्रयास किया?

उत्तर: गुरु नानक देव जी के समय में भारतीय जनता में बहुत सी बुराइयाँ व्याप्त थी। जनता धार्मिक आडम्बरों से ग्रस्त थी। आपने उन्हें इन रूढ़ियों और आड़म्बरों से मुक्त कराने के लिए प्रयास किए। उन्हें सही रास्ता दिखाया।

प्रश्न (4) गुरु नानक देव जी की रचनाओं के नाम लिखिए ।

उत्तर: गुरु नानक देव जी की रचनाएँ 'जपुजी साहिब', 'आसा दी वार', 'सिद्ध गोष्टी', 'पट्टी' ,' पहरे तिथि', 'बारह माह' तथा 'आरती' आदि हैं। इन रचनाओं के अतिरिक्त वाणी, श्लोक, अष्टपदी सोहले आदि भी गुरु जी की रचनाएँ हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियो में दीजिए:-

प्रश्न (1) जिस समय गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ उस समय भारतीय समाज की क्या स्थिति थी ?

उत्तर: जिस समय गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ उस समय भारतीय समाज में बहुत सी बुराइयाँ व्याप्त थीं। भारत अनेक जातियों, संप्रदायों और धर्मों में बँटा हुआ था। लोग रूढ़ियों और आडंबरों का शिकार थे ।उनके विचार बहुत ही संकीर्ण थे। वह घृणित कार्यों में लगे रहते थे। धर्म के नाम पर दिखावे का बोलबाला था। शासक वर्ग अत्याचारी था। आम जनता का शोषण हो रहा था। दलितों पर भी बहुत अत्याचार होते थे। इस तरह से भारतीय समाज बहुत सी बुराइयों का शिकार था।

प्रश्न (2) गुरु नानक देव जी ने अपनी यात्राओं के दौरान कहाँ -कहाँ और किन-किन लोगों को क्या- क्या उपदेश दिए?

उत्तर: गुरु नानक देव जी ने सन् 1499 से 1522 ई. के बीच चारों दिशाओं की यात्राएं की, जिन्हें चार उदासियां कहा जाता है। इन यात्राओं में वे आसाम, लंका, ताशकंद, मक्का मदीना आदि स्थानों पर गए। इन यात्राओं में आपने मार्ग से भटके हुए सभी वर्ग के लोगों को सही मार्ग पर चलने का उपदेश दिया था। हिंदुओं और मुसलमानों सभी को अपने सहज सरल और मीठी निरंकारी भाषा से सहज धर्म का पालन करने का उपदेश दिया। उस युग के लोग आडंबरों, करामातों आदि में बहुत विश्वास रखते थे। आपने भोली भाली जनता को उपदेश देकर सही मार्ग दिखाया। आपने कश्मीर के पंडितों के साथ विचार-विमर्श किया। हिमालय के योगियों को भी सही धर्म सिखाया। हिंदू नेताओं को देश सेवा का उपदेश दिया। सभी को सांझे धर्म की शिक्षा दी। आपने अनेक फकीरों, सूफियों, संतो आदि से भी धार्मिक विचार विमर्श किए और लोगों को उपदेश देकर उन्हें सही रास्ता दिखाया।

प्रश्न (3) गुरु नानक देव जी की वाणी की विशेषताएं अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: गुरु नानक देव जी की वाणी के 974 पद और श्लोक आदिग्रंथ में संकलित हैं। आपकी वाणी में अनेक विषयों पर चर्चा प्राप्त होती है। आपने सृष्टि, जीव और ब्रहम के संबंध में लिखा है। आपने अकाल पुरुष के स्वरूप और स्थान का भी वर्णन किया है। आपने माया से दूर रहने तथा माया के बंधन काटने का उपदेश दिया है। शुद्ध मन से प्रभु का नाम जपने की प्रेरणा दी है। आपकी वाणी 'जपुजी साहिब' में सिख सिद्धांतों का सार है। आपकी वाणी की शैली बहुत अद्भुत और अनूठी है।

पाठ 18 सूखी डाली - (उपेंद्रनाथ अश्क)

1. एकांकी के पहले दृश्य में इंदु बिफरी हुई क्यों दिखाई देती है?

उत्तर- एकांकी के पहले दृश्य में इंदु बिफरी हुई इसलिए दिखाई देती है क्योंकि वह घर में अकेली ही सबसे ज्यादा पढ़ी लिखी है ।दादा मूलराज उसे बहुत प्यार करतें हैं और वह सब की चहेती बन चुकी है।

2. दादाजी करमचंद की किस बात से चिंतित हो उठते हैं?

उत्तर- जब दादा जी ने करमचंद से छोटी बहू के स्वभाव के बारे में सुना तो वह चिंतित हो उठे । छोटी बहू के अभिमान और घृणा भरे व्यवहार के कारण परिवार में परस्पर कलह की बातें होने लगी। छोटी बहू को लेकर बात-बात पर झगड़ा होने लगा। घर में सुख शांति खत्म होने लगी। जब दादा जी को यह पता चला कि छोटी बहू ने अपनी अलग घर बसाना चाहती है तो उन्हें संयुक्त परिवार के टूटने का डर लगने लगा इसी बात से चिंतित हो उठे।

3. कर्मचंद ने दादाजी को छोटी बहू बेला के विषय में क्या बताया?

उत्तर - कर्मचंद ने दादा जी को छोटी बहू बेला के बारे में बताया कि वह बहुत अभिमानी है। वह अपने मायके के घर को ससुराल के घर से ज्यादा अच्छा मानती है। ससुराल के घर को घृणा की दृष्टि से देखती है। करमचंद दादा जी को बताते हैं कि वह मलमल के थान और रजाई जो वह लेकर आए थे मैं सभी ने रख लिए लेकिन छोटी बहू ने उन्हें रखने से इंकार कर दिया।

4. परेश ने दादा जी के पास जाकर अपनी पत्नी बेला के संबंध में क्या बताया?

उत्तर- परेश में दादाजी के पास जाकर अपनी पत्नी बेला के संबंध में यह बताया कि बेला का अब इस घर में मन नहीं लगता। उसे कोई भी पसंद नहीं करता। वह सोचती है कि सब उसकी निंदा करते रहते हैं। उसे ताने देते हैं। वह समझती है कि वह अपनों में भी पराई बनकर रह गई है। वह आजाद जीवन जीना चाहती है। वह नहीं चाहती कि उसकी जिंदगी में कोई हस्तक्षेप करें। वह अपना अलग घर बसाना चाहती है जहां उसे कोई रोकने टोकने वाला न हो।

5. जब परेश ने दादा जी से यह कहा कि बेला अपनी गृहस्थी अलग बसाना चाहती है तो दादाजी ने परेश को क्या समझाया?

उत्तर- जब परेश ने दादा जी से कहा कि बेला अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती है तो दादा जी ने परेश को समझाया कि वह अपने जीते जी पूरे परिवार को एक वृक्ष की तरह ही देखना चाहते हैं। वह नहीं चाहते की परिवार टूटे। वह परिवार के सभी सदस्यों को समझाएंगे कि वह बेला को समझें। उसकी भावनाओं को समझें उसका सम्मान करें। वह अवश्य कोई ऐसा उपाय ढूंढ लेंगे जिस से को बेला को परायापन महसूस ना हो।

6. एकांकी के अंत में बेला रूंधे कंठ से क्या कहते हैं?

उत्तर- एकांकी के अंत में बेला रूंधे कंठ से कहती है कि दादाजी आप परिवार रूपी इस पेड़ से किसी डाली का अलग होना पसंद नहीं करते तो क्या आप यह चाहेंगे कि वह डाल पेड़ से लगी लगी सूख कर मुरझा जाए ।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह: सात पंक्तियों में दीजिए:

1. इंदु और बेला की कौन सी बात सबसे अधिक परेशान करती है। क्यों?

उत्तर -इंदु का स्वभाव घमंडी है ।अपने इसी स्वभाव के कारण वह अपने मायके को सबसे ऊपर समझती है ।उसके लिए बाकी सभी चीजें बेकार है। वह दूसरों को मूर्ख, गवार और असभ्य समझती है। बेला की यह बात इंदु को सबसे अधिक परेशान करती है क्योंकि इसी के कारण घर में शांति व एकता भंग हो रही थी और परिवार टूटने की कगार पर आ पहुंचा था।

2. दादा जी छोटी बहू के अलावा घर के सभी सदस्यों को बुलाकर क्या समझाते हैं?

उत्तर- दादा जी छोटी बहु के अलावा घर के बाकी सदस्यों को बुलाकर समझाते हैं कि घर में जो कुछ भी हो रहा है उससे उनको बहुत दु:ख पहुंचा है। छोटी बहु का मन घर में नहीं लग रहा है। इसमें हम सभी का दोष है। छोटी बहु बड़े घर की बेटी है ।हम सभी से ज्यादा पढ़ी लिखी है। वह अपने घर की लाडली है । कोई भी इंसान उम्र से बड़ा या छोटा नहीं होता ।हर इंसान अपनी योग्यता और बुद्धि से बड़ा होता है। निश्चय ही छोटी बहु हम सब में अक्ल से बड़ी है। इसलिए हमको उसकी योग्यता का लाभ उठाना चाहिए ।उसे सम्मान देना चाहिए उसका कहना मानना चाहिए ।उस से सलाह लेनी चाहिए हमें उसे आगे पढ़ने लिखने का भी मौका देना चाहिए। हमारा यह परिवार एक बहुत बड़े वृक्ष के समान है हम सब उसकी डालियां है डालिया छोटी हो चाहे बड़ी सब छाया देती है मैं नहीं चाहता कोई भी डाली इससे अलग हो।

3. एकांकी के अंतिम भाग में घर के सदस्यों के बदले हुए व्यवहार से बेला परेशान क्यों हो जाती है?

उत्तर - घर के सदस्यों के बदले हुए व्यवहार से बेला इसलिए परेशान हो जाती है क्योंकि उसे उनका यह बदला हुआ व्यवहार ज्यादा ही दिखावे वाला प्रतीत हो रहा था ।उसे लगता है कि शायद वह सभी उसके प्रति जानबूझकर ऐसा कर रहे हैं ।जब वह जाती है तो सब खड़े हो जाते हैं ।कोई भी उसके सामने नहीं हंसता। ना ही अधिक समय तक उससे कोई बात करता है ।उसे जाते ही सब डर से जाते हैं। सभी का यह औपचारिकता से भरपूर व्यवहार उससे अच्छा नहीं लग रहा था।

4. मंझली बहू के चरित्र की कौन सी विशेषता इस एकांगी में सबसे अधिक दृष्टिगोचर होती है?

उत्तर मंझली बहू का स्वभाव हंसी मजाक करने वाला है ।इस एकांकी में उसके स्वभाव की यही विशेषता सबसे अधिक दृष्टिगोचर होती है। वह छोटी-छोटी बात पर हंसती मुस्कुराती रहती है। किसी के विचित्र व्यवहार पर हंसना और ठहाके लगाना उसके लिए आम सी बात है। परेश और बेला के मैं किसी बहस में वह इतना हंसती है और बेकाबू हो जाती है। उसकी हंसी बेला को और भी गुस्से में ला देती है।

5. सूखी डाली एकांकी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर सूखी डाली एकांकी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि परिवार के सभी सदस्यों का को आपस में मिल जुल कर रहना चाहिए। एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। हमें अपने बड़े बुजुर्गों का आदर करना चाहिए। उनके प्रति प्रेम व जिम्मेवारी का व्यवहार रखना चाहिए। हमारे बड़े बुजुर्ग जो भी हमें सलाह व सुझाव दें उन्हें बड़े प्यार से स्वीकार करके अपना लेना चाहिए। कोई भी इंसान

उम्र में बड़ा या छोटा नहीं होता बल्कि योग्यता और बुद्धि से ही इंसान की पहचान होती है । हर व्यक्ति अपने अच्छे व्यवहार के कारण ही महान बनता है।

19 देश के दुश्मन (जयनाथ नलिन)

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन चार पंक्तियों में लिखिए:-

प्रश्न (1) सुमित्रा क्यों कहती है कि अब उसका हृदय इतना दुर्बल हो चुका है कि जरा-सी भी आशंका से काँप उठता है।

उत्तर: पति के बलिदान को तो सुमित्रा ने दिल पर पत्थर रखकर सहन कर लिया था लेकिन अब उसकी देह जर्जर हो चुकी है। उसकी हिम्मत टूट चुकी है। वह अपने इकलौते पुत्र को खोना नही चाहती। अब उसका दिल इतना दुर्बल हो चुका है कि जरा सी आशंका से भी काँप उठता है।

प्रश्न (2) नीलम जयदेव से मान-भरी मुद्रा में क्या कहती है?

उत्तर: नीलम जयदेव से मान भरी मुद्रा में कहती है 'मेरी तो राह देखते-देखते आँखें पथरा गई हैं, पर जनाब को मेरी परवाह तक नहीं कि किसी के दिल पर क्या बीत रही है।'

प्रश्न (3) जयदेव को गुप्तचरों से क्या समाचार मिला ?

उत्तर: जयदेव को गुप्तचरों से समाचार मिला कि रात के अंधेरे में पुलिस पीकेट से एक डेढ मील दूर दक्षिण की तरफ से कुछ लोग बॉर्डर पार करने वाले हैं। ऐसा शक है कि वे सोना स्मगल करके ला रहे हैं।

प्रश्न (4) जयदेव ने अपनी छुट्टी कैंसिल क्यों करा दी थी ?

उत्तर: जयदेव को गुप्तचरों से समाचार मिला कि रात के अँधेरे में पुलिस पीकेट से एक डेढ़ मील दक्षिण की तरफ से कुछ लोग सोना स्मगल करके बॉर्डर पार करने वाले हैं। जयदेव तस्करों को पकड़ने का यह अवसर हाथ से खोना नहीं चाहता था। इसलिए उसने अपनी छुट्टी कैंसिल करवा दी ।

प्रश्न (5) एकांकी में डी.सी. की किस संवाद से पता चलता है कि डीसी और जयदेव में घनिष्ठता थी ?

उत्तर: डी.सी. जब कहता है ," सर वर बैठा होगा ऑफिस की कुर्सी में। खबरदार ! जो यहाँ सर सर कहा। मैं वही तुम्हारा बचपन का दोस्त और क्लासमेट हूँ जिससे बिना हाथापाई किए रोटी हजम नहीं होती थी।"

डीसी के इस संवाद से उनकी जयदेव गहरी घनिष्ठता का पता चलता है।

3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न (1) चाचा अपने बेटे बलुआ के विषय में क्या बताते हैं ?

उत्तर: चाचा अपने बेटे बलुआ के विषय में बताते हैं कि वह भी बहुत लापरवाह है। वह भी दो-दो महीनों में चार पाँच चिट्ठी जाने के बाद ही एक आध पत्र लिखता है और उल्टे हमें ही शिक्षा देता है। वह बहुत व्यस्त रहता है। उसे समय नहीं मिलता। उसकी ड्यूटी बहुत कड़ी है। उसे बिल्कुल भी फुर्सत नहीं मिलती।

प्रश्न (2) चाचा सुमित्रा को अखबार में आई कौन सी खबर सुनाते हैं ?

उत्तर: चाचा सुमित्रा को अखबार में आई यह खबर सुनाते हैं कि अखबार में जयदेव की वीरता और सूझबूझ की खूब प्रशंसा हुई है। उसने तस्करों से बड़ी बहादुरी से मोर्चा लिया और उनको मार भगाया था। उसने चार लोगों को अपनी गोलियों का निशाना बनाया और उनसे पाँच लाख रुपये का सोना छीन लिया।

प्रश्न (3) जयदेव ने तस्करों को कैसे पकड़ा ?

उत्तर: जयदेव ने तस्करों को पकड़ने का पक्का इरादा किया। जब वे आधी रात में चौकी से दो मील दूर एक खतरनाक घने ढाक के ऊबड़- खाबड़ रास्ते से बॉर्डर पार कर रहे थे, तभी उसने उन को चैलेंज किया। उन्होंने बदले में गोलियां चलाई । उनको चुनौती दी गी। तस्कर जीप लेकर भागने लगे किंतु दो तीन जीपों ने उनका पीछा किया। जयदेव ने अपने अचूक निशाने से उनकी जीप का पहिया उड़ा दिया। जीप लुढ़क कर एक गड्ढे में जा गिरी। तब उन्हें घेर कर पकड़ लिया गया।

प्रश्न (4) नीलम अपने पति से उलाहना भरे स्वर में क्या कहती है ?

उत्तर : नीलम अपने पति से उलाहना भरे स्वर में कहती है कि मर्दों का दिल तो पत्थर होता है और विशेषकर रात दिन चोर डाकुओं तथा मौत से खेलने वालों तथा गोलियों की बौछार करने वालों का। नारी का हृदय तो सदा प्रेम से भरा रहता है।

प्रश्न (5) डी.सी. को अपने मित्र जयदेव और उनके परिवार पर गर्व क्यों होता है ?

उत्तर: डीसी को अपने मित्र जय देव और और उसके परिवार पर गर्व इसलिए होता है क्योंकि जयदेव में बड़ी वीरता और साहस से तस्करों का मुकाबला करके उनसे पांच लाख का सोना पकड़ा। उसे गवर्नर की तरफ से दस हज़ार रुपये का इनाम भी दिया गया। इस राशि को जयदेव ने शहीद पुलिस अफसरों की विधवाओं को देने की घोषणा की। जयदेव की इस वीरता और त्याग की भावना के कारण डी सी को जयदेव तथा उसके परिवार पर गर्व होता है।

प्रश्न (6) पुलिस और सेना के अफसरों को या सैनिकों के घरवालों को किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता है ?

उत्तर: पुलिस और सेना के अफसरों या सैनिकों के घर वालों को बहुत मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अपने बच्चों की जान की चिंता लगी रहती है। हर समय अपने बच्चों की कुशलता की ख़बर का इंतज़ार रहता है। अपने बच्चों के लिए चिंता रहती है कि वे कब लौट कर आएंगे। उनकी चिट्ठी न आने पर मन बहुत सी आशंकाओं से घिरा रहता है।

(अपठित गद्यांश)

1) इस संसार में प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिया गया सबसे अमूल्य उपहार 'समय' है। ढह गई इमारत को दोबारा खड़ा किया जा सकता है; बीमार व्यक्ति को इलाज द्वारा स्वस्थ किया जा सकता है ; खोया हुआ धन दोबारा प्राप्त किया जा सकता है ; किन्तु एक बार बीता समय पुनः नहीं पाया जा सकता। जो समय के महत्त्व को पहचानता है, वह उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ता जाता है। जो समय का तिरस्कार करता है, हर काम में टालमटोल करता है, समय को बर्बाद करता है, समय भी उसे एक दिन बर्बाद कर देता है। समय पर किया गया हर काम सफलता में बदल जाता है जबकि समय के बीत जाने पर बहुत कोशिशों के बावजूद भी कार्य को सिद्ध नहीं किया जा सकता। समय का सदुपयोग केवल कर्मठ व्यक्ति ही कर सकता है, लापरवाह, कामचोर और आलसी नहीं। आलस्य मनुष्य की बुद्धि और समय दोनों का नाश करता है। समय के प्रति सावधान रहने वाला मनुष्य आलस्य से दूर भागता है तथा परिश्रम, लगन व सत्कर्म को गले लगाता है। विद्यार्थी जीवन में समय का अत्यधिक महत्त्व होता है। विद्यार्थी को अपने समय का सदुपयोग ज्ञानार्जन में करना चाहिए न कि अनावश्यक बातों, आमोद-प्रमोद या फैशन में।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

प्रश्न 1. प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिया गया सबसे अमूल्य उपहार क्या है?

उत्तर - प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिया गया सबसे अमूल्य उपहार समय है।

प्रश्न 2. समय के प्रति सावधान रहने वाला व्यक्ति किससे दूर भागता है?

उत्तर - समय के प्रति सावधान रहने वाला व्यक्ति आलस्य से दूर भागता है।

प्रश्न 3. विद्यार्थी को समय का सदुपयोग कैसे करना चाहिए?

उत्तर - विद्यार्थी को समय का सदुपयोग ज्ञानार्जन में करना चाहिए।

प्रश्न 4. 'कर्मठ' तथा 'तिरस्कार' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर - 1) कर्मठ - परिश्रमी 2) तिरस्कार - अपमान।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर - प्रकृति का अमूल्य उपहार - समय।

2) हर देश, जाति और धर्म के महापुरुषों ने 'सादा जीवन और उच्च विचार' के सिद्धांत पर बल दिया है, क्योंकि हर समाज में ऐश्वर्यपूर्ण, स्वच्छंद और आडम्बरपूर्ण जीवन जीने वाले लोग अधिक हैं। आज मनुष्य सुख-भोग और धन-दौलत के पीछे भाग रहा है। उसकी असीमित इच्छाएँ उसे स्वार्थी बना रही हैं। वह अपने स्वार्थ के सामने दूसरों की सामान्य इच्छा और आवश्यकता तक की परवाह नहीं करता जबकि विचारों की उच्चता में ऐसी शक्ति होती है कि मनुष्य की इच्छाएँ सीमित हो जाती हैं। सादगीपूर्ण जीवन जीने से उसमें संतोष और संयम जैसे अनेक सद्‌गुण स्वतः ही उत्पन्न हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त उसके जीवन में लोभ, द्वेष और ईर्ष्या का कोई स्थान नहीं रहता। उच्च विचारों से उसका स्वाभिमान भी बढ़ जाता है जो कि उसके चरित्र की प्रमुख पहचान बन जाता है। इससे वह छल-कपट, प्रमाद और अहंकार से दूर रहता है। किन्तु आज की इस भाग-दौड़ वाली ज़िन्दगी में हरेक व्यक्ति की यही लालसा रहती है कि उसकी ज़िन्दगी ऐशो-आराम से भरी हो। वास्तव में आज के वातावरण में मानव पश्चिमी सभ्यता, फैशन और भौतिक सुख साधनों से भ्रमित होकर उनमें संलिप्त होता जा रहा है। ऐसे में मानवता की रक्षा केवल सादा जीवन और उच्च विचार रखने वाले महापुरुषों के आदर्शों पर चलकर ही की जा सकती है।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रश्न 1. हर देश जाति और धर्म के महापुरुषों ने किस सिद्धांत पर बल दिया है ?

उत्तर -हर देश, जाति और धर्म के महापुरुषों ने 'सादा जीवन और उच्च विचार' के सिद्धांत पर बल दिया है।

प्रश्न 2. अपने स्वार्थ के सामने मनुष्य को किस चीज़ की परवाह नहीं रहती ?

उत्तर - अपने स्वार्थ के सामने मनुष्य को दूसरों की सामान्य इच्छा और आवश्यकता की भी परवाह नहीं रहती।

प्रश्न 3. सादगीपूर्ण जीवन जीने से मनुष्य में कौन-कौन से गुण उत्पन्न हो जाते हैं?

उत्तर- सादगीपूर्ण जीवन जीने से मनुष्य में संतोष और संयम के गुण उत्पन्न हो जाते हैं।

प्रश्न 4. 'प्रमाद' तथा 'लालसा' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर - 1) प्रमाद - नशा 2) लालसा – अभिलाषा।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर – सादा जीवन और उच्च विचार।

3) मनुष्य का जीवन कर्म-प्रधान है। मनुष्य को निष्काम भाव से सफलता-असफलता की चिंता किए बिना अपने कर्त्तव्य का पालन करना है। आशा या निराशा के चक्र में फँसे बिना उसे लगातार कर्त्तव्यनिष्ठ बना रहना चाहिए। किसी भी कर्त्तव्य की पूर्णता पर सफलता अथवा असफलता प्राप्त होती है। असफल व्यक्ति निराश हो जाता है, किन्तु मनीषियों ने असफलता को भी सफलता की कुंजी कहा है। असफल व्यक्ति अनुभव की सम्पत्ति अर्जित करता है, जो उसके भावी जीवन का निर्माण करती है। जीवन में अनेक बार ऐसा होता है कि हम जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करते है, वह पूरा नहीं होता है। ऐसे अवसर पर सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया-सा लगता है और हम निराश होकर चुपचाप बैठ जाते हैं। उद्देश्य की पूर्ति के लिए पुन: प्रयत्न नहीं करते। ऐसे व्यक्ति का जीवन धीरे-धीरे बोझ बन जाता है। निराशा का अंधकार न केवल उसकी कर्म-शक्ति, बल्कि उसके समस्त जीवन को ही ढँक लेता है। मनुष्य जीवन धारण करके कर्म-पथ से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। विघ्न बाधाओं की, सफलता-असफलता की तथा हानि-लाभ की चिंता किए बिना कर्त्तव्य के मार्ग पर चलते रहने में जो आनंद एवं उत्साह है, उसमें ही जीवन की सार्थकता है।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1. कर्त्तव्य-पालन में मनुष्य के भीतर कैसा भाव होना चाहिए?

उत्तर- कर्तव्य-पालन में मनुष्य के भीतर सफलता-असफलता की चिंता को त्याग कर केवल कर्त्तव्य के पालन का भाव होना चाहिए।

प्रश्न 2. सफलता कब प्राप्त होती है?

उत्तर- सफलता की प्राप्ति तब होती है जब मनुष्य बिना किसी आशा या निराशा के चक्र में फँसे हुए निरंतर अपने कार्य में लगा रहता है।

प्रश्न 3. जीवन में असफल होने पर क्या करना चाहिए?

उत्तर- जीवन में असफल होने पर कभी भी निराश-हताश नहीं होना चाहिए और निरंतर अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य करते रहना चाहिए।

प्रश्न 4. 'निष्काम' और 'मनीषियों' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर – 1) निष्काम - निरीह 2) मनीषियों - पंडितों/विद्वानों।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर- जीवन में कर्म का महत्त्व।

4) व्यवसाय या रोज़गार पर आधारित शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा कहलाती है। भारत सरकार इस दिशा में सराहनीय भूमिका निभा रही है। इस शिक्षा को प्राप्त करके विद्यार्थी शीघ्र ही अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। प्रतियोगिता के इस दौर में तो इस शिक्षा का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। व्यावसायिक शिक्षा में ऐसे कोर्स रखे जाते हैं जिनमें व्यावहारिक प्रशिक्षण **अर्थात्** प्रैक्टिकल ट्रेनिंग पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। यह आत्मनिर्भरता के लिए एक बेहतर कदम है। व्यावसायिक शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए भारत व राज्य सरकारों ने इसे स्कूल स्तर पर शुरू किया है। निजी संस्थाएँ भी इस क्षेत्र में सराहनीय भूमिका निभा रही हैं। कुछ स्कूलों में तो नौवीं कक्षा से ही व्यावसायिक शिक्षा दी जाती है परन्तु बड़े पैमाने पर इसे ग्यारहवीं कक्षा से शुरू किया गया है। व्यावसायिक शिक्षा का दायरा काफी विस्तृत है। विद्यार्थी अपनी पसन्द व क्षमता के आधार पर विभिन्न व्यावसायिक कोर्सों में प्रवेश ले सकते हैं। कॉमर्स-क्षेत्र में कार्यालय प्रबन्धन, आशुलिपि व कम्प्यूटर एप्लीकेशन, बैंकिंग, लेखापरीक्षण, मार्किटिंग एण्ड सेल्ज़मैनशिप आदि व्यावसायिक कोर्स आते हैं। इंजीनियरिंग क्षेत्र में इलैक्ट्रिकल, इलैक्ट्रॉनिक्स, एयर कंडीशनिंग एन्ड रेफरीजरेशन एवं ऑटोमोबाइल टेक्नॉलोजी आदि व्यावसायिक कोर्स आते हैं। कृषि क्षेत्र में डेयरी उद्योग, बागबानी तथा कुक्कुट (पोल्ट्री) उद्योग से सम्बन्धित व्यावसायिक कोर्स किए जा सकते हैं। गृह-विज्ञान क्षेत्र में स्वास्थ्य, ब्यूटी, फैशन तथा वस्त्र उद्योग आदि व्यावसायिक कोर्स आते हैं। हैल्थ एंड पैरामैडिकल क्षेत्र में मैडिकल लैबोरटरी, एक्स-रे टेक्नॉलोजी एवं हेल्थ केयर साइंस आदि व्यावसायिक कोर्स किए जा सकते हैं। आतिथ्य एवं पर्यटन क्षेत्र में फूड प्रोडक्शन, होटल मैनेजमैंट, टूरिज्म एन्ड ट्रैवल, बेकरी से सम्बन्धित व्यावसायिक कोर्स किए जा सकते हैं। सूचना तकनीक के तहत आई.टी. एप्लीकेशन कोर्स किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त पुस्तकालय प्रबन्धन, जीवन बीमा, पत्रकारिता आदि व्यावसायिक कोर्स किए जा सकते हैं।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

प्रश्न 1. व्यावसायिक शिक्षा से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तर - व्यवसाय या रोज़गार पर आधारित शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा कहलाती है।

प्रश्न 2. इंजीनियरिंग क्षेत्र में कौन-कौन से व्यावसायिक कोर्स आते हैं?

उत्तर - इंजीनियरिंग क्षेत्र में इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, एयर कंडीशनिंग एंड रेफ्रिजरेशन एवं ऑटोमोबाइल टेक्नोलॉजी आदि व्यावसायिक कोर्स आते हैं।

प्रश्न 3. आतिथ्य एवं पर्यटन क्षेत्र में कौन-कौन से कोर्स किए जा सकते हैं?

उत्तर - आतिथ्य एवं पर्यटन क्षेत्र में फूड प्रोडक्शन, होटल मैनेजमेंट, टूरिज्म एंड ट्रैवल, बेकरी से संबंधित व्यावसायिक कोर्स किए जा सकते हैं।

प्रश्न 4. 'क्षमता' तथा 'विस्तृत' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर - 1) क्षमता - शक्ति 2) विस्तृत - विशाल

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर - व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित कोर्स।

अनुच्छेद-लेखन

मेरी दिनचर्या

दिनचर्या से अभिप्राय है- नित्य किए जाने वाले काम। इन कामों को योजनाबद्ध तरीके से करना चाहिए। मैंने अपनी पढ़ाई, व्यायाम, खेलकूद, मनोरंजन व विश्राम आदि के आधार पर अपनी दिनचर्या बनायी हुई है। इसी के आधार पर मैं दिनभर काम करता हूँ। मेरा स्कूल सुबह आठ बजे लगता है, किन्तु मैं सुबह पाँच बजे उठकर पहले अपने पिता जी के साथ सैर को जाता हूँ। कुछ व्यायाम भी करता हूँ। घर आकर नहा-धोकर थोड़ी देर पढ़ता हूँ क्योंकि इस समय वातावरण में शान्ति होती है तथा दिमाग ताज़ा होता है। नाश्ता करके मैं सुबह स्कूल चला जाता हूँ।

स्कूल से छुट्टी के बाद खाना खाकर मैं पहले थोड़ी देर आराम करता हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मैं शाम को एक घंटा फुटबॉल खेलता हूँ। मैं खेलने के बाद घर आकर स्कूल से मिले होमवर्क को करता हूँ। होमवर्क के बाद मैं कठिन विषयों का अभ्यास भी करता हूँ। इसके बाद लगभग आधा घंटा टेलीविज़न पर अपना मनपसंद चैनल देखता हूँ। फिर खाना खाकर थोड़ी देर सैर भी करता हूँ। तत्पश्चात सरल विषयों का भी अध्ययन करता हूँ। मैं रात को सोने से पहले प्रभु का स्मरण करता हूँ और सो जाता हूँ। इस दिनचर्या से मेरा जीवन नियमित हो गया है।

मेरी पहली हवाई यात्रा

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में मेरे माता-पिता ने श्रीनगर जाने का प्रोग्राम बनाया। मेरे पिता जी ने इंटरनेट के माध्यम से 'गो एयर' कंपनी की टिकटें बुक करवा दीं। यात्रा के निर्धारित दिन हम टैक्सी से हवाई अड्डे पर पहुँच गए। हम पूछताछ करके 'गो एयर' कंपनी के काउंटर पर पहुँचे। हमनें अपना सामान चैक करवाया और उन्होंने बताया कि हमारा वह सामान सीधा जहाज़ में रखवा दिया जाएगा। हमें अपने सामान की रसीद और यात्री पास दे दिए गए। सामान जमा करवाकर हम उस ओर बढ़े जहाँ व्यक्तियों के हैंडबैग, मोबाइल, लैपटॉप, कैमरा आदि की चैकिंग की जा रही थी। कम्प्यूटर तकनीक के माध्यम से सामान की चैकिंग देखकर मैं दंग रह गई। पहली हवाई यात्रा का आनन्द उठाने के लिए मैं उत्सुक थी। इसके बाद हम निर्धारित स्थान पर पहुँच गए, हमारी टिकटें चैक हुईं और हम जहाज़ में जा बैठे। जहाज़ में विमान परिचारिकाओं ने हमारा स्वागत किया, हमें सीट बैल्ट बाँधने की हिदायतें दीं और कुछ ही पलों में जहाज़ ने उड़ान भरी और देखते ही देखते वह बादलों के बीच था। इतनी सुखद व रोमांचकारी यात्रा मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगी।

मेरे जीवन का लक्ष्य

मैं अब दसवीं कक्षा में पढ़ रहा हूँ। मैंने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया है। मैं बड़ा होकर एक सैनिक बनकर देश की सेवा करना चाहता हूँ। प्राय: अखबारों, रेडियो व टेलीविज़न के माध्यम से पाकिस्तान की ओर से भारत में आतंक फैलाने की घटनाएँ पढ़ने-सुनने को मिलती हैं। बांग्लादेश से भी भारत में घुसपैठ होती रहती है। चीन ने पहले ही भारत का एक बड़ा भू-भाग दबाकर रखा है और अब भी उसकी नीयत भारतीय ज़मीन पर कब्ज़ा करने की रहती है। हमने अंग्रेज़ों से एक लम्बी गुलामी के बाद बड़ी कुर्बानियाँ देकर आज़ादी प्राप्त की है। इसे कायम रखना प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य है। मैं अब कभी दोबारा भारत पर कोई भी आँच नहीं आने दूँगा। मुझे खुशी है कि मेरे जीवन के लक्ष्य निर्धारण में मेरा परिवार मेरे साथ है। मेरे मामा जी भी लम्बे समय से फौज में अफसर हैं। उन्होंने भी मुझे काफी प्रेरित किया है। उन्होंने अन्य विषयों के साथ-साथ विशेष रूप से गणित और विज्ञान में अच्छे अंक प्राप्त करने, शरीर को स्वस्थ व फुर्तीला रखने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करने तथा जीवन में निडरता व अनुशासन पर बल देने की बात कही है। निस्संदेह रास्ता कठिन है किन्तु मुझे विश्वास है कि आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति व मेहनत के सहारे मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लूँगा।

हम घर में सहयोग कैसे करें

जीवन में सहयोग का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। हमें सब के साथ सहयोग करना चाहिए। इसका प्रारम्भ घर से करना चाहिए। हमें घर में मिलजुलकर रहना चाहिए। पिता जी मेहनत से रोज़ी-रोटी कमाकर परिवार का पालन पोषण करते हैं। माँ घर के कार्यों जैसे-सा**फ़**-स**फ़ा**ई, खाना बनाना, बर्तन-कपड़े धोना आदि सभी काम करती हैं। इसलिए हमें भी घर के अन्य छोटे-मोटे कार्यों में माता-पिता का हाथ बंटाना चाहिए। हम बाज़ार से दूध, फल, सब्ज़ियाँ आदि लाकर घर में सहयोग दे सकते है। बिजली, पानी और टेलीफ़ोन का बिल समय पर जमा करवा सकते हैं। घर में उचित जगह पर चीज़ों को रखकर, खाना परोसकर, खाने के बाद खाने के टेबल से बर्तन उठाकर रसोईघर में रखकर, छोटे भाई-बहनों को पढ़ाकर हम घर में एक दूसरे को सहयोग दे सकते हैं। घर के छोटे सदस्य बगीचे में लगे पौधों को पानी देकर, इधर-उधर कागज़ न फेंककर तथा खिलौने आदि से खेलने के बाद उन्हें समेटकर सहयोग दे सकते हैं। घर में किसी के बीमार पड़ने पर उसकी दवाई का प्रबन्ध करके तथा उसकी सेवा करके भी हम सहयोग कर सकते हैं। इस प्रकार आपसी सहयोग से घर खुशहाल बन जाएगा।

गाँव का खेल मेला

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे गाँव किशनपुरा में वार्षिक खेल मेले का आयोजन किया गया। इन खेलों में ऊँची कूद, साइकिल दौड़, 100 मीटर, 200 मीटर, कबड्डी, कुश्ती तथा बैलगाड़ियों की दौड़ को शामिल किया गया। सारे गाँव को दुल्हन की तरह सजाया गया था। बच्चे, नौजवान, बूढ़े तथा स्त्रियाँ - सभी गाँव के खेल मेले को बड़े उत्साह से देखने पहुँचे। यह खेल मेला दो दिन तक चला। खेल का उद्‌घाटन गाँव के सरपंच द्वारा किया गया। उन्होंने खिलाड़ियों से अपील की कि वे लग्न तथा मेहनत से खेलें तथा भविष्य में देश का नाम रोशन करें। पहले दिन ऊँची-कूद, साइकिल दौड़, 100 तथा 200 मीटर खेलों का आयोजन किया गया। दूसरे दिन पहले कुश्ती, कबड्डी तथा साइकिल दौड़ का आयोजन किया गया। कुश्ती व कबड्डी के खेल ने सभी गाँववासियों का मनोरंजन किया। अंत में बैलगाड़ियों की दौड़ ने भी सभी का खूब मनोरंजन किया। इसके बाद 'भंगड़े' ने लोगों को नाचने पर मज़बूर कर दिया। अतिथि द्वारा जीतने वाले खिलाड़ियों को इनाम बाँटे गये। सचमुच, हमारे गाँव का खेल मेला बहुत ही रोचक तथा रोमाँचकारी होता है, जिसकी लोगों को साल भर प्रतीक्षा रहती है।

परीक्षा में अच्छे अंक पाना ही सफलता का मापदंड नहीं

यह ठीक है कि परीक्षा में अच्छे अंक पाने वाले का सभी जगह सम्मान होता है। उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और अच्छे भविष्य के लिए उसका रास्ता आसान हो जाता है। किन्तु सिर्फ यही सफलता का मापदंड नहीं हैं। कम अंक प्राप्त करके भी समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया जा सकता है। अकादमिक क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्र भी हैं। अपनी रुचियों और क्षमताओं को पहचानकर अपने मनपसंद क्षेत्र में परिश्रम व दृढ़निश्चय के सहारे कूद पड़ने पर अपार सफलता मिल सकती है। स्कूल स्तर पर औसत दर्जे के समझे जाने वाले वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने बाद में अद्‌भुत आविष्कार किए। मुंशी प्रेमचंद ने दसवीं कक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की और दो बार फेल होने के बाद इंटरमीडिएट कक्षा पास की। इसके बावजूद भी पूरे विश्व में वे हिंदी के उपन्यास सम्राट के रूप में जाने जाते हैं। सचिन तेंदुलकर, महेन्द्र सिंह धोनी क्रिकेट में अच्छे प्रदर्शन की वजह

से जाने जाते हैं न कि अकादमिक तौर पर। इसी तरह अनेक स्वतंत्रता सेनानी, खिलाड़ी, संगीतज्ञ, गायक, अभिनेता, राजनीतिज्ञ, व्यापारी आदि हुए हैं जिन्होंने अकादमिक तौर पर नहीं अपितु अपने-अपने क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के बल पर सफलता के शिखर को छुआ है। अत: अंकों की तरफ ध्यान न देकर आशावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए दृढ़ता के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

भ्रमणः ज्ञान वृद्धि का साधन

पाठ्य-पुस्तकें, अखबारें, मैगज़ीनें पढ़कर ज्ञानार्जन किया जा सकता है। रेडियो को सुनकर व टेलीविज़न पर देश-विदेश की झलकियों के बारे में सुनकर-देखकर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु भ्रमण आनन्द के साथ-साथ ज्ञान वृद्धि का अनुपम साधन है। भ्रमण का महत्त्व इस बात से भी लगाया जा सकता है कि पुस्तकों आदि में जो ज्ञान दिया गया है वह इतिहासकारों, विद्वानों, वैज्ञानिकों, खोजकर्त्ताओं व महापुरुषों के भ्रमण का ही परिणाम है। ऐतिहासिक व धार्मिक स्थानों का भ्रमण करके जो मन को शांति, सौन्दर्यानुभूति व ज्ञान मिलता है वह केवल किताबें पढ़ने पर नहीं हो सकता। इसी प्रकार ऊँचे-ऊँचे पर्वतों, नदियों, झीलों, झरनों, वनों, समुद्रों आदि पर भ्रमण करके ही प्राकृतिक सुंदरता का आनन्द व ज्ञान लिया जा सकता है। ऐसा ज्ञान सुनने-पढ़ने की अपेक्षा अधिक जीवंत होता है। भ्रमण करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। अन्य स्थानों पर भ्रमण की उत्सुकता बढ़ती है। उत्सुकता तो ज्ञान- -वृद्धि की मुख्य सीढ़ी है। निस्संदेह, भ्रमण के बिना तो ज्ञान अधूरा ही कहा जाएगा।

प्रकृति का वरदान: पेड़-पौधे

ईश्वर ने सम्पूर्ण जगत के प्राणियों को अनेक अमूल्य उपहार दिए हैं जिनमें से पेड़-पौधे मुख्य हैं। सचमुच, ये हमारे लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। इनका हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। पेड़ दुर्गन्ध लेते हैं और सुगन्ध लौटाते हैं अर्थात् ये कार्बन डाईऑक्साइड ग्रहण करके हमें ऑक्सीजन देते हैं। ये सूर्य की गर्मी को स्वयं सहन करके हमें छाया प्रदान करते हैं, इसलिए ये परोपकारी हैं। इनसे हमें फल और फूल, ईंधन, गोंद, रबड़, फर्नीचर की लकड़ी, कागज़ आदि मिलते हैं। पेड़ पौधों से वातावरण शुद्ध बनता है तथा भूमि की उर्वरता बढ़ती है क्योंकि इनकी पत्तियाँ खाद बनाने के काम आती हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी इनकी अहम भूमिका है। पेड़ों के पत्तों, जड़ों, फलों, फूलों तथा छाल आदि से कई प्रकार की दवाइयाँ बनती हैं। धार्मिक दृष्टि से तो पेड़ों का बहुत महत्त्व है। ऐसे भी कई पेड़ पौधे हैं जिन्हें पूजा जाता है जैसे-तुलसी, पीपल, केला, बरगद, आम आदि। पेड़ों का सम्बन्ध रोज़गार से भी जुड़ा है। पेड़ों से लोग टोकरियाँ, बैग, चटाइयाँ, पेंसिलें, फर्नीचर आदि बनाकर अपना रोज़गार करते हैं। अत: पेड़-पौधों का इतना महत्त्व होने पर इनका संरक्षण करना चाहिए। ये हमें लाभ ही देंगे। कहा भी है-पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ।

अपने नये घर में प्रवेश

हम कुछ समय पहले किराए के मकान में रह रहे थे, किन्तु मेरे पिता जी ने एक प्लॉट खरीद लिया था। हम वहाँ पिछले डेढ़ साल से नया घर बनवाने में जुटे थे। पिछले सप्ताह नया घर बनकर तैयार हो गया था। नए घर के अनुरूप नए पर्दे, नया फर्नीचर खरीदना स्वाभाविक ही था। मेरे पिता जी ने मेरे और मेरी बहन के लिए पढ़ाई करने का एक कमरा अलग से बनवाया था। उन्होंने हमारे पढ़ने वाले कमरे के लिए स्ट्डी टेबल, कुर्सियाँ और दो छोटी-छोटी अलमारियाँ बनवायी थीं। उस घर में प्रवेश करने के लिए घर का प्रत्येक सदस्य उत्सुक था। नए स्टडी रूम की बात सोचकर तो मैं रोमांचित हो जाता था। रविवार को गृह-प्रवेश था। हमने अपने सभी रिश्तेदारों, मित्रों को गृह प्रवेश के अवसर पर सादर आमंत्रित किया था। इस अवसर पर पूजा का विधान होता है अतः ठीक आठ बजे पूजा शुरू हो गयी। पूजा में सभी शामिल हुए। पिता जी ने पूजा के बाद दोपहर के भोजन का बढ़िया प्रबन्ध किया हुआ था। सभी ने भोजन किया और हमें नए घर में प्रवेश पर बहुत-बहुत बधाइयाँ दीं। हमने सभी का धन्यवाद किया। सचमुच, नए घर में प्रवेश करके सारे परिवार की खुशी का ठिकाना न था।

कैरियर चुनाव में स्वमूल्यांकन

किसी भी किशोर के लिए कैरियर का चुनाव करना एक चुनौती होती है। दसवीं कक्षा में रहते या दसवीं कक्षा के तुरन्त बाद कैरियर का चुनाव करना आज की माँग है। वैसे तो इससे भी पहले ही कुछ सजग विद्यार्थी यह तय कर लेते हैं कि उन्हें जीवन में किस दिशा की ओर जाना है। इसके लिए किशोर को अपना मूल्यांकन स्वयं करना होगा। सबसे पहले उसे विभिन्न तरह के कैरियर की जानकारी रखनी होगी तभी वह उनमें से अपनी क्षमता, रुचि और आर्थिक स्थिति आदि के आधार पर कैरियर का चुनाव कर सकेगा। इसके लिए समाचार-पत्रों, मैगज़ीनों, रेडियो, टेलीविज़न से पढ़-सुन- देखकर अथवा कैरियर प्रदर्शनियों में जाकर अपना ज्ञान बढ़ा सकता है। उसे उन गतिविधियों की ओर ध्यान बनाए रखना होगा जिनमें वह अधिक रुचि रखता है। क्या पता कौन-सी गतिविधि उसे उसकी मंजिल तक ले जाए। उसे अपना ध्येय, ध्येय को प्राप्त करने की योजना, समय आदि की तरफ भी बराबर देखना होगा। उसे अपनी कमज़ोरियों से निपटने की हर संभव कोशिश करनी होगी तथा खाली समय का सदुपयोग करना होगा। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए, अपने आत्मविश्वास को बनाए रखते हुए उसे सही कैरियर का चुनाव करना होगा तभी वह अपने जीवन को सुखकर बना सकता है।

विद्यार्थी और अनुशासन

अनु+शासन के मेल से बना है - अनुशासन । 'अनु' **अर्थात्** पीछे या साथ और शासन का अर्थ है-नियम, विधि अथवा नियंत्रण आदि। अतः अनुशासन का अर्थ है शासन के बनाए नियमों पर चलना। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। विद्यार्थी जीवन व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन की नींव है। आज के विद्यार्थी कल के नेता हैं। विद्यार्थी को श्रेणियों में पास होने पर डिग्रियाँ देने से ही शिक्षा पूर्ण नहीं हो जाती अपितु इनके साथ-साथ विद्यार्थी को अनुशासित बनाना भी शिक्षा का उद्देश्य है। उनमें अनुशासन को इस तरह विकसित करना चाहिए कि वे उसे जीवन का अभिन्न अंग मानें। विद्यालय के नियमों का पालन करना, कक्षा में शांतिपूर्वक बैठकर अध्यापकों द्वारा पढ़ाए जा रहे पाठ को ध्यानपूर्वक सुनना, समय का सदुपयोग करना, पुस्तकालय में चुपचाप बैठकर पढ़ना आदि बातें विद्यार्थी के अनुशासन पालन के अंतर्गत आती हैं। विद्यार्थी को कभी भी अनुशासनहीनता का मार्ग नहीं अपनाना चाहिए क्योंकि एक अनुशासित विद्यार्थी ही एक अच्छा नागरिक बनकर देश के विकास में अपना योगदान दे सकता है।

जनसंचार के माध्यम

प्रत्यक्ष रूप से अपनी बात दूसरों को कहने की अपेक्षा समाज के हर वर्ग के साथ संवाद स्थापित करना जन सम्पर्क या जनसंचार कहलाता है। प्राचीन समय में विचारों, सूचनाओं व आदेशों को शिलालेख, भोजपत्र, मुनादी आदि के द्वारा लोगों तक पहुँचाया जाता था। लाउडस्पीकर के माध्यम से भी संदेश पहुँचाया जाता रहा है। समय के साथ-साथ तकनीकी विकास होने पर संचार के साधन भी आधुनिक हो गए हैं। आज समाचार पत्र, मैगज़ीनें, रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा, इंटरनेट तथा मोबाइल जनसंचार के सशक्त माध्यम हैं। इनका शिक्षा, कला, व्यवसाय, मनोरंजन, व्यापार, राजनीति आदि क्षेत्रों में अद्‌भुत योगदान है। समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेष रूप से युवा वर्ग, पर तो इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। उसके रहन-सहन, बोलचाल, वेशभूषा तथा व्यवहार आदि पर भी गहरा असर पड़ा है। किन्तु समाज पर इनकी अधिकता व नई-नई तकनीकों के कारण मानव की मानसिक शाँति को भी भंग किया है। इसके अतिरिक्त ड्रग्स, हिंसा, हत्याएँ व साइबर क्राइम भी बढ़ रहे हैं। अब समाज को तय करना है कि वह इनका सदुपयोग करेगा अथवा दुरुपयोग करेगा।

भ्रूण-हत्या : एक जघन्य अपराध

भारत पूरे विश्व में अहिंसा, शिक्षा, शांति, धर्म और सद्भावना के लिए जाना जाता है किन्तु कन्या-भ्रूण-हत्या जैसे अनैतिक एवं अमानवीय कुकृत्य से इस देश की महानता खंडित हुई है। विज्ञान की अल्ट्रासाउंड तकनीक ने जन्म से पूर्व ही भ्रूण-लिंग की जानकारी देकर कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा दिया है। खेद की बात तो यह है कि अशिक्षित व गरीब लोगों के साथ-साथ शिक्षित व सम्पन्न वर्ग भी इस कुकृत्य में संलिप्त है। आज भी अधिकांश लोग कन्या के जन्म पर शोक मनाते हैं या उसके जन्म से संतुष्ट नहीं होते हैं। एक तर**फ़** तो लोग नवरात्रों में बालिकाओं का पूजन करते हैं पर दूसरी ओर कन्या-भ्रूण-हत्या को अंजाम देकर दोहरे व्यक्तित्व को दर्शाते हैं। लोगों को यही लगता है कि पुत्र ही वंश को आगे बढ़ाता है और बुढ़ापे का सहारा है जबकि सच यह है कि लड़की शादी के बाद दोनों कुलों को रोशन करती है। भ्रूण-हत्या अनैतिक ही नहीं अपितु एक अपराध भी है। इस अपराध से निपटने के लिए सरकार ने सख्त कानून भी बनाए हैं लेकिन केवल कानून बना देना ही समस्या का समाधान नहीं है। लोगों को अपनी सोच बदलनी होगी जो कन्या भ्रूण हत्या को रोकने में मील का पत्थर साबित होगी।

(पत्र - **लेखन)**

1**) अपनी गलती के लिए क्षमा याचना करते हुए अपने स्कूल के प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए।**

सेवा में
प्रधानाचार्य
बाल विकास विद्यालय
हैदराबाद।
दिनांक: 12.08.2022
विषय**:** क्षमा याचना के लिए प्रार्थना पत्र।
मानीय महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में दसवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मुझसे एक गलती हुई है जिसके लिए मैं आपसे क्षमा माँगना चाहता हूँ।

मैंने आज लाइब्रेरी के पीरियड में चोरी से एक किताब से दो पन्ने फाड़ लिए थे। मेरी इस धृष्टता को अध्यापक ने देख लिया। मेरी चोरी पकड़ी गयी। अब मैं बहुत ही शर्मिंदा हूँ। यह मेरी पहली गलती है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं भविष्य में कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा।

कृपया मेरी इस गलती को माफ कर दीजिए। मैं आपका अति आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
शिशुपाल सिंह
कक्षा-दसवीं-ए
रोल नम्बर-13

2**) विषय बदलने के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्या को पत्र लिखिए।**

सेवा में
प्रधानाचार्य
उत्थान पब्लिक स्कूल
चंडीगढ़ ।
दिनांक: 17.09.2022
विषय: विषय बदलने के लिए प्रार्थना पत्र
माननीय महोदया,

सविनय निवेदन यह है कि मैं दसवीं-सी कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मैं लिए गए विषयों में से एक विषय बदलना चाहता हूँ।

इस कक्षा के लिए प्रवेश फार्म भरते समय मैंने 'चित्रकला' विषय को चुना था किन्तु अब मुझे इस विषय को पढ़ते समय कठिनाई हो रही है। मैं इस विषय के स्थान पर 'खेतीबाड़ी' विषय पढ़ना चाहता हूँ। मेरी खेतीबाड़ी में बहुत रुचि है।

अतः आपसे विनती है कि मुझे कृपया विषय परिवर्तन की आज्ञा दी जाए। इस कृपा के लिए मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नीरज वर्मा
कक्षा दसवीं-सी

रोल नम्बर- 08

3) कक्षा की समस्याओं को हल करवाने के सम्बन्ध में अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य
सरकारी हाई स्कूल
मेरठ।
दिनांक: 23.05.2022
विषय: कक्षा की समस्याओं को हल करवाने हेतु प्रार्थना पत्र।
माननीय महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं दसवीं कक्षा का मॉनीटर होने के नाते आपका ध्यान अपनी कक्षा की कुछ समस्याओं की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारी कक्षा में दो पंखे लगे हुए हैं जिनमें से केवल एक ही पंखा चलता है। अन्य कक्षाओं में चार-चार पंखे लगे हुए हैं। आजकल गर्मी इतनी बढ़ गयी है कि एक पंखे के सहारे सारी कक्षा का कमरे में बैठना दूभर हो गया है। इसके अतिरिक्त ब्लैक-बोर्ड की मरम्मत व पेंट होने वाला है तथा तीन ट्यूब लाइट्स फ़्यूज होने के कारण नयी लगने वाली हैं।

अतः आपसे विनती की जाती है कि हमारी कक्षा की इन समस्याओं को हल करवाने की ओर ध्यान दीजिए। हमारी सारी कक्षा आपकी बहुत आभारी रहेगी।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
गोविन्द शर्मा
मॉनीटर
कक्षा-दसवीं-बी
रोल नम्बर-25

4) नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर उनसे अपने क्षेत्र/मुहल्ले की सफाई कराने के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में
स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम
सुंदर नगर।
दिनांक: 11.08.2022
विषय**:** सुन्दर नगर की सफ़ाई कराने के लिए प्रार्थना पत्र ।
माननीय महोदय,
मैं आपका ध्यान सुन्दर नगर में जगह-जगह फैली गंदगी की ओर दिलाना चाहता हूँ।

मैं सुन्दर नगर का निवासी हूँ। मुझे यह लिखते हुए बड़ा ही अफसोस हो रहा है कि हमारे क्षेत्र का नाम ही सुन्दर नगर है जबकि सत्य यह है कि सुन्दरता तो इससे कोसों दूर है। इस क्षेत्र के चारों ओर गंदगी फैली हुई है। यहाँ कूड़ाघर से कूड़ा उठाने वाली गाड़ी नियमित रूप से नहीं आती जिसके कारण कूड़ा इकट्ठा होता रहता है। इससे चारों ओर दूर-दूर तक दुर्गन्ध फैल गई है। मक्खी-मच्छर इतने हो गए हैं कि मलेरिया और डेंगू का प्रकोप बढ़ गया है। इस कूड़ाघर को कुत्तों, सूअरों, गायों, भैंसों आदि ने अपना अड्डा बना रखा है। दुर्गन्ध के साथ-साथ इन जानवरों के डर के कारण राहगीरों का चलना-फिरना भी दूभर हो गया है। यहाँ के निवासियों ने कई बार सफ़ाई कर्मचारियों से भी बात की है किन्तु उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती।

अतः मैं सुन्दर नगर का प्रतिनिधि होने के नाते आपसे अनुरोध करता हूँ कि जल्दी से जल्दी इस क्षेत्र में सफाई अभियान चलाकर लोगों को इस गंदगी भरे वातावरण से मुक्त करें।

मैं आशा करता हूँ कि आप इस सम्बन्ध में शीघ्र ही कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद सहित।
चंपक लाल
मकान नम्बर- 45
सुन्दर नगर
मोबाइल: 1666868684
champaklal@yahoo.co.in

5) पंजाब रोडवेज, लुधियाना के महाप्रबन्धक को बस में छूट गए सामान के बारे में आवेदन पत्र लिखिए।

सेवा में
महाप्रबन्धक
पंजाब रोडवेज
लुधियाना।
दिनांक: 11.08.2022
विषय: बस में छूट गए सामान के बारे में आवेदन पत्र ।
मान्यवर,

सविनय निवेदन यह है कि मैंने दिनांक 10 अगस्त, 2022 को शाम 6.00 बजे समराला से पी. बी. 2468 नम्बर की पंजाब रोडवेज़, लुधियाना की बस चंडीगढ़ जाने के लिए पकड़ी थी। उस समय बस में काफ़ी भीड़ थी, अतः मुझे खड़े होकर ही सफ़र करना पड़ा। मैंने अपना बैग उस समय बस में सामान रखने वाली जगह पर ऊपर रख दिया था। जब चंडीगढ़ का बस अड्डा आया तो मैं अपना बैग लिए बिना ही नीचे उतर गया। जब मैं घर पहुँचा तो मुझे याद आया कि मैं अपना बैग बस में हो भूल आया हूँ। मैंने उसी समय पंजाब रोडवेज, लुधियाना के कार्यालय में इस सम्बन्ध में फ़ोन भी किया था, किन्तु मुझे कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। मुझे ऐसा लगता है कि मेरा बैग तो बस के परिचालक ने आपके पास जमा करवा दिया होगा।

मैं यहाँ बताना चाहता हूँ कि मेरे बैग का रंग नीला है। उसके अन्दर बनी जेब में मेरी तस्वीर भी पड़ी हुई है। इसके अतिरिक्त मेरा पहचान पत्र तथा कुछ ज़रूरी कागज़ात भी पड़े हुए हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आप मेरे बैग का जल्दी से जल्दी पता लगाकर मुझे सूचित करेंगे।

धन्यवाद सहित।
राम प्रकाश
मकान नम्बर 7467
सेक्टर-48
चंडीगढ़।
मोबाइल 1765498056

6) कार्यकारी अधिकारी, विद्युत बोर्ड के नाम बिजली की सप्लाई में कमी के सम्बन्ध में आवेदन पत्र लिखिए।

सेवा में
कार्यकारी अधिकारी
विद्युत बोर्ड
विकास नगर ।
दिनांक: 26.10.2022
विषय: बिजली की सप्लाई में कमी के सम्बन्ध में आवेदन पत्र ।
माननीय महोदय,

मैं आपका ध्यान विकास नगर में बिजली की सप्लाई में कमी की ओर दिलाना चाहती हूँ।

मैं विकास नगर की निवासी हूँ। इस क्षेत्र में बिजली की बहुत ही कम सप्लाई की जाती है जिसके कारण यहाँ के लोगों को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है। आजकल भयंकर गर्मी ने भी विकराल रूप धारण किया हुआ है। छोटे-छोटे बच्चों, बीमारों और वृद्धों के लिए तो बिना बिजली के रहना असह्य हो गया है। विद्यार्थी वर्ग के लिए तो बिजली की कम सप्लाई सिर दर्द बनी हुई है। दिन हो या रात, बिजली कभी आती है और कभी चली जाती है। इस तरह सारा दिन बिजली के साथ हमारा आँख-मिचौनी का सिलसिला चलता रहता है। कभी-कभी तो दिन में सिर्फ दो घंटे ही बिजली आती है। बिजली की इस कमी के कारण हमारी पढ़ाई पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

यहाँ यह भी बताने की चेष्टा की जा रही है कि हमारे आस-पास के क्षेत्रों में बिजली की बिल्कुल कमी नहीं है। अतः आपसे अनुरोध है कि यदि कहीं कोई खराबी है तो उसे तुरन्त ठीक करवाने की कृपा करें।

मैं आशा करती हूँ कि आप इस सम्बन्ध में शीघ्र ही कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद सहित।
हर्षिता
मकान नम्बर-78
विकास नगर।
मोबाइल: 2656487581

7. ' रोज़ाना भारत', पंजाब के समाचार पत्र के मुख्य सम्पादक के नाम 'बालश्रम एक अपराध' विषय पर एक पत्र लिखिए।

सेवा में
मुख्य सम्पादक
'रोज़ाना भारत'
पंजाब।
दिनांक: 23.11.2022
विषय: 'बालश्रम: एक अपराध'।
मान्यवर,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र 'रोज़ाना भारत' के माध्यम से 'बालश्रम एक अपराध' विषय पर जनता का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ।

यद्यपि बालश्रम को भारत सरकार द्वारा एक अपराध घोषित किया गया है, फिर भी हमारे इर्द-गिर्द ढाबों, कैन्टीनों, घरों, दुकानों, मोटर गैरजों, रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंडों आदि पर न जाने कितने ही ऐसे बच्चे बालश्रम में नियुक्त हैं जिनकी आयु अभी पढ़ने की है। जहाँ एक ओर इन्हें इनके काम की पूरी मज़दूरी नहीं मिलती वहीं दूसरी ओर इनका शोषण भी किया जाता है। मैं यहाँ यह भी बताना चाहती हूँ कि पढ़े-लिखे व आर्थिक रूप से सशक्त लोगों के द्वारा भी घर के छोटे-मोटे कामों और बच्चों की देख-रेख आदि के लिए इन बाल श्रमिकों को ही घरों में रखा जाता है। यदि इस तरह पढ़े-लिखे लोग ही बालश्रम जैसे सामाजिक कलंक में संलिप्त रहेंगे तो दूसरों से क्या अपेक्षा की जा सकती है?

सरकार द्वारा बालश्रम (निषेध व नियमन) अधिनियम 1986 एवं अन्य कई कानूनों को बनाकर, उनमें समय-समय पर आवश्यकतानुसार संशोधन किया जाता है किन्तु कानून बनाने के साथ-साथ उसका कठोरता से पालन करना भी ज़रूरी है। कुछ सतर्क नागरिकों, पत्रकारों, समाज-सुधारकों, बाल संरक्षण समितियों के द्वारा बालश्रम के विरुद्ध आवाज़ उठायी भी जाती है, लोगों को जागरूक भी किया जाता है किन्तु जब तक सभी नागरिक सरकार के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर नहीं चलेंगे तब तक इसमें सफलता नहीं मिल सकती। मैं आपके इस पत्र के माध्यम से आगे यह कहना चाहती हूँ कि जो भी सरकार के द्वारा बनाए गए बालश्रम के बनाए कानूनों को तोड़ता है,उसके साथ कठोरता से निपटा जाए।

आपके समाचार पत्र के माध्यम से मैं यह आशा करती हूँ कि सम्बन्धित अधिकारी इस ओर उचित कदम उठाएंगे व जनता उनका साथ देगी।

धन्यवाद सहित।
विनीता शर्मा
मकान नम्बर- 145, सेक्टर-18, पानीपत
मोबाइल नम्बर- 1876543981

8) व्यापारी वर्ग तथा विभिन्न संगठनों द्वारा घरों, शैक्षिक संस्थानों/कार्यालयों, मार्गदर्शकों आदि पर पोस्टर/पम्फलैट्स लगाने से जनता को होने वाली असुविधा पर अपने विचार प्रकट करते हुए 'लोक जागरण' नामक समाचार पत्र के मुख्य सम्पादक को पत्र लिखिए।

सेवा में
मुख्य सम्पादक
'लोक जागरण'
राजस्थान।
दिनांक: 08.12.2022
विषय**:** घरों, शैक्षिक संस्थानों/कार्यालयों, मार्गदर्शकों आदि पर पोस्टर लगाकर जनता को होने वाली असुविधा के सम्बन्ध में पत्र।
मान्यवर,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार पत्र 'लोक जागरण' के माध्यम से घरों, शैक्षिक संस्थानों/कार्यालयों, मार्गदर्शकों आदि पर पोस्टर लगाने से जनता को होने वाली असुविधाओं की ओर प्रशासन का ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

व्यापारी वर्ग अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए विभिन्न बड़े-बड़े पोस्टरों को घरों, शैक्षिक संस्थानों/ कार्यालयों, मार्गदर्शकों आदि पर चिपका देते हैं। इसी तरह कुछ संगठन खेल प्रतियोगिताओं, धार्मिक कार्यक्रमों या अन्य किसी भी तरह के कार्यक्रम से सम्बन्धित पोस्टर चिपका देते हैं। इससे दीवारें खराब होती हैं। इनके अतिरिक्त ट्यूशन/कोचिंग सेंटरों, ब्यूटिशनों, हकीमों आदि के द्वारा भी पोस्टरों या पम्फलैट्स को बड़ी शान से मार्गदर्शकों के ऊपर चिपका दिया जाता है, जिससे लोगों को स्थान ढूँढ़ने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। हैरानी की बात है कि जो मार्गदर्शक लोगों की सहूलियत के लिए बने होते हैं, उन्हीं के ऊपर लोगों द्वारा पोस्टर चिपका दिये जाते हैं।

अतएव मैं आपके पत्र के माध्यम से प्रशासन से अनुरोध करता हूँ कि इस तरह जगह-जगह पोस्टर लगाने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। यदि पोस्टर लगाने का स्थान निर्धारित कर दिया जाए तो सम्भवतः इस समस्या का निवारण हो सकता है। फिर भी जो इस नियम का पालन नहीं करता तो उसे जुर्माना लगाना चाहिए।

आशा है कि प्रशासन व जनता इस ओर ध्यान देगी।

सधन्यवाद।
दीदार सिंह
देवीगढ़।
मोबाइल नम्बर-1645890800.

9. 'जन चेतना' मुम्बई के समाचार पत्र के मुख्य सम्पादक के नाम सड़क दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए दुर्घटनाओं को रोकने के सुझाव सम्बन्धी एक पत्र लिखिए।

सेवा में
मुख्य सम्पादक
'जन चेतना'
मुम्बई।
दिनांक: 26.12.2022
विषय: सड़क दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए दुर्घटनाओं को रोकने के सुझाव सम्बन्धी पत्र।
मान्यवर,

मैं आपके लोकप्रिय समाचारपत्र 'जन चेतना' के माध्यम से सड़क दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए दुर्घटनाओं को रोकने के सुझाव देना चाहता हूँ।

आजकल सड़क दुर्घटनाओं में निरंतर वृद्धि हो रही है। सड़कों पर आम आदमी का चलना दूभर हो गया है। नकली लाइसेंस धारकों, अप्रशिक्षित वाहन चालकों तथा नशेड़ियों के द्वारा खतरनाक व बिना यातायात के नियमों का पालन किए जाने पर सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। कई बार अधूरे कागज़ात होने के कारण वाहन-चालक चालान के डर से तेज़ी से बच निकलने के कारण भी दुर्घटना का शिकार हो जाता है। ट्रकों, ट्रालियों, रेहड़ियों आदि पर अनुचित ढंग से जरूरत से अधिक लादा गया सामान तो अक्सर दुर्घटना का कारण बनता है। इसके अलावा वाहनों से होने वाला ध्वनि-प्रदूषण भी चिंता का विषय है।

निरंतर बढ़ रही दुर्घटनाओं को रोकने के लिए यातायात कर्मचारियों को गलत पार्किंग करने वालों, निर्धारित गति से तेज़ वाहन चलाने वालों, नशेड़ी चालकों व अन्य यातायात के नियमों की अवहेलना करने वालों के साथ सख्ती से निपटना चाहिए। ऐसा प्रावधान होना चाहिए कि जो निर्धारित चालानों की संख्या को पार कर जाता है, उसका सदा के लिए लाइसेंस रद्द कर देना चाहिए। मैं ऐसा मानता हूँ कि यदि प्रशासन इस दिशा में सख्त होगा तो किसी की क्या मजाल कि वह नियमों की अवहेलना करे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर लोगों को यातायात के नियमों के प्रति जागरूक करना चाहिए।

आशा है कि समाचार पत्र में इस लेख को पढ़कर जनता व प्रशासन इस ओर ज़रूर ध्यान देगी।

सधन्यवाद।
विराट कुमार
शिवाजी नगर।
मुम्बई
मोबाइल नम्बर-1865899076

अनुवाद

निम्नलिखित पंजाबी के गद्यांशों का हिंदी में अनुवाद करें

1. ਮੈਨੂੰ ਜਦੋਂ ਵੀ ਆਪਣਾ ਬਚਪਨ ਯਾਦ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮੇਰਾ ਦਿਲ ਕਰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਉਸੇ ਬਚਪਨ ਵਿਚ ਗੁਮ ਹੋ ਜਾਵਾਂ | ਮਨ ਬਚਪਨ ਦੀਆਂ ਖੇਡਾਂ ਵਲ ਚਲਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਪਤੰਗ ਉਡਾਣਾ, ਦੋਸਤਾਂ ਨਾਲ਼ ਸਾਈਕਲ ਦੀਆਂ ਰੇਸਾਂ ਲਗਾਉਣਾ, ਬੰਟੇ ਖੇਡਣੇ ਅਤੇ ਰਾਤ ਨੂੰ ਲੁਕਣ-ਮੀਟੀ ਖੇਡਣਾ ਮੈਨੂੰ ਅੱਜ ਵੀ ਯਾਦ ਹੈ । ਤਪਦੀ ਗਰਮੀ ਵਿਚ ਬਾਗ਼ ਵਿੱਚ ਅੰਬ ਤੋੜ ਕੇ ਖਾਣੇ ਅਤੇ ਬਹੁਤ ਤੇਜ਼ ਮੀਂਹ ਵਿਚ ਨਹਾਉਣਾ ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਚੰਗਾ ਲਗਦਾ ਸੀ ।

अनुवाद- मुझे जब भी अपना बचपन याद आता है तो मेरा दिल करता है कि मैं अपने उस बचपन में गुम हो जाऊँ। मन बचपन की खेलों की तरफ़ चला जाता है। पतंग उड़ाना, मित्रों के साथ साइकिल की दौड़ें लगाना, कंचे खेलने और रात को छुपम-छुपाई खेलना मुझे आज भी याद है। तपती गर्मी में बाग़ में आम तोड़ कर खाने और बहुत तेज़ बारिश में नहाना मुझे बहुत अच्छा लगता था।

2. ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਆਚਰਣ ਹੀ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ । ਕੁਝ ਲੋਕ ਕੇਵਲ ਪੈਸੇ ਦੀ ਹੇਰਾਫੇਰੀ ਅਤੇ ਘਪਲੇਬਾਜ਼ੀ ਨੂੰ ਹੀ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਇਸ ਵਿਚ ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਮਿਲਾਵਟ, ਅਨਿਆਂ, ਸ਼ਿਫਾਰਿਸ, ਕਾਲਾਬਾਜ਼ਾਰੀ, ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਅਤੇ ਧੋਖਾ ਆਦਿ ਸਭ ਕੁਝ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਾਰਾ ਸਮਾਜ ਇੱਕ ਜੁਟ ਹੋ ਕੇ ਹੀ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਰੂਪੀ ਇਸ ਦੈਂਤ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ।

अनुवाद - भ्रष्ट आचरण ही भ्रष्टाचार होता है। कुछ लोग केवल पैसे की हेराफेरी और घपलेबाज़ी को ही भ्रष्टाचार कहते हैं। पर इसके अतिरिक्त मिलावट, अन्याय, सिफ़ारिश, कालाबाज़ारी, शोषण और धोखा आदि सब कुछ आ जाता है। सारा समाज एकजुट हो कर भ्रष्टाचार रूपी इस दैत्य को समाप्त कर सकता है।

3) ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਮਿਹਨਤ ਦਾ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵ ਹੈ । ਮਿਹਨਤੀ ਵਿਅਕਤੀ ਵਿਚ ਜੇਕਰ ਦ੍ਰਿੜ ਸੰਕਲਪ ਵੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਹ ਕਈ ਵਾਰ ਅਜਿਹੇ ਕੰਮ ਵੀ ਕਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਆਮ ਇਨਸਾਨ ਨੂੰ ਅਸੰਭਵ ਲਗਦੇ ਹਨ । ਸੱਚਾ ਮਿਹਨਤੀ ਵਿਅਕਤੀ ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਕੰਮ ਵਿਚ ਅਸਫ਼ਲ ਵੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਆਪਣੀਆਂ ਕਮੀਆਂ ਦਾ ਪਤਾ ਲਗਾ ਕੇ ਵਧੇਰੇ ਸ਼ਕਤੀ ਨਾਲ ਉਸ ਕੰਮ ਵਿਚ ਜੁੱਟ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ।

अनुवाद- जीवन में मेहनत का बहुत महत्त्व है। मेहनती व्यक्ति में यदि दृढ़ संकल्प भी हो तो वह कई बार ऐसे काम भी कर जाता है जो कि आम इन्सान को असंभव लगते हैं। सच्चा मेहनती व्यक्ति यदि किसी काम में असफ़ल भी हो जाता है तो वह अपनी कमियों का पता लगा कर अधिक शक्ति से उस काम में जुट जाता है।

4. ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਤਨ ਨੂੰ ਤੰਦਰੁਸਤ ਰੱਖਣ ਲਈ ਕਸਰਤ ਕਰਨ ਦੀ ਆਦਤ ਪਾਉਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਕਸਰਤ ਨਾਲ਼ ਕੇਵਲ ਤਨ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਸਾਡਾ ਮਨ ਵੀ ਚੰਗਾ ਬਣਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਤਨ ਅਤੇ ਮਨ ਦੋਵੇਂ ਤੰਦਰੁਸਤ ਹੋ ਜਾਣਗੇ ਤਾਂ ਸਾਡੇ ਮਨ ਵਿਚ ਚੰਗੇ ਵਿਚਾਰ ਆਉਣਗੇ। ਚੰਗੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਨਾਲ ਹੀ ਅਸੀਂ ਚੰਗੇ ਕਰਮ ਕਰਾਂਗੇ।

अनुवाद- हमें अपने तन को स्वस्थ रखने के लिए कसरत की आदत डालनी चाहिए। कसरत के साथ केवल तन ही नहीं अपितु हमारा मन भी अच्छा बनता है। जब तन और मन दोनों स्वस्थ हो जाएंगे तो हमारे मन में अच्छे विचार आएंगे। अच्छे विचारों से हो हम अच्छे कार्य करेंगे।

5. ਚੰਗੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਸੁੱਖ ਅਤੇ ਖ਼ੁਸ਼ੀਆਂ ਦਾ ਖ਼ਜ਼ਾਨਾ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਔਖੀ ਘੜੀ ਵਿਚ ਇਹ ਸਾਡਾ ਮਾਰਗ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਕਿਤਾਬਾਂ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਲਈ ਕਿਤਾਬਾਂ ਕਿਸੇ ਖ਼ਜ਼ਾਨੇ ਤੋਂ ਘੱਟ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀਆਂ। ਲੋਕਮਾਨਿਆ ਤਿਲਕ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਸੀ ਕਿ– 'ਮੈਂ ਨਰਕ ਵਿਚ ਵੀ ਕਿਤਾਬਾਂ ਦਾ ਸਵਾਗਤ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿਉਂਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਉਹ ਸ਼ਕਤੀ ਹੈ ਕਿ ਜਿੱਥੇ ਇਹ ਹੋਣਗੀਆਂ ਉੱਥੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਸਵਰਗ ਬਣ ਜਾਏਗਾ।'

अनुवाद - अच्छी पुस्तकें सुख और प्रसन्नताओं का **ख़**ज़ाना होती हैं। कठिन घड़ी में ये हमारा मार्गदर्शन करती हैं। जिन लोगों को पुस्तकों से प्रेम होता है, उनके लिए पुस्तकें किसी **ख़**ज़ाने से कम नहीं होतीं। लोकमान्य तिलक का कहना था 'मैं नर्क में भी पुस्तकों का स्वागत करूँगा। क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी वहाँ अपने आप स्वर्ग बन जाएगा।'

6. ਓਜ਼ੋਨ ਪਰਤ ਸੂਰਜ ਤੋਂ ਨਿਕਲਣ ਵਾਲੀਆਂ ਨੁਕਸਾਨਦਾਇਕ ਕਿਰਣਾਂ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਪਰਾਬੈਂਗਣੀ ਕਿਰਣਾਂ ਨੂੰ ਵਾਯੂਮੰਡਲ ਵਿਚ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਕਰਨ ਤੋਂ ਰੋਕਣ ਲਈ ਫਿਲਟਰ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ । ਫ੍ਰਿਜ, ਏ.ਸੀ. ਉਪਕਰਣ ਆਦਿ ਵਿਚ ਇਸਤੇਮਾਲ ਹੋਣ ਵਾਲੀਆਂ ਜ਼ਹਿਰੀਲੀਆਂ ਗੈਸਾਂ ਇਸ ਪਰਤ ਨੂੰ ਨੁਕਸਾਨ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ । ਇਸ ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਏ.ਸੀ, ਉਪਕਰਣਾਂ ਦਾ ਘੱਟ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ।

अनुवाद — ओज़ोन परत सूर्य से निकलने वाली हानिकारक किरणों के साथ-साथ पराबैंगनी किरणों को वायुमंडल में प्रवेश करने से रोकने के लिए फिल्टर के रूप में काम करती हैं। फ्रिज, ए०सी० उपकरण आदि में प्रयुक्त होने वाली विषैली गैसें इस परत का नुकसान करती हैं। इसलिए हमें ए०सी० उपकरणों का कम प्रयोग करना चाहिए।

7. ਹਿੰਦੀ ਨੂੰ ਸੰਘ ਦੀ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਕਹਿਣ ਦਾ ਇਹ ਅਰਥ ਨਹੀਂ ਕਿ ਭਾਰਤ ਦੀਆਂ ਦੂਜੀਆਂ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਘੱਟ ਮਹੱਤਵਪੂਰਣ ਹਨ। ਭਾਰਤ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ਿਕ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਸਮਾਨ ਮਹੱਤਵ ਰੱਖਦੀਆਂ ਹਨ। ਜੇਕਰ ਅਖਿਲ ਭਾਰਤੀ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਹਿੰਦੀ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਹੈ ਤਾਂ ਦੂਜੀਆਂ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ਿਕ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਆਪਣੇ–ਆਪਣੇ ਰਾਜਾਂ ਵਿਚ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ।

अनुवाद - हिंदी को संघ की राजभाषा कहने का यह अर्थ नहीं कि भारत में अन्य भाषाएँ इस से कम महत्त्वपूर्ण हैं। भारत की सभी प्रादेशिक भाषाएँ समान महत्त्व रखती हैं। यदि अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी राजभाषा है तो अन्य प्रादेशिक भाषाएँ अपने-अपने राज्यों में राजभाषा के रूप में काम कर रही हैं।

8. ਸਾਨੂੰ ਬਿਜਲੀ ਦੀ ਖਪਤ ਘੱਟ ਅਤੇ ਬੜੇ ਹੀ ਕਿਫ਼ਾਇਤੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਸਥਾਨ 'ਤੇ ਅਸੀਂ ਮੌਜੂਦ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ, ਉਸ ਸਥਾਨ 'ਤੇ ਬਿਜਲੀ ਚਲਦੀ ਨਹੀਂ ਰਹਿਣ ਦੇਣੀ ਚਾਹੀਦੀ। ਬਿਜਲੀ ਦੀ ਬੱਚਤ ਸੰਬੰਧੀ ਇੱਕ ਨਾਰਾ ਹੈ 'ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਜਦੋਂ', (ਸਵਿੱਚ) ਬਟਨ ਬੰਦ ਉਦੋਂ । ਜੇਕਰ ਇਸ ਨਾਰੇ ਨੂੰ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਅਪਨਾ ਲੈਣ ਤਾਂ ਵੀ ਅਸੀਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀ ਬਿਜਲੀ ਬਚਾ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ।

अनुवाद- हमें बिजली की खपत कम और अति किफ़ायती ढंग से करनी चाहिए। जिस स्थान पर हम उपस्थित नहीं होते, उस स्थान पर बिजली चलती नहीं रहने देनी चाहिए। बिजली की बचत संबंधी एक नारा है 'आवश्यकता नहीं जब, बटन बंद तब।' यदि इस नारे को सभी लोग अपने जीवन में अपना लें तो हम बहुत-सी बिजली बचा सकते हैं।

9. ਮਹਿੰਗਾਈ ਨੇ ਅੱਜ ਗਰੀਬ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਕਮਰ ਤੋੜ ਦਿੱਤੀ ਹੈ। ਘਰੇਲੂ ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਿਚ ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਵਸਤੂਆਂ ਦੀਆਂ ਕੀਮਤਾਂ ਇਸ ਕਦਰ ਵੱਧ ਗਈਆਂ ਹਨ ਕਿ ਗਰੀਬ ਵਰਗ ਦਾ ਘਰ-ਪਰਿਵਾਰ ਦਾ ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਕਰਨਾ ਬਹੁਤ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਜਲਦੀ ਤੋਂ ਜਲਦੀ ਮਹਿੰਗਾਈ ਨੂੰ ਘਟਾ ਕੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਰਾਹਤ ਦੇਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

अनुवाद - महंगाई ने आज **ग़रीब** लोगों की कमर तोड़ दी है। घरेलू प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के मूल्य इस तरह बढ़ गए हैं कि निर्धन वर्ग के घर-परिवार का निर्वाह करना बहुत कठिन हो गया है। सरकार को शीघ्रातिशीघ्र महंगाई को घटा कर लोगों को राहत देनी चाहिए।

10. ਸਾਡੇ ਸਕੂਲ ਦਾ ਸਲਾਨਾ ਸਮਾਗਮ ਬੜੀ ਧੂਮਧਾਮ ਨਾਲ ਮਨਾਇਆ ਗਿਆ। ਸਾਰੇ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਹੀ ਸੁੰਦਰ ਢੰਗ ਨਾਲ ਸਜਾਇਆ ਗਿਆ। ਸਕੂਲ ਦੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਨੇ ਸਕੂਲ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ ਪੜ੍ਹੀ। ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਨੇ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਸਕੂਲ ਦੇ ਯੋਗਦਾਨ ਦੀ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਸਾਲ ਹਰ ਜਮਾਤ ਵਿੱਚੋਂ ਪਹਿਲੇ ਤਿੰਨ ਸਥਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਇਨਾਮ ਵੰਡੇ ।

अनुवाद- हमारे स्कूल का वार्षिक समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सारे स्कूल को बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया गया। स्कूल के प्राचार्य ने स्कूल की रिपोर्ट पढ़ी। मुख्य अतिथि ने शिक्षा के क्षेत्र में हमारे स्कूल के योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने इस वर्ष कक्षा में पहले तीन स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार बाँटे ।

(मुहावरे/लोकोक्तियाँ)

नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ समझकर वाक्य बनाइए :

1. अपने पैरों पर खड़े होना - (आत्मनिर्भर होना) - समाज में अपने पैरों पर खड़े होने वाले का बहुत सम्मान होता है ।

2. आँच न आने देना - (किसी तरह का नुकसान न होने देना) - हमें अपने देश की मान-मर्यादा पर आँच नहीं आने देनी चाहिए।

3. उन्नीस-बीस का अंतर होना - (बहुत कम अंतर होना) - रवि और राजन की उम्र में उन्नीस-बीस का अंतर है ।

4. कान में तेल डाल लेना - (बात न सुनना) - रजनी को कितना बुलाओ सुनती ही नहीं, लगता है उस ने कान में तेल डाल लिया है।

5. गले का हार - (बहुत प्यारा) - राम अपने माता-पिता के गले का हार है ।

6. चैन की बंसी बजाना - (सुखपूर्वक रहना) - जसबीर सिंह सेवानिवृत्ति के बाद चैन की बंसी बजा रहा है ।

7. तिल का ताड़ बनाना - (छोटी सी बात को बढ़ाना) - सुधीर की ज़रा-सी डाँट को अपने ऊपर आरोप समझना रवि का तिल का ताड़ बनाना है ।

8. दाँतों में जीभ होना - (चारों ओर विरोधियों से घिरे रहना) - चुनाव के दंगल में परमवीर सिंह ऐसे घिर गया जैसे दाँतों में जीभ हो।

9. पीठ दिखाना - (हारकर भाग जाना) - भारतीय सेना का आक्रामक रुख देख कर शत्रु सेना पीठ दिखा गई ।

10. मुँह में पानी भर आना - (ललचाना) - लड्डू को देखकर रमेश के मुँह में पानी भर आया ।

नीचे दिए गए लोकोक्तियों के अर्थ समझकर वाक्य बनाइए :

1. अपना वही जो आवे काम - (मित्र वही है जो मुसीबत में काम आए) - जसबीर सिंह की बेटी की शादी में जब उसे कुछ रुपयों की ज़रूरत पड़ी तब रविन्द्र सिंह ने उसे मुँह- माँगी रकम तुरंत दे दी तो जसबीर सिंह कह उठा - अपना वही जो आवे काम ।

2. आग लगाकर पानी को दौड़ना - (झगड़ा कराने के बाद स्वयं ही सुलह कराने बैठना) - पहले तो पिंकी हरमन से लड़ती रही फिर स्वयं ही उसे मनाने लगी तो हरमन ने कहा तुम तो आग लगा कर पानी को दौड़ने का काम कर रही हो ।

3. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे - (अपराध करने वाला उल्टी धौंस जमाए) - रवि ने साइकिल से ठोकर मार कर वृद्ध को गिरा दिया और फिर उसे बुरा-भला कहने लगा, इसी को कहते हैं उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे ।

4. ओस चाटे प्यास नहीं बुझती - (अधिक आवश्यकता वाले को थोड़े - से संतुष्टि नहीं होती) - हाथी का पेट एक केले से नहीं भरता उसे तो कई दर्जन केले खाने के लिए देने होंगे क्योंकि उसकी ओस चाटे प्यास नहीं बुझती ।

5. कोठी वाला रोये छप्पर वाला सोये - (धनी प्रायः चिन्तित रहते हैं और निर्धन निश्चिंत रहते हैं) - राजकुमार करोड़ों का मालिक है । उसे अपने धन की सुरक्षा की सदा चिंता बनी रहती है। जबकि फकीरचंद फक्कड़ है, इसलिए सदा खुश रहता है । इसीलिए कहते हैं कि कोठी वाला रोये छप्पर वाला सोये।

6. बन्दर घुड़की, गीदड़ धमकी - (झूठा रौब दिखाना) - त्रिलोक कुछ करता-धरता नहीं है। बेकार ही सब को बंदर घुड़की, गीदड़ धमकी देकर डराता रहता है।

7. बीति ताहि बिसारि दे, आगे की सुध लेय - (पुरानी एवं दुःखपूर्ण बातों को भूलकर भविष्य के लिए सावधानी बरतनी चाहिए ।) - रामदास को व्यापार में बहुत घाटा हुआ तो सिर पकड़ कर बैठ गया तब सेवा सिंह ने उसे समझाया कि बीति ताहि बिसारि दे, आगे की सुध लेय तब सब ठीक हो जाएगा।

8. मन चंगा तो कठौती में गंगा - (मन शुद्ध हो तो घर ही तीर्थ समान) - अशुद्ध मन से तीर्थाटन करने से कोई लाभ नहीं होता, घर पर ही मानसिक शुद्धि हो जाए तो वही तीर्थाटन हो जाता क्योंकि मन चंगा तो कठौती में गंगा होती है।

9. सावन हरे न भादौं सूखे - (सदा एक जैसी दशा रहना) - रजनीश गरीबी में पाई-पाई के लिए मरता था, अब उसका व्यापार चमक उठा है तो भी वह पाई-पाई के लिए मर रहा है, उसकी तो सावन हरे न भादौं सूखे जैसी हालत है।
10. हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊँ - (सहायता प्रदान करने वाले को ही धमकाना) - हरभजन की स्कूटर से टक्कर हो गई तो वह गिर पड़ा, सुजान ने उसे हाथ पकड़ कर उठाया तो वह उसी पर बरस पड़ा इसी को कहते हैं हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊँ।

(विज्ञापन,सूचना और प्रतिवेदन)

i) विज्ञापन

अभ्यास

1. आपका नाम प्रज्ञा है। आप समाज सेविका हैं। आपके कोचिंग सेंटर का नाम है- प्रज्ञा कोचिंग सैंटर। आपका फोन नम्बर 1891000000 है। आपने शामपुरा शहर में दसवीं, बारहवीं कक्षा के गरीब विद्यार्थियों के लिए साइंस व गणित विषयों की निःशुल्क कोचिंग कक्षाएं एक नये कोचिंग सेंटर में खोली हैं। कोचिंग सेंटर के उद्घाटन के सम्बन्ध में एक विज्ञापन का प्रारूप तैयार करके लिखिए।

उत्तर - **प्रज्ञा कोचिंग सेंटर**

आगामी शिक्षा सत्र को ध्यान में रखते हुए आपके अपने शहर में दसवीं, बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क साइंस व गणित विषय की तैयारी हेतु कोचिंग सेंटर को आरंभ किया जा रहा है। संपर्क करें :- प्रज्ञा। डायरेक्टर, प्रज्ञा कोचिंग सेंटर, शामपुरा। मोबाइल नं० 1891000000.

2. आपका नाम मंगल राय है। आपकी मेन बाज़ार, अम्बाला में कपड़े की दुकान है। आपका फोन नंबर 1746578673 है। वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत 'सेल्ज़मैन की आवश्यकता है' का प्रारूप तैयार करके लिखें।

उत्तर - **सेल्ज़मैन की आवश्यकता**

कपड़े की दुकान पर एक कुशल सेल्ज़मैन को आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। शीघ्र मिलें - मंगलराय। मेन बाज़ार,अम्बाला। मोबाइल नं० 1746578673.

3. आपका नाम पंडित अखिलेश नाथ है। आपका मोबाइल नंबर - 1464246200 है। आपने सैक्टर - 22, चंडीगढ़ में एक 'अखिलेश योग साधना केंद्र' खोला है जहाँ आप लोगों को योग सिखाते हैं जिसकी प्रति व्यक्ति, प्रति मास ₹1000 फीस है। वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत 'योग सीखिए' का प्रारूप तैयार करके लिखिए।

उत्तर - **योग सीखिए**

योग सीखने का सुनहरी मौका। योग के आसान तथा सटीक आसन सीखिए। योग सौखने की फीस प्रति व्यक्ति, प्रति मास ₹1000 है। समय प्रातः 5 से 7 बजे। संपर्क करें - पंडित अखिलेश नाथ, अखिलेश योग साधना केंद्र, सैक्टर-22, चंडीगढ़। मोबाइल न० 1464246200.

4. आपका नाम नीरज कुमार है। आप मकान नम्बर 1450, सैक्टर-19, नंगल में रहते हैं। आपने अपना नाम नीरज कुमार से बदल कर नीरज कुमार वर्मा रख लिया है। 'नाम परिवर्तन' शीर्षक के अंतर्गत विज्ञापन का प्रारूप तैयार करें।

उत्तर - **नाम परिवर्तन**

मैं नीरज कुमार, मकान नंबर 1450, सैक्टर-19, नंगल निवासी ने अपना नाम बदलकर नीरज कुमार वर्मा रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से पुकारा और लिखा जाए।

5. आपका नाम विमल प्रसाद है। आप मकान नंबर 227, सैक्टर-22, जगाधरी में रहते हैं। आपका मोबाइल नम्बर 1987642345 है। आप अपनी 2009 मॉडल की मारुति कार बेचना चाहते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत 'कार बिकाऊ है' का प्रारूप तैयार करके लिखिए।

उत्तर - **कार विकाऊ है**

मारुति, मॉडल 2009 बिकाऊ है। खरीदने के इच्छुक संपर्क करें-विमल प्रसाद मकान नम्बर - 227, सैक्टर-22, जगाधरी। मोबाइल नंबर - 1987642345.

6. आपका नाम शारदा कुमारी है। आपको घर के कामकाज के लिए एक नौकरानी की आवश्यकता है। आपका फोन नम्बर 1889065567 है। वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत नौकरानी की आवश्यकता है' का प्रारूप तैयार करके लिखें।

उत्तर - **नौकरानी की आवश्यकता है**

घर के कामकाज के लिए एक अनुभवी नौकरानी की आवश्यकता है। अच्छा वेतन, रहने व खाने का प्रबंध। संपर्क करें- शारदा कुमारी, मोबाइल नम्बर 18890655671.

7. आपका नाम अवधेश कुमार है। आपकी मेन बाज़ार ,मेरठ में रेडीमेड कपड़ों की दुकान है। आपका फोन नम्बर 1464566234 है। आपने अपनी दुकान में रेडीमेड कमीज़ों पर 60% भारी छूट दी है। 'रेडीमेड कमीज़ों पर 60% भारी छूट' विषय पर अपनी दुकान की ओर से एक विज्ञापन का प्रारूप तैयार करके लिखिए।

उत्तर- **रेडीमेड कमीज़ों पर 60% भारी छूट**

रेडीमेड कमीज़ों पर 60% की भारी छूट। जल्दी आएँ। पहली बार इतनी भारी छूट तुरंत लाभ उठाए। संपर्क करें :- अवधेश कुमार। मेन बाज़ार, मेरठ, मोबाइल नंबर - 14645662341.

8. आपका नाम अमिताभ है। आपका सैक्टर-17 चंडीगढ़ में बहुत बड़ा पाँच सितारा होटल है। आपका मोबाइल नम्बर 1354456695 है। आपको अपने होटल के लिए एक मैनेजर की आवश्यकता है। वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत 'मैनेजर की आवश्यकता है' का प्रारूप तैयार करके लिखिए।

उत्तर - **मैनेजर की आवश्यकता**

सैक्टर-17 , चंडीगढ़ में एक प्रतिष्ठित पाँच सितारा होटल में काम करने के लिए एक मैनेजर की आवश्यकता है। न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता - होटल मैनेजमेंट में डिग्री। वेतन योग्यतानुसार। तीन वर्ष का अनुभव आवश्यक। संपर्क करें- मोबाइल नंबर 1354456695.

9. आपका नाम हरिराम है। आपकी सैक्टर-14, यमुनानगर में एक दस मरले की कोठी है। आप इसे बेचना चाहते हैं। आपका मोबाइल नम्बर 1456894566 है, जिस पर कोठी खरीदने के इच्छुक आपसे संपर्क कर सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत 'कोठी विकाऊ है' का प्रारूप तैयार करके लिखिए।

उत्तर - **'कोठी विकाऊ है'**

सैक्टर-14, यमुनानगर में एक दस मरले की कोठो बिकाऊ है। चार कमरे, दो बाथरूम, एक किचन आधुनिक सुविधाओं से युक्त है। संपर्क करें - हरिराम, मोबाइल नंबर 1456894566.

10. आपका नाम सुदेश कुमार है। आप मकान नम्बर 46, सैक्टर-4, नोएडा में रहते हैं। आपका बेटा जिसका नाम रोहित कुमार है। उसका रंग साँवला, आयु दस वर्ष, कद चार फुट है। वह दिनांक 23.07.2022 से पुणे से गुम है। 'गुमशुदा की तलाश' शीर्षक के अंतर्गत विज्ञापन का प्रारूप तैयार करें।

उत्तर - **'गुमशुदा की तलाश'**

मेरा पुत्र रोहित कुमार, उम्र दस वर्ष, कद चार फुट और रंग साँवला है, दिनांक 23 जुलाई, 2022 से पुणे से लापता है। उसका पता देने वाले अथवा उसे घर तक पहुँचाने वाले को ₹10000 का पुरस्कार दिया जाएगा। संपर्क करें - सुदेश कुमार, मकान नं. 46, सैक्टर 4 - नोएडा।

(ii) सूचना

अभ्यास

1. सरकारी हाई स्कूल, सैक्टर-14, चंडीगढ़ के मुख्याध्यापक की ओर से स्कूल के सूचना-पट (नोटिस बोर्ड) के लिए एक सूचना तैयार कीजिए, जिसमें स्कूल की सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए सैक्शन बदलने की अंतिम तिथि 07.05.2022 दी गयी हो।

उत्तर - **सैक्शन बदलने संबंधी सूचना** **29.04.2022**

सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि जो विद्यार्थी किसी भी कारण अपना सेक्शन बदलना चाहता है, वह अपना नाम अपने कक्षा अध्यापक को दिनांक 07 मई, 2022 से पहले लिखवा दे।

मुख्याध्यापक
सरकारी हाई स्कूल
सैक्टर-14, चंडीगढ़।

2. आपका नाम प्रदीप कुमार है। आप सूर्या सीनियर सेकंडरी स्कूल, पठानकोट में हिंदी के अध्यापक हैं। आप स्कूल की हिंदी साहित्य समिति के सचिव हैं। इस समिति द्वारा आपके स्कूल में दिनांक 11.08.2022 को 'सड़क सुरक्षा' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में आप अपनी ओर से एक सूचना तैयार कीजिए जिसमें विद्यार्थियों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कहा गया हो।

उत्तर - **भाषण प्रतियोगिता का आयोजन** **22.07.2022**

विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि हिंदी साहित्य समिति की ओर से दिनांक 11 अगस्त, 2022 को विद्यालय के हाल में 'सड़क सुरक्षा' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु आप सभी आमंत्रित हैं। आप अपना नाम 27 जुलाई तक निम्नहस्ताक्षरी को लिखवा दें।

प्रदीप कुमार
सचिव, हिंदी साहित्य समिति।
सूर्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, पठानकोट।

3. आपका नाम परंजय कुमार है। आप संकल्प पब्लिक स्कूल, पटियाला के डायरेक्टर हैं। आपके स्कूल में दिनांक 7 सितंबर, 2022 को विज्ञान प्रदर्शनी लग रही है। आप अपनी ओर से एक सूचना तैयार कीजिए जिसमें स्कूल के विद्यार्थियों को इसमें भाग लेने के लिए कहा गया हो।

उत्तर - **विज्ञान प्रदर्शनी** **22.08.2022**

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आपके विद्यालय में दिनांक 07 सितंबर, 2022 को एक विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है। जो भी विद्यार्थी इस प्रदर्शनी में भाग लेना चाहता है, वह अपना नाम कक्षा अध्यापक को 28 अगस्त से पहले लिखवा दें। सभी विद्यार्थियों का विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लेना आवश्यक है।

परंजय कुमार
डायरेक्टर
संकल्प पब्लिक स्कूल, पटियाला।

4. आपके ज्ञान प्रकाश मॉडल सीनियर सैकंडरी स्कूल, मोहाली में दिनांक 06.12. 2022 को वार्षिक उत्सव पर गिद्दा व भाँगड़ा का आयोजन किया जा रहा है। स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अध्यक्ष श्री भूपेंद्रपाल सिंह द्वारा एक सूचना तैयार कीजिए, जिसमें इच्छुक विद्यार्थियों को इनमें भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया हो।

उत्तर - **वार्षिक उत्सव संबंधी सूचना** **15.11.2022**

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 06 दिसंबर, 2022 को विद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा है,जिसमें गिद्दा और भाँगड़ा का आयोजन भी होगा जो विद्यार्थी इनमें भाग लेना चाहते हैं, वे सभी अपना नाम निम्न हस्ताक्षरी को 20 नवम्बर से पहले लिखवा दें।

भूपेंद्रपाल सिंह
अध्यक्ष, सांस्कृतिक कार्यक्रम।
ज्ञान प्रकाश मॉडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल, मोहाली।

5. आपका नाम जगदीश सिंह है। आप आलोक सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, मानसा के ड्रामा क्लब के डायरेक्टर हैं। आपके स्कूल में 25 दिसंबर, 2022 को एक ऐतिहासिक नाटक का मंचन किया जाना है, जिसका नाम है 'रानी लक्ष्मीबाई'। आप इस सम्बन्ध में एक सूचना तैयार करें। जिसमें विद्यार्थियों को उपर्युक्त नाटक में भाग लेने के लिए नाम लिखवाने के लिए कहा गया हो।

उत्तर - **'रानी लक्ष्मीबाई' नाटक का मंचन** **25.11.2022**

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 25 दिसंबर, 2022 को विद्यालय के ड्रामा क्लब की ओर से ऐतिहासिक नाटक 'रानी लक्ष्मीबाई' का मंचन होने जा रहा है। इस नाटक में भाग लेने के लिए इच्छुक विद्यार्थी 30 नवंबर 2022 तक अपने नाम निम्न हस्ताक्षरी को लिखवा दें।

जगदीश सिंह
डायरेक्टर, ड्रामा क्लब,रोपड़।

iii) प्रतिवेदन

अभ्यास

1. आपका नाम संदीप कुमार है। आप सरकारी हाई स्कूल, नवाँशहर में पढ़ते हैं। आप अपने स्कूल के छात्र-संघ के सचिव हैं। आपके स्कूल में दिनांक 14 नवम्बर, 2022 को ट्रैफिक पुलिस अधिकारी द्वारा विद्यार्थियों को सड़क पर चलने के नियमों की जानकारी दी गयी तथा इस सम्बन्धी पढ़ने की सामग्री भी दी गयी। इस आधार पर प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर - शीर्षक- सड़क सुरक्षा गोष्ठी

सरकारी हाई स्कूल, नवांशहर के परिसर में दिनांक 14 नवंबर, 2022 को प्रातः 9 बजे स्थानीय ट्रैफिक पुलिस अधिकारी द्वारा विद्यार्थियों को सड़क पर चलने के नियमों की जानकारी देते हुए बताया गया कि। उन्होंने यातायात से संबंधित विभिन्न नियमों की सामग्री भी पढ़ने के लिए विद्यार्थियों में वितरित की। उन्होंने मंत्र दिया कि सड़क पर सावधानी से चलने में ही सुरक्षा है। मुख्याध्यापक महोदय ने उनकी इस महत्त्वपूर्ण जानकारी देने के लिए आभार व्यक्त किया।

संदीप कुमार
सचिव, छात्र-संघ
सरकारी हाई स्कूल, नवाँशहर

2. आपका नाम मनजीत सिंह है। आप चंडीगढ़ पब्लिक स्कूल, चंडीगढ़ में पढ़ते हैं। आप अपने स्कूल के हिन्दी-साहित्य-परिषद् के सचिव हैं। आपके स्कूल में दिनांक 20 नवम्बर, 2022 को हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कवियों द्वारा अपनी हास्य कविताओं से सभी का मनोरंजन किया गया। इस आधार पर प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर - शीर्षक-हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

चंडीगढ़ पब्लिक स्कूल, चंडीगढ़ के परिसर में दिनांक 20 नवंबर, 2022 को प्रातः 10 बजे मुख्याध्यापक श्री विकास शर्मा जी की अध्यक्षता में एक हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न कक्षाओं के तीस विद्यार्थियों ने अपनी हास्य कविताओं से सभी का मनोरंजन किया। सर्वश्रेष्ठ प्रथम तीन विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

मनजीत सिंह
सचिव, हिन्दी साहित्य परिषद्
चंडीगढ़ पब्लिक स्कूल, चंडीगढ़

3. आपका नाम सूर्यप्रकाश है। आप उपकार हाई स्कूल, नागपुर में पढ़ते हैं। आप स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अध्यक्ष हैं। आपके स्कूल में दिनांक 01 दिसम्बर, 2022 को विश्व एड्स दिवस मनाया गया जिसमें डॉ० कंवलदीप सिंह मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर विद्यार्थियों को एड्स के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से पोस्टर मेकिंग, नारा, लेखन, भाषण व निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ० साहिब ने एड्स के प्रति विद्यार्थियों की सभी भ्रांतियों को दूर किया तथा प्रत्येक प्रतियोगिता में पहले तीन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया। इस आधार पर प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर - शीर्षक- विश्व एड्स दिवस आयोजन

उपकार हाई स्कूल, नागपुर के परिसर में दिनांक 01 दिसंबर, 2022 को विश्व एड्स दिवस के उपलक्ष्य में पोस्टर मेकिंग, नारा लेखन, भाषण तथा निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ० कंवलदीप सिंह ने एड्स के प्रति विद्यार्थियों की विभिन्न भ्रांतियों का निवारण करते किया और प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया। मुख्याध्यापक महोदय ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया।

सूर्यप्रकाश
अध्यक्ष, सांस्कृतिक कार्यक्रम
उपकार हाई स्कूल, नागपुर

4. आपका नाम अमनदीप सिंह है। आप सरकारी हाई स्कूल, देसूमाजरा में पढ़ते हैं। आप अपने स्कूल के एन०एस०एस० यूनिट (राष्ट्रीय सेवा योजना) की सचिव हैं। आपके स्कूल में दिनांक 12 अक्तूबर, 2022 को स्थानीय सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों की टीम के सहयोग से दो दिवसीय 'दंत-जांच-शिविर' का आयोजन किया गया। डॉक्टरों द्वारा विद्यार्थियों के दाँतों की जाँच की गयी और रोगियों को मुफ्त दवाइयाँ दी गयीं। उन्हें दाँतों की सफाई और सुरक्षा के बारे में जागरूक भी किया गया। इस आधार पर प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर - **शीर्षक- दंत जांच शिविर का आयोजन**

सरकारी हाई स्कूल, देसूमाजरा में स्कूल के एन०एस०एस० यूनिट द्वारा स्कूल परिसर में दिनांक 12 अक्तूबर, सन् 2022 को स्थानीय सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों की टीम के सहयोग से दो दिवसीय 'दंत-जाँच-शिविर' का आयोजन किया गया। डॉक्टरों ने विद्यार्थियों के दाँतों की जाँच की और रोगियों को मुफ्त दवाइयाँ दीं तथा उन्हें दाँतों की सफाई और सुरक्षा के बारे में जागरूक किया। मुख्याध्यापक महोदय ने डॉक्टरों का आभार व्यक्त किया।

अमनदीप सिंह
सचिव एन०एस०एस० यूनिट
(राष्ट्रीय सेवा योजना)
सरकारी हाई स्कूल, देसूमाजरा

5. आपका नाम अनुकांत कौशल है। आप दयानंद पब्लिक स्कूल, बहादुरगढ़ में पढ़ते हैं। आप दसवीं कक्षा के प्रतिनिधि छात्र हैं। आपकी कक्षा का एक छात्र-दल दिनांक 16.12.2022 को शैक्षिक भ्रमण हेतु चंडीगढ़ गया था, जहाँ उन्होंने रोज़ गाडर्न व रॉक गाडर्न के साथ-साथ पंजाब विश्वविद्यालय की सैर की। इस आधार पर प्रतिवेदन लिखिए।

उत्तर - **शीर्षक - शैक्षिक भ्रमण**

दयानंद पब्लिक स्कूल, बहादुरगढ़ की कक्षा दसवीं के दस छात्रों का एक दल दिनांक 16.12.2022 को शैक्षिक भ्रमण के लिए चंडीगढ़ गया, जहाँ उन्होंने रोज़ गार्डन, रॉक गार्डन, पंजाब विश्वविद्यालय, आदि स्थानों की सैर की। साथ गए अध्यापकों ने सभी स्थानों की विशेषताओं से परिचित कराते हुए भ्रमण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सभी छात्र इस भ्रमण यात्रा से अत्यंत प्रसन्न हुए।

अनुकान्त कौशल
प्रतिनिधि, कक्षा दसवीं
दयानंद पब्लिक स्कूल, बहादुरगढ़

प्रपत्र-पूर्ति

अभ्यास

1) मान लीजिए आपका नाम राज कुमार है। आपका हिंदोस्तान बैंक, शाखा-मुम्बई में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 7338380103 है। आपको अपने इस खाते में से 7500/- रुपये निकलवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

हिंदोस्तान बैंक, शाखा - मुम्बई
बचत बैंक आहरण प्रपत्र

बचत खाताधारक का नाम : .... राज कुमार ....

खाता नम्बर : ....7338380103 ....कृपया मुझे

.... 7500/- रु. (अंकों में) .... केवल सात हज़ार पाँच सौ रुपये ...... (शब्दों में) अदा करें।

खाताधारक के हस्ताक्षर : ....राज कुमार......

2) मान लीजिए आपका नाम शिखर कुमार है। आपको लोकेश कुमार को दिनांक 06.12.2023 को 10,000/- रु. का स्वहस्ताक्षरित रेखांकित किया हुआ चेक लिखकर देना है। इस अनुसार निम्नलिखित चेक के प्रपत्र को भरें :-

दिनांक : ....06.12.2023.........

... लोकेश कुमार ....

...या धारक को

रुपये .... दस हज़ार .... **रु. 10,000**

.. अदा करें

कृपया यहाँ हस्ताक्षर करें
.... शिखर कुमार ....

3) मान लीजिए आपका नाम कांता देवी है। आपको रेखा कुमारी को दिनांक 03.12.2023 को ₹20000 का स्वाहस्ताक्षरित रेखांकित किया हुआ चेक लिखकर देना है। इस अनुसार निम्नलिखित चेक के प्रपत्र को भरें :-

दिनांक : ...... 03.12.2023 ......

.... रेखा कुमारी ....
....या धारक को

रुपये .... बीस हज़ार .... रु. 20,000

.... अदा करें

कृपया यहाँ हस्ताक्षर करें

.... कांता देवी ....

4) मान लीजिए आपका नाम जगदीश सिंह है। आपका भारत बैंक, शाखा - गंगानगर में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 492694213 है। आपको अपने इस खाते में से 3500/- रुपये निकलवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

भारत बैंक, शाखा - गंगानगर
बचत बैंक आहरण प्रपत्र

बचत खाताधारक का नाम: .... जगदीश सिंह ....

खाता नम्बर: .... 492694213 .... कृपया मुझे

.... 3500/- रु. (अंकों में ....केवल तीन हज़ार पाँच सौ रुपये .... (शब्दों में) अदा करें।

खाताधारक के हस्ताक्षर : .... जगदीश सिंह ....

5) मान लीजिए आपका नाम विजय दीनानाथ चौहान है। आपका अरावली बैंक, शाखा-चण्डीगढ़ में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 7873826633 है। आपको अपने इस खाते में दिनांक 26.12.2023 को 4500/- रुपये जमा करवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

अरावली बैंक, शाखा - चण्डीगढ़

बैंक में रुपये जमा करवाने हेतु प्रपत्र

दिनांक : .....26.12.2023.........

जमा बचत खाता नम्बर : ...... 7873826633 ......जो कि श्री ..... विजय दीनानाथ चौहान .... के नाम से है,

में ....रुपये चार हज़ार पाँच सौ केवल .... (शब्दों में) की राशि जमा करें।

जमाकर्ता के हस्ताक्षर .... विजय दीनानाथ चौहान ....

6) मान लीजिए आपका नाम सूर्य कुमार यादव है। आपका हिमालय बैंक, शाखा सोलन में एक बचत खाता है, जिसका नंबर 123498734242 है। आपको अपने इस खाते में दिनांक 23.06.2023 को ₹3000 जमा करवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर पुस्तिका पर उतारकर भरें :-

हिमालय बैंक, शाखा : सोलन
बैंक में रुपये जमा करवाने हेतु प्रपत्र

दिनांक : ..... 23.06.2023 ....

जमा बचत खाता नम्बर : ...... 123498734242 .... जो कि श्री ..... सूर्य कुमार यादव .... के नाम से है,

में .... रुपए तीन हज़ार केवल .... (शब्दों में) की राशि जमा करें।

जमाकर्ता के हस्ताक्षर : .... सूर्य कुमार यादव ....

7) मान लीजिए आपका नाम मेधावी है। आपका भारतीय डाक के सेक्टर – 47, चंडीगढ़ में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 6283389291 है। आपको अपने इस खाते में से दिनांक 21.08.2023 को 10,000/- रुपये निकलवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

रुपये निकालने का फार्म
(जमाकर्ता द्वारा भरा जाए)
डाकघर का नाम : सेक्टर – 47,चंडीगढ़

दिनांक : ...... 21.08.2023 ....

बचत खाता सं : .... 6283389291 ....
कृपया मुझे ....10,000/- रु. (अंकों में) .... केवल दस हज़ार रुपये .... (शब्दों में)
का भुगतान करें।

जमाकर्ता के हस्ताक्षर : ....मेधावी..........

8) मान लीजिए आपका नाम चार्वी है। आपका भारतीय डाक के सेक्टर – 43, चंडीगढ़ में एक बचत खाता है, जिसका नम्बर 37289932411 है। आपको अपने इस खाते में से दिनांक 05.11.2023 को 25,000/- रुपये निकलवाने हैं। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

रुपये निकालने का फार्म
(जमाकर्ता द्वारा भरा जाए)
डाकघर का नाम: सेक्टर – 43, चण्डीगढ़

दिनांक : ..... 05.11.2023 ....

बचत खाता सं: ..... 37289932411 ....

कृपया मुझे ...... 25,000/- रु. (अंकों में) ....केवल पच्चीस हज़ार रुपये ....(शब्दों में) का भुगतान करें।

जमाकर्ता के हस्ताक्षर : ....चार्वी......

9) मान लीजिए आपका नाम नरेन्द्रपाल सिंह है। आपका पता है - मकान नम्बर - 124, सेक्टर - 12 चंडीगढ़। आपको 6924, शताब्दी एक्सप्रेस से दिनांक 24.09.2023 को चंडीगढ़ से दिल्ली जाना है। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

गाड़ी सं: और नाम : 6924, शताब्दी एक्सप्रेस

यात्रा की तारीख : ..... 24.09.2023 ....

यात्रा आरंभ करने का स्टेशन : .... चंडीगढ़ .... से .... दिल्ली .... स्टेशन तक आरक्षण

नाम व पता : .... नरेन्द्रपाल सिंह, मकान नम्बर - 124, सेक्टर - 12 चंडीगढ़ ....

आवेदक के हस्ताक्षर : ....नरेन्द्रपाल सिंह.......

10) मान लीजिए आपका नाम गुरप्रीत सिंह है। आपका पता है - मकान नम्बर - 245, सेक्टर - 34 मुम्बई। आपको 2345 राजधानी एक्सप्रेस से दिनांक 15.09.2023 को मुम्बई से चंडीगढ़ जाना है। इस अनुसार निम्नलिखित प्रपत्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका पर उतारकर भरें।

गाड़ी सं: और नाम : 2345 राजधानी एक्सप्रेस

यात्रा की तारीख : ......15.09.2023......

यात्रा आरंभ करने का स्टेशन : .... मुम्बई .... से .... चंडीगढ़ .... स्टेशन तक आरक्षण

नाम व पता : .... गुरप्रीत सिंह, मकान नम्बर - 245, सेक्टर - 34 मुम्बई ....

आवेदक के हस्ताक्षर : .... गुरप्रीत सिंह..........

तैयार कर्ता - दीपक कुमार 'दीपक', हिंदी अध्यापक, सरकारी मिडिल स्कूल, कुदनी, संगरूर

संशोधन - डॉ.राजन, हिंदी मास्टर स.मि. स्कूल लोहारका कलां, अमृतसर

सहयोग - डॉ.सुमन सचदेवा, मलोट, श्री मती गुरविंदर कौर, हिंदी शिक्षिका, स.स.स.स. फतेह सिंह वाला, ज़िला बठिंडा